@Qpatrika
@qaumipatrika hindi
instagram.com/ qaumipatrika

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित

कौमी पत्रिका
राष्ट्रीय दैनिक अखबार

शुक्रवार, 24 जनवरी 2025

VISIT:
www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 18 अंक 75 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

पीएम मोदी ने संसद के सेंट्रल हॉल में नेताजी सुभाष चंद्र बोस को दी श्रद्धांजलि

सिम्मी कौर बब्बर

नई दिल्ली । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संविधान सदन के सेंट्रल हॉल में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 128वीं जयंती पर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की। आज सुभाष चंद्र बोस की जयंती पराक्रम दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। वहीं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत कई नेताओं ने सुभाष चंद्र बोस को नमन किया।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और अन्य नेताओं ने भी संविधान सदन में नेताजी को पुष्पांजलि अर्पित की। इस दौरान पीएम मोदी ने बच्चों से बातचीत की और बच्चों ने 'जय हिंद' के नारे लगाए। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में कहा, ÷पराक्रम दिवस के रूप में मनाई जाने वाली नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर, मैं भारत माता के

महानतम सपूतों में से एक को अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं। नेताजी सुभाष चंद्र बोस भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सबसे दृढ़ निश्चय और प्रेरक व्यक्तियों में से एक हैं। स्वतंत्रता के लिए उनके आह्वान ने लाखों भारतीयों को स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए नेताजी का अथक दृढ़ संकल्प और आजाद हिंद फ़ौज का उनका साहसी नेतृत्व भारतीयों की पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा।' वहीं पीएम नरेंद्र मोदी ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा,'पराक्रम दिवस पर मैं नेताजी सुभाष चंद्र बोस को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उनका योगदान अद्वितीय है। वे साहस और धैर्य के प्रतीक थे। उनका विजन हमें प्रेरित करता रहता है, क्योंकि हम उनके सपनों का भारत बनाने की दिशा में काम कर रहे हैं।' 23 जनवरी, 1897 को कटक ओडिशा में जन्मे नेताजी सुभाष चंद्र बोस देशभक्ति और साहस के एक महान प्रतीक हैं। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में नेताजी सुभाष चंद्र बोस के अमूल्य योगदान के सम्मान में भारत सरकार ने 2021 में उनके जन्मदिन को 'पराक्रम दिवस' के रूप में घोषित किया। यह दिन उनकी विरासत का सम्मान करने और नागरिकों, विशेषकर युवाओं को उनकी बहादुरी और राष्ट्रीय गौरव का अनुकरण करने के लिए प्रोत्साहित करने का कार्य करता है। पहला पराक्रम दिवस 2021 में कोलकाता के विक्टोरिया मेमोरियल हॉल में मनाया गया, इसके बाद 2022 में इंडिया गेट पर नेताजी की एक होलोग्राफिक प्रतिमा का उद्घाटन किया गया था।

प्रधानमंत्री मोदी ने बाला साहेब ठाकरे को जयंती पर किया याद

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आज बाला साहेब ठाकरे को उनकी जयंती के अवसर पर श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रधानमंत्री ने एक्स पर लिखा, उन्हें लोक कल्याण और महाराष्ट्र के विकास के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के लिए व्यापक रूप से सम्मानित और याद किया जाता है।

जब बात अपने मूल विश्वासों की आती थी तो वे समझौता नहीं करते थे और हमेशा भारतीय संस्कृति के गौरव को बढ़ाने में योगदान देते थे।

जलगांव ट्रेन हादसा - रेलवे ने मुआवजा राशि का किया ऐलान, हेल्पलाइन नंबर जारी

नरेश मल्होत्रा

नई दिल्ली। महाराष्ट्र के जलगांव जिले में हुए एक दर्दनाक ट्रेन हादसे में कई यात्रियों की जान चली गई और कई अन्य घायल हो गए। दरअसल, पुष्पक एक्सप्रेस के यात्रियों के बीच आग लगने की अफवाह फैलने के बाद लोग ट्रेन से कूद गए, जिसके बाद वह सामने से आ रही कर्नाटक एक्सप्रेस की चपेट में आ गए। हादसे में मृतकों और घायलों के परिवारों को राहत देने के लिए रेलवे और राज्य सरकार ने मुआवजा घोषित किया है।

रेल की ओर से हादसे में जान गंवाने वाले यात्रियों के परिवारों को डेढ़ लाख रुपये का मुआवजा दिया जाएगा, जबकि जिन यात्रियों को गंभीर चोटें आई हैं, उन्हें 50 हजार रुपये का मुआवजा दिया जाएगा। जो यात्री मामूली रूप से घायल हुए हैं, उन्हें 5 हजार रुपये का मुआवजा दिया जाएगा। रेलवे ने यात्रियों की मदद के लिए विभिन्न स्टेशनों पर संपर्क नंबर जारी किए हैं। भुसावल के लिए मोबाइल नंबर 8799982712 और रेलवे नंबर 55110, जलगांव के लिए मोबाइल नंबर 8799952519 और रेलवे नंबर 79220 है। मनमाड स्टेशन के लिए

मोबाइल नंबर 7420058556 और रेलवे नंबर 72217, बुरहानपुर स्टेशन के लिए मोबाइल नंबर 8263916314 और रेलवे नंबर 66222 जारी किया गया है। खंडवा के यात्रियों के लिए मोबाइल नंबर 8263916296 और रेलवे नंबर 67220, सीएसएमटी के लिए हेल्पलाइन नंबर 022-22694040 और रेलवे नंबर 55993 है। दादर के लिए मोबाइल नंबर 9136452387 और रेलवे नंबर 57390, कल्याण के लिए मोबाइल नंबर 8356848078 और रेलवे नंबर 63360, ठाणे के लिए मोबाइल नंबर 9321336747 और रेलवे नंबर 61290 और इगतपुरी के लिए मोबाइल नंबर 8657916263 और रेलवे नंबर 69131 हैं।

अगले पांच साल दिल्ली से बेरोजगारी दूर करने पर होगा काम - अरविंद केजरीवाल

सौरभ शर्मा

नई दिल्ली । आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा है कि अब अगले पांच साल उनकी टीम दिल्ली से बेरोजगारी खत्म करने पर काम करेगी और युवा बेरोजगारों को उनकी शिक्षा और काबिलियत के हिसाब से ज्यादा से ज्यादा नौकरियां दिलवाई जाएंगी।

अरविंद केजरीवाल ने कहा है कि मैं दिल्ली विधानसभा चुनाव में घर-घर घूम रहा हूं, गली-गली में जा रहा हूं, लोगों से मिल रहा हूं। पिछले 10 साल में हमने लोगों की कई परेशानी दूर करने की कोशिश की है। शिक्षा के क्षेत्र में, स्वास्थ्य के क्षेत्र में, बिजली के क्षेत्र

में, पानी के क्षेत्र में, सड़कों के क्षेत्र में काफी काम किया गया है।उन्होंने कहा कि एक चीज है जो मेरे दिल को बहुत पीड़ा पहुंचती है और वह है कि हमारे बच्चे पढ़ लिखकर घर बैठे हैं। रोजगार ढूंढ रहे हैं। इनमें कुछ बच्चे कई बार गलत संगत में पड़कर अपराध के क्षेत्र में चले जाते हैं। उनको वापस लाना बहुत मुश्किल हो जाता है।

अरविंद केजरीवाल ने कहा कि आज बेरोजगारी की वजह से सबसे ज्यादा परिवार पीड़ित व दुखी हैं। उन्होंने कहा कि अगले पांच साल में और अन्य क्षेत्रों में तो काम जारी रहेगा, लेकिन मेरी सबसे अधिक प्राथमिकता दिल्ली से बेरोजगारी दूर करना है। बच्चों के लिए रोजगार का इंतजाम करना है। इस पर मेरी टीम रोड मैप तैयार कर रही है। हमारी बहुत अच्छी टीम है। इसमें आतिशी, मनीष सिसोदिया, गोपाल राय, जैस्मिन, राघव चड्ढा, संजय सिंह, सत्येंद्र जैन, सौरभ भारद्वाज समेत बहुत सारे लोग हैं। ये पढ़े लिखे, कमिटेड और देशभक्त लोग हैं। इन सब लोगों को मैने दिल्ली से बेरोजगारी कैसे दूर की जाए, इस पर काम करने व प्लानिंग तैयार करने के लिए कहा है। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि कोरोना के समय में जब सब कुछ बंद हो गया था। सबकी नौकरियां चली गई थीं।

खरगे-राहुल-प्रियंका ने जयंती पर किया नेताजी को नमन

नयी दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी तथा पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने महान स्वतंत्रता सेनानी और आजाद हिंद फौज के संस्थापक नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की है।

श्री खरगे ने कहा, 'जय हिंद' एवं तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा जैसे ओजस्वी नारों के माध्यम से देशवासियों में देशप्रेम और क्रांति की लहर का संचार करने वाले महान स्वतंत्रता सेनानी, पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष एवं हमारे प्रेरणास्रोत, नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी की जयंती पर कोटि-कोटि नमन। मातृभूमि के प्रति उनका प्रेम, समर्पण व सांप्रदायिकता के

खिलाफ़ उनका कड़ा विरोध, हम सभी को सदा राष्ट्रसेवा के लिए प्रेरित करता है।श्री गांधी ने अपने संदेश में कहा, महान क्रांतिकारी, आज़ाद हिंद फौज के संस्थापक नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी की जयंती पर उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि। नेताजी का नेतृत्व, साहस, सामाजिक न्याय के लिए उनका संघर्ष, सहिष्णुता और समावेशिता के प्रति उनका योगदान आज भी हर भारतीय को प्रेरित करता है। भारत माता के अमर सपूत को मेरा सादर नमन, जय हिंद। श्रीमती वाड्रा ने कहा, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के महानायक, आजाद हिंद फौज के संस्थापक और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी की जयंती पर सादर नमन। महात्मा गांधी जी ने नेताजी को देशभक्तों का देशभक्त कहा था। नेताजी ने क्रांति, देशप्रेम और बलिदान का सर्वोच्च उदाहरण पेश किया। उनका योगदान और उनके विचार पीढ़ियों को प्रेरित करते रहेंगे। जय हिंद।

जलगांव रेल हादसाः अजित पवार ने कहा, महाराष्ट्र सरकार घायलों के इलाज का खर्च वहन करेगी

पुणे । महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने गुरुवार को पुणे के सर्किट हाउस में पत्रकारों से बातचीत करते हुए जलगांव में हुई घटना पर दुख जताया। उन्होंने कहा कि यह घटना सिर्फ और सिर्फ अफवाहों के कारण हुई। राज्य सरकार घायलों के इलाज का खर्च वहन करेगी।

उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने गुरुवार को पुणे के सर्किट हाउस में पत्रकारों से बातचीत के दौरान जलगांव हादसे को लेकर कहा कि घटना के बाद सरकार ने तुरंत कार्रवाई की। जलगांव में रेल हादसा होने के बाद स्थानीय प्रशासन के अधिकारियों के तुरंत मौके पर पहुंचे और राहत कार्य किया। यह घटना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। हमने इस घटना की जानकारी ली। पता चला है कि लखनऊ-मुंबई पुष्पक एक्सप्रेस ट्रेन के एक कोच में चाय विक्रेताओं ने आग लगने की सूचना दी, जिससे अफरा-तफरी मच गई। हंगामा देखकर पड़ोसी कोच में भी भारी हंगामा हो गया। इस दौरान ट्रेन को आपातकालीन चेन खींचकर रोक दिया गया। इसी बीच कुछ यात्री

अपनी जान बचाने के लिए ट्रेन से नीचे कूद गए। यात्री बगल की पटरी पर आ रही एक अन्य एक्सप्रेस ट्रेन की चपेट में आ गए, जिससे कई लोग हताहत और घायल हो गए। अजित पवार ने कहा कि इस घटना में अब तक 13 लोगों की मौत हो चुकी है।

2023 में भारतीय वाणिज्य दूतावास पर हुआ हमला था गंभीर, हमें जवाबदेही की उम्मीद : विदेश मंत्री एस जयशंकर

वाशिंगटन । नवनियुक्त अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो से मुलाकात के कुछ घंटे बाद विदेश मंत्री (ईएएम) एस. जयशंकर ने कहा कि 2023 में सैन फ्रांसिस्को में भारतीय वाणिज्य दूतावास पर हुए हमले को लेकर भारत को उम्मीद है कि 'बहुत गंभीर मामले' को लेकर 'जवाबदेही तय' की जाएगी। वे 47वें राष्ट्रपति के रूप में डोनाल्ड ट्रंप के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होने के लिए अमेरिका में थे। जयशंकर ने वाशिंगटन डीसी में एक संवाददाता सम्मेलन में ये बातें कही। बोले, सैन फ्रांसिस्को में हमारे वाणिज्य दूतावास पर आगजनी का हमला एक बहुत ही गंभीर मामला है। यह ऐसा मामला है जिसके लिए हम जवाबदेही की उम्मीद करते हैं। हम यह देखना चाहेंगे कि जिन लोगों ने इसे किया, उन्हें जिम्मेदार ठहराया जाए। भारत इस घटना के लिए जवाबदेही की उम्मीद करता है। मार्च 2023 में सैन फ्रांसिस्को में भारतीय महावाणिज्य

दूतावास पर हमलावरों के एक समूह ने हमला किया था। असामाजिक तत्वों ने सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाया था और वाणिज्य दूतावास के अधिकारियों पर हमला किया था। कुछ हमलावरों ने कुछ ज्वलनशील पदार्थों का उपयोग करके वाणिज्य दूतावास की इमारत को आग लगाने की भी कोशिश की थी। प्रदर्शनकारियों को अस्थायी सुरक्षा अवरोधों को तोड़ते हुए देखा गया था और वे खालिस्तान के समर्थन में नारे लगा रहे थे। वाणिज्य दूतावास परिसर के अंदर दो खालिस्तानी झंडे भी लगाए गए थे। लगभग तीन महीने बाद, जुलाई में फिर से, हिंसक खालिस्तानी कार्यकर्ताओं ने सैन फ्रांसिस्को में भारतीय वाणिज्य दूतावास पर हमला किया और उसे जलाने की कोशिश की। हालांकि, इस घटना से राजनयिक भवन के परिसर के अंदर कोई नुकसान नहीं हुआ, लेकिन यह दूसरी बार था जब खालिस्तानियों ने वाणिज्य दूतावास को निशाना बनाया। उस समय, इस हमले को वाशिंगटन डीसी में अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा और राजनयिक तंत्र के सर्वोच्च स्तर के ध्यान में लाया गया, जिसने एजेंसियों को घटना की तुरंत जांच करने और सुरक्षा बढ़ाने का निर्देश दिया था। भारत ने यह स्पष्ट कर दिया था कि वह इस मामले में कार्रवाई देखना चाहता है, न कि केवल सहानुभूति। वह चाहता था कि इन घटनाओं में शामिल लोगों की गिरफ्तारी हो और भविष्य में ऐसे किसी भी हमले को रोकने के लिए अमेरिकी अधिकारियों द्वारा एहतियाती उपाय किए जाएं। स्थानीय सैन फ्रांसिस्को पुलिस विभाग, विशेष राजनयिक सुरक्षा कर्मियों और राज्य और संघीय अधिकारियों को सूचित किया गया और उन्होंने जुलाई की घटना की जांच शुरू की।डोनाल्ड ट्रंप के शपथ ग्रहण समारोह के बाद विदेश मंत्री जयशंकर ने मार्को रुबियो के साथ द्विपक्षीय बैठक की। विदेश मंत्री जयशंकर के अनुसार, दोनों नेताओं ने बांग्लादेश पर भी संक्षिप्त चर्चा की। हालांकि, विदेश मंत्री ने इस पर और अधिक जानकारी नहीं दी और कहा कि मुझे नहीं लगता कि यह उचित है।

ट्रेन में आग लगने की अफवाह फैलाने वालों को मिले कड़ी सजाः राहुल

नई दिल्ली। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने कहा है कि महाराष्ट्र में ट्रेन में आग लगने की अफवाह के कारण कई लोगों की जान गई और कई अन्य के जख्मी होने की खबर अत्यंत दुखद है तथा इस तरह के हालात पैदा होने के पीछे के कारणों की पड़ताल कर दोषियों को सख्त सजा दी जानी चाहिए।

श्री गांधी ने गुरुवार को कहा, ÷महाराष्ट्र के जलगांव में हुए भीषण ट्रेन हादसे में कई लोगों के मौत और कईयों के घायल होने की ख़बर बेहद दुखद और व्यथित करने वाली है। शोकाकुल परिवारों के प्रति गहरी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं और घायलों के जल्द स्वस्थ होने की आशा करता हूं। सरकार और प्रशासन सुनिश्चित करें कि घायलों का बेहतर से बेहतर इलाज हो। जन्होंने कांग्रेस कार्यकर्ताओं से अनुरोध किया कि वे राहत और बचाव कार्यों में प्रशासन की मदद करें। कांग्रेस नेता ने कहा, आग लगने की अफवाह कैसे फैली और इतना भीषण हादसा कैसे हुआ

इसकी त्वरित जांच होनी चाहिए और दोषियों को सखूत से सखूत सज़ा मिलनी चाहिए। कांग्रेस ने भी आधिकारिक पेज पर शोक व्यक्त करते हुए कहा, महाराष्ट्र में पुष्पक एक्सप्रेस में आग की अफवाह की वजह से कई यात्रियों की मृत्यु की खबर पीड़ादायक है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वे मृतकों के परिजनों को संबल प्रदान करें। इस मुश्किल घड़ी में कांग्रेस परिवार की संवेदनाएं शोकाकुल परिजनों के साथ हैं।

हरियाणा के 13 जिलों में होगी भारी बारिश, IMD ने जारी किया अलर्ट

चंडीगढ़। हरियाणा में मौसम तेजी से बदल रहा है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने 22 और 23 जनवरी को प्रदेश के 13 जिलों में बारिश का येलो अलर्ट जारी किया है। इस बदलाव के चलते रात के तापमान में गिरावट और ठंड बढ़ने की संभावना है। फिलहाल, पिछले कुछ दिनों से प्रदेश में धूप निकलने से ठंड कम हो गई थी। मौसम विभाग ने हरियाणा के 13 जिलों में बारिश की संभावना जताई है। इनमें करनाल, महेंद्रगढ़, रेवाड़ी, झज्जर, गुरुग्राम, मेवात, पलवल, फरीदाबाद, रोहतक, सोनीपत, पानीपत, भिवानी और चरखी दादरी शामिल हैं। विशेषज्ञों के अनुसार इस बारिश से जहां किसानों की रबी की फसलों को फायदा हो सकता है, वहीं इससे ठंड और कोहरा भी बढ़ेगा। आईएमडी के अनुसार, फिर ठंड बढ़ जाएगी। मौसम विभाग के आंकड़ों के अनुसार जनवरी के पहले

पिछले दिनों धूप निकलने से हरियाणा के ज्यादातर इलाकों से घना कोहरा छंट गया था। हालांकि 22 और 23 जनवरी को संभावित बारिश के बाद एक बार पखवाड़े में हरियाणा का औसत न्यूनतम तापमान 6-8 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहा, जो सामान्य से थोड़ा अधिक है।

पर्यटन हब के रूप में विकसित होगा भरतपुर, बजट घोषणाओं को लागू कर रही राज्य सरकार - सीएम

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि भरतपुर में ऐतिहासिक, धार्मिक एवं प्राकृतिक पर्यटन की संभावनाओं को ध्यान में रखकर सौन्दर्यकरण एवं सुव्यवस्थित विकास कार्य करवाये जा रहे हैं ताकि भरतपुर को पर्यटन स्थल के हब के रूप में विकसित किया जा सके। उन्होंने कहा कि इसी दिशा में हमारी सरकार ने पहले बजट में भरतपुर के विकास के लिए कई महत्वपूर्ण घोषणाएं की। शर्मा मुख्यमंत्री निवास पर भरतपुर की बजट घोषणाओं एवं विकास कार्यों की समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि लगभग सभी बजट घोषणाओं से संबंधित भूमि आवंटन के कार्य किए जा चुके हैं। मुख्यमंत्री ने सभी विभागों को निर्देश दिए कि भूमि आवंटन के बाद आगे की प्रक्रिया में तेजी लाएं ताकि इन विकास कार्यों को धरातल पर

उतारा जा सके। उन्होंने बजट घोषणाओं की नियमित मॉनिटरिंग करते हुए धरातल पर शीघ्र मूर्तरूप देने के निर्देश दिये। मुख्यमंत्री ने कहा कि बजट घोषणा की अनुपालना में भरतपुर से शुरूआत करते हुए प्रदेश में पहली बार सभी कार्यालयों को एक स्थान पर लाने के लिये कर्मशिला भवन का नवाचार किया गया है। उन्होंने कहा कि इसके लिए भूमि आवंटन किया जा चुका है तथा शेष कार्य भी जल्द पूरा कर लिया जाए। साथ ही, उन्होंने जनाना अस्पताल को पुराने शहर से बाहर शिफ्ट करने, पशु चिकित्सालय एवं वेटरनरी कॉलेज को अन्यत्र शिफ्ट करने तथा विज्ञान केन्द्र की स्थापना की प्रगति की समीक्षा की।

बजट में आमजन को सुलभ सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए की घोषणाएं —

शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार ने बजट में आमजन को सुलभ सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए घोषणाएं की हैं। उन्होंने निर्देश दिए कि बजट घोषणाओं में शामिल हीरादास-कुम्हेर गेट फ्लाई ओवर, काली बगीची-आरबीएम अस्पताल फ्लाई ओवर निर्माण जल्द किया जाए। उन्होंने भरतपुर एवं डीग जिले की सड़क निर्माण से संबंधित बजट घोषणाओं की प्रगति की भी जानकारी ली। मुख्यमंत्री ने कहा कि भरतपुर जिले में स्वीकृत जीएसएस निर्माण के समस्त कार्य जल्द पूरा किया जाए।

कॉल सेंटर-क्रिप्टोकरेंसी रैकेट - ईडी ने पश्चिम बंगाल में कई जगहों पर छापेमारी की, आपत्तिजनक दस्तावेज बरामद

कोलकाता। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने पश्चिम बंगाल में कई स्थानों पर छापेमारी और तलाशी शुरू की। ईडी की टीम ने ज्यादातर कोलकाता और उसके आसपास के इलाकों में छापेमारी की। छापेमारी राज्य से संचालित एक कॉल सेंटर-सह-क्रिप्टोकरेंसी रैकेट के संबंध में की जा रही है। सूत्रों के अनुसार, वर्तमान में ईडी अधिकारियों की विभिन्न टीमें कोलकाता और उसके आसपास के विभिन्न स्थानों पर छापेमारी और तलाशी अभियान चला रही हैं। एजेंसी की प्रत्येक टीम को सीएपीएफ के जवान सुरक्षा दे रहे हैं। सूत्रों के अनुसार, यह विशेष रैकेट फर्जी कॉल सेंटरों के माध्यम से सॉफ्टवेयर से संबंधित सेवाएं देने के बहाने विदेशों में रहने वाले लोगों को धोखा देने और उसके बाद क्रिप्टोकरेंसी के रूप में एकत्र की गई राशि को विदेश में भेजने में शामिल था। छापेमारी और तलाशी अभियान सुबह 8 बजे से 10 अलग-अलग स्थानों पर एक साथ शुरू हुआ। जानकारी के अनुसार, ईडी अधिकारियों की कार्रवाई अभी भी जारी है। जिन स्थानों पर ईडी की टीम छापेमारी और तलाशी अभियान चला रही है उनमें कोलकाता में बल्लीगंज, तोपसिया और पिकनिक गार्डन, साल्ट लेक, राजारहाट और शहर के उत्तरी बाहरी इलाके में सेक्टर वी का सूचना प्रौद्योगिकी केंद्र शामिल हैं।

भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केन्द्र को आपदा प्रबंधन पुरस्कार

तेजिन्दर कौर बब्बर

नई दिल्ली। भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केन्द्र को आपदा प्रबंधन में उत्कृष्ट कार्य के लिए संस्थागत श्रेणी में सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार-2025 के लिए चुना गया है। गृह मंत्रालय ने गुरुवार को यहां बताया कि केंद्र सरकार ने आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में व्यक्तियों और संगठनों द्वारा किए गए अमूल्य योगदान और निःस्वार्थ सेवा को मान्यता देने और उन्हें सम्मानित करने के लिए सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार के नाम से एक वार्षिक पुरस्कार की स्थापना की है। इस पुरस्कार की घोषणा हर साल 23 जनवरी को नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर की जाती है। पुरस्कार के तहत संस्था के लिए 51 लाख रुपये नकद और प्रमाण पत्र तथा व्यक्ति के लिए पांच लाख रुपये और प्रमाण पत्र दिए जाते हैं। देश ने आपदा प्रबंधन की पद्धतियों, तैयारियों, आपदा न्यूनीकरण और आपदा से निपटने के तौर-तरीकों में उल्लेखनीय सुधार किया है, जिसके परिणामस्वरूप प्राकृतिक आपदाओं के दौरान हताहत होने वालों की संख्या में काफी कमी आई है। वर्ष 2025 के पुरस्कार के लिए एक जुलाई 2024 से नामांकन आमंत्रित किए गए थे। पुरस्कार योजना का प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया के माध्यम से व्यापक प्रचार किया गया। पुरस्कार के लिए संस्थाओं और व्यक्तियों से 297 नामांकन प्राप्त हुए। भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र की स्थापना 1999 में हैदराबाद, तेलंगाना में की गई थी। यह भारत की आपदा प्रबंधन रणनीति का अभिन्न अंग है, जो समुद्र से संबंधित खतरों के लिए शुरुआती चेतावनी देने में कुशल है।

काठमांडू से हांगकांग जा रहे चीनी नागरिक 16 किलो ड्रग्स के साथ गिरफ्तार

एजेंसी

काठमांडू। काठमांडू के त्रिभुवन अंतरराष्ट्रीय विमानस्थल से एक चीनी नागरिक को 16 किलो प्रतिबंधित ड्रग्स के साथ गिरफ्तार किया गया है। काठमांडू से हांगकांग जा रहे चीनी नागरिक के बैगेज के 16 किलो ड्रग्स बरामद होने के बाद हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। विमस्थल के सुरक्षा प्रमुख एसएसपी सोमेंद्र सिंह राठौड़ ने बताया कि कैथे पैसेफिक विमान से हांगकांग के तरफ जा रहे समय उसके लगेज की जांच के दौरान यह ड्रग्स बरामद किया गया। गिरफ्तार किए गए चीनी नागरिक और जब्त किए गए ड्रग्स को नारकोटिक्स ब्यूरो को सौंप दिया गया है। ब्यूरो के प्रवक्ता रामेश्वर कार्की ने कहा कि ड्रग्स की जांच के लिए लैब में भेज दिया गया है। उन्होंने बताया कि इनमें कई तरह के ड्रग्स हैं। इसलिए जांच के बाद इसकी कीमत का अंदाजा लगाया जा सकता है।

अमेरिका के एक स्कूल में गोलीबारी, दो की मौत

वाशिंगटन । अमेरिकी राज्य टेनेसी के नैशविले में एक स्कूल में गोलीबारी हुई है। फायरिंग में हमलावर छात्र समते दो की मौत हो गई। मेट्रो नैशविले पुलिस विभाग ने कहा है कि सुबह 11:09 बजे गोलीबारी की पहली कॉल 911 आपातकालीन नंबर पर आई थी। पुलिस ने कहा कि शूटर ने एक छात्र की हत्या करने के बाद खुद को भी गोली से उड़ा लिया। इस हादसे में एक अन्य छात्र को हल्की चोट आई है। पुलिस ने मृतक की पहचान 16 वर्षीय जोसेलिन कोरिया एस्केलेंटे और शूटर की पहचान 17 वर्षीय सोलोमन हेंडरसन के रूप में की है। स्कूल डिस्ट्रिक्ट (मेट्रो स्कूल) ने एक्स पर एक बयान जारी करते हुए कहा, एंटिओक हाई स्कूल की इमारत के अंदर गोलीबारी हुई जिसकी वजह से स्कूल को बंद कर दिया गया है। मेट्रो पुलिस मौके पर है। गोलीबारी के लिए जिम्मेदार व्यक्ति से अब कोई खतरा नहीं है। हम छात्रों को ऑडिटोरियम में एकत्रित करेंगे। हुई गोलीबारी की घटना लगभग दो साल पहले हुई वारदात की याद दिला दी। तब एक स्कूल में हुई गोलीबारी में नौ वर्षीय तीन छात्रों और तीन वयस्क कर्मचारियों की मौत हो गई थी। शूटर को भी पुलिस ने मार गिराया था। बुधवार की वारदात राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में पहली गोलीबारी की घटना है। व्हाइट हाउस ने एक बयान में कहा, राष्ट्रपति और उनकी टीम नैशविले से आने वाली खबरों पर नजर रख रही है।

जंगल की आग के बीच प्रदूषित हवा की चुनौती, प्रशासन की सलाह - घर से बाहर निकलने से बचें

कैलिफोर्निया । यूएस नेशनल वेदर सर्विस (एनडब्ल्यूएस) ने जंगल में लगी आग और खराब वायु गुणवत्ता की वजह से कैलिफोर्निया के लोगों को घरों से बाहर नहीं जाने की सलाह दी गई है। समाचार एजेंसी सिन्हुआ के अनुसार, एनडब्ल्यूएस ने साउथ कोस्ट एयर बेसिन, कोचेला वैली और पूर्वी रिवरसाइड काउंटी में हवा की गुणवत्ता को लेकर कई चेतावनियां जारी की हैं। सोमवार से लॉस एंजिल्स और वेंचुरा काउंटियों के कुछ हिस्सों में तेज 'सांता एना' हवा चलने की संभावना जताई जो आग को भड़का सकती हैं। एनडब्ल्यूएस के अनुसार, लॉस एंजिल्स और वेंचुरा काउंटियों के कुछ हिस्सों में रातभर तेज और 'सांता एना' हवाएं चलने की संभावना है। साउथ कोस्ट एयर क्वालिटी मैनेजमेंट डिस्ट्रिक्ट ने मंगलवार शाम तक तेज़ 'सांता एना' हवाओं के कारण हवा में उड़ने वाली धूल और राख को लेकर भी चेतावनी जारी की। एनडब्ल्यूएस ने ज्यादातर क्षेत्र के लिए रेड फ्लैग चेतावनियां, तेज़ हवा की चेतावनी और हवा से संबंधित सलाह जारी की है। पिछले हफ्ते, दक्षिणी कैलिफोर्निया में भीषण जंगल की आग में 27 लोगों की मौत हो गई है। आग एक हफ्ते से ज्यादा समय तक चली। इस दौरान कम से कम 12,300 इमारतें नष्ट हो गईं।

कौन हैं वो बिशप जिनके भाषण ने मचाया तहलका, ट्रंप को सुनाई खरी-खरी

वाशिंगटन। वाशिंगटन की बिशप, मैरिएन एडगर बुडे का भाषण सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। दुनिया भर के यूजर्स इस पर प्रतिक्रिया दे रहे हैं। उन्होंने यह भाषण वाशिंगटन नेशनल कैथेड्रल में डोनाल्ड ट्रंप की 'इनॉगरल प्रेयर सर्विस' के दौरान दिया और राष्ट्रपति से उन लोगों पर 'दया' करने अपील की, जो 'अब डरे हुए हैं', इनमें एलजीबीटीक्यू+ सदस्यों और आप्रवासी परिवार शामिल हैं। अपने 15 मिनट भाषण दौरान, बुडे ने सीधे ट्रंप को संबोधित किया, जो आगे की पंक्ति में पत्नी मेलानिया के साथ बैठे थे। उन्होंने कहा, हमारे भगवान के नाम पर, मैं आपसे (ट्रंप) हमारे देश के उन लोगों पर दया करने के लिए कहती हूं जो अब डरे हुए हैं। बुडे ने देश भर में डेमोक्रेटिक, रिपब्लिकन और स्वतंत्र परिवारों में समलैंगिक, लेस्बियन और ट्रांसजेंडर बच्चों का उल्लेख किया जिन्हें अपने जीवन के लिए डर सता रहा है। बिशप ने अप्रवासी श्रमिकों के लिए भी आवाज उठाई, जिनमें वे लोग भी शामिल हैं जिनके पास उचित दस्तावेज़ नहीं हैं। उन्होंने कहा कि उनमें से अधिकांश अपराधी नहीं बल्कि अच्छे पड़ोसी हैं। ट्रंप बिशप के भाषण से खासे नाराज हैं।

हमास सप्ताहांत तक अर्बेल येहुद को भी छोड़ देगा, इजराइल को उम्मीद

एजेंसी

तेल अवीव। इजराइल को हमास से उम्मीद है कि वह गाजा में संघर्ष विराम और बंधक रिहाई समझाते के अंतर्गत सप्ताहांत तक अर्बेल येहुद को भी रिहा कर देगा। हमास ने शनिवार तक गाजा पट्टी से चार बंधकों की रिहाई की घोषणा की है। इजराइल ने कहा है कि 29 वर्षीय अर्बेल येहुद सात अक्टूबर, 2023 से हमास के आतंकवादियों के चंगुल में है। द टाइम्स ऑफ इजराइल की खबर के अनुसार, अर्बेल येहुद इजराइल की महिला नागरिक हैं। ऐसा माना जाता है कि उसे फिलिस्तीनी इस्लामिक जिहाद आतंकवादी समूह ने पकड़ रखा है। इजराइल ने हमास से अपेक्षा की है कि वह मुक्त होने वाली चार महिला बंधकों के नाम उनकी निर्धारित रिहाई से एक दिन पहले शुक्रवार तक प्रदान करेगा। येहुद को उसके प्रेमी एरियल कुनियो के साथ सात अक्टूबर को उनके किबुत्ज निर ओज स्थित घर से

बंधक बनाया गया था। इन दोनों को बचाने के प्रयासों के दौरान येहुद के भाई डोलेव येहुद की जान चली गई थी। अर्बेल येहुद बंधक रिहाई समझौते के तहत रिहा होने वाली 33 लोगों की सूची में से शेष सात महिला बंधकों में से एक है। अन्य हैं 33 वर्षीय शिरी सिल्बरमैन बिबास, 19 वर्षीय लिरी अल्बाग, 20 वर्षीय करीना एरिएव, 21 वर्षीय अगम बर्जर, 20 वर्षीय डेनिएल गिल्बोआ और 20 वर्षीय नामा लेवी। इनमें येहुद और सिल्बरमैन बिबास दोनों नागरिक हैं। अल्बाग, एरिएव, बर्जर, गिल्बोआ और लेवी सैनिक हैं। बिबास के दो छोटे बेटे पांच वर्षीय एरियल और दो वर्षीय केफिर और पति यार्डन भी हमास के कब्जे में हैं। प्रत्येक महिला सैनिक के बदले इजराइल 50 फिलिस्तीनी कैदियों को रिहा करेगा। इनमें से 30 आतंकवादी भी शामिल हैं। यह आजीवन कारावास की सजा काट रहे हैं। इस बीच हमास के एक अधिकारी ने पुष्टि की है कि समझौते के तहत शनिवार को चार इजराइली महिला बंधकों को रिहा कर दिया जाएगा। हालांकि उन्होंने चारों महिलाओं के नाम नहीं बताए। जबकि समझौते में कहा गया है कि हमास को बंधकों के नाम उनकी रिहाई से कम से कम 24 घंटे पहले बताने होंगे।

येओल काफिले के साथ संवैधानिक न्यायालय पहुंचे, महाभियोग पर होगी सुनवाई

एजेंसी

सियोल। पिछले दिनों औपचारिक रूप से गिरफ्तार किए गए दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति यून सुक येओल काफिले के साथ संवैधानिक न्यायालय पहुंचे। संवैधानिक न्यायालय 14 दिसंबर को येओल के खिलाफ नेशनल असेंबली में पारित महाभियोग प्रस्ताव पर सुनवाई कर रहा है। इससे पहले तीन बार न्यायालय सुनवाई कर चुका है। येओल दो बार नहीं पहुंचे। वह तीसरी सुनवाई में व्यक्ति रूप से हाजिर हुए थे। द कोरिया टाइम्स की खबर के अनुसार, यून सुक येओल को तीन दिसंबर को अल्पकालिक मार्शल लॉ लगाए जाने के बाद कड़े विरोध का सामना करना पड़ रहा है। येओल का काफिला सियोल के दक्षिण में उइवांग में सियोल डिटेंशन सेंटर से रवाना हुआ और संवैधानिक न्यायालय पहुंचा। सुनवाई में पूर्व रक्षामंत्री किम योंग-ह्यून भी शामिल होंगे। उन्हें मार्शल लॉ की घोषणा में कथित भूमिका के लिए गिरफ्तार किया गया था। येओल के वकीलों ने मुकदमे के लिए किम को गवाह के रूप में चुना है।

जापान के साथ नेताजी सुभाष चंद्र बोस का विशेष संबंध था: मुख्यमंत्री

एजेंसी

टोक्यो। असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा ने टोक्यो स्थित भारतीय दूतावास में नेताजी सुभाष चंद्र बोस को पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। उन्होंने कहा, नेताजी की जापान यात्रा और उपनिवेशी शासन के खिलाफ जापान का समर्थन पाने के उनके कठिन प्रयासों उन्होंने को याद किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि नेताजी के विचार और भारत के इतिहास में उनके अतुलनीय योगदान से हम गहराई से प्रेरित हैं।

डॉ. सरमा ने कहा, आज मैंने टोक्यो में भारतीय दूतावास में नेताजी को पुष्पांजलि अर्पित करके अपने दिन की शुरुआत की। मैंने उनकी जापान यात्राओं और औपनिवेशिक शासन के खिलाफ लड़ाई में जापान

का समर्थन हासिल करने के लिए उनके अथक प्रयासों को याद किया। उन्होंने कहा, हम नेताजी के विचारों और भारत के इतिहास में उनके अद्वितीय योगदान से गहराई से प्रभावित हैं। नेताजी सुभाष चंद्र बोस, जो भारत के स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख नेता थे, ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापान की मदद से भारतीय राष्ट्रीय सेना (आईएनए) का गठन किया और ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन को चुनौती दी। जापान के साथ उनका सहयोग दोनों देशों के साझा इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। डॉ. सरमा की यह यात्रा नेताजी के विजन और भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका के प्रति सम्मान को दर्शाती है। साथ ही, उनके बयान से भारत-जापान संबंधों को मजबूत करने के ऐतिहासिक और आपसी सम्मान के महत्व पर भी प्रकाश पड़ता है।

नेपाल एपीएफ ने भारत और चीन की सीमा सुरक्षा के लिए 425 नए बॉर्डर आउट पोस्ट बनाने का प्रस्ताव रखा

एजेंसी

काठमांडू। नेपाल की सीमा सुरक्षा का जिम्मा संभाल रहे सशस्त्र प्रहरी बल (एपीएफ) ने भारत और चीन की सीमा पर 425 नए बॉर्डर आउट पोस्ट (बीओपी) बनाने का प्रस्ताव दिया है। इस समय एपीएफ के पास दोनों अंतरराष्ट्रीय सीमाओं पर सिर्फ 254 सुरक्षा पोस्ट है, जो सीमा निगरानी के लिहाज से नाकाफी हैं। एपीएफ के आईजीपी राजू अर्याल ने बताया कि सीमा सुरक्षा को मजबूत करने और सीमापार से अपराध नियंत्रण के लिए गृह मंत्रालय को भेजे प्रस्ताव में 425 नए बीओपी बनाने की बात कही गई है। उन्होंने बताया कि इनमें से 350 बीओपी भारत-नेपाल सीमा पर और शेष चीन की सीमा पर बनाए जाने का प्रस्ताव है।आईजीपी बताया कि हाल ही में भारत के सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) महानिदेशक के साथ हुई सीमा सुरक्षा संबंधी द्विपक्षीय बैठक में भी बीओपी स्थापना की आवश्यकता पर चर्चा की गई थी।

सशस्त्र प्रहरी बल ने गृह मंत्रालय को सौंपी गई रिपोर्ट में कहा है कि इन बीओपी के साथ ही आवश्यक जनशक्ति, हथियार, सीसीटीवी कैमरा सहित अन्य सुरक्षा संयंत्र की आवश्यकता भी होगी। भारत के साथ खुली सीमा होने के कारण वहां पर तस्करी से लेकर सीमा पार आपराधिक गतिविधियां तेज हो गई हैं। हाल ही में भारत में अपराध कर आसानी से नेपाल में छिपने की घटनाएं बढ़ी हैं। कॉन्टैक्ट किलिंग जैसी घटनाओं के कारण सीमा सुरक्षा पर निगरानी और अधिक बढ़ाने की आवश्यकता है। मानव तस्करी, ड्रग्स तस्करी में खुली सीमा का इस्तेमाल होने के कारण भी सुरक्षा पोस्ट की संख्या बढ़ाया जाना जरूरी हो गया है।

नेपाल टेलीकॉम का डेटा सेंटर बनाने की जिम्मेदारी विवादास्पद चीनी कंपनी हुवावे को दिया गया

एजेंसी

काठमांडू। नेपाल सरकार ने सरकारी टेलीकॉम कंपनी का अपना डेटा सेंटर बनाने के लिए चीन की विवादित कंपनी हुवावे को देने का फैसला किया है। वैसे तो यह प्रक्रिया पिछले दो साल से रोक कर रखी गई थी लेकिन वर्तमान सरकार ने इसे चीनी कंपनी को देने का फैसला कर लिया है। नेपाल टेलीकॉम की तरफ से एक सूचना जारी करते हुए डेटा सेंटर बनाने के लिए चीन की हुवावे कंपनी को देने की जानकारी दी गई है। इस सूचना के मुताबिक हुवावे को काठमांडू और भैरहवा में डेटा सेंटर बनाने की जिम्मेदारी मिली है। नेपाल टेलीकॉम के प्रवक्ता हरि ढकाल ने बताया कि हुवावे को करीब 50 करोड़ रुपये में दोनों स्थानों पर डेटा सेंटर के लिए भौतिक पूर्वधार निर्माण का काम दिया गया है। प्रवक्ता के मुताबिक डेटा सेंटर के लिए आवश्यक पावर बैकअप, पावर सप्लाई, सिक्योरिटी और कनेक्टिविटी का काम की जिम्मेदारी हुवावे को सौंपी गई है।

अमेरिकी विदेश मंत्री ने इजरायली पीएम से की बात, बोले - हमारा समर्थन बरकरार

एजेंसी

वाशिंगटन । अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू से फोन पर बातचीत की। उन्होंने इजरायली प्रधानमंत्री को आश्वस्त किया कि अमेरिका हर स्थिति में उनके साथ खड़ा है। रुबियो ने नेतन्याहू से बंधक संकट पर भी बात की। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के प्रशासन के शुरू होने के बाद रुबियो की इजरायल को की गई पहली कॉल थी। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और उनके पूर्ववर्ती डेमोक्रेटिक राष्ट्रपति जो बाइडेन ने गाजा और लेबनान में युद्ध के दौरान इजरायल का समर्थन किया था। विदेश विभाग ने एक बयान में कहा कि रुबियो ने यह स्पष्ट किया कि ÷इजरायल के लिए अमेरिका का मजबूत समर्थन बनाए रखना ट्रंप की सबसे बड़ी प्राथमिकता है। विदेश विभाग ने कहा कि रुबियो ने नेतन्याहू से कहा कि वाशिंगटन गाजा में बाकी बंधकों को छुड़ाने के लिए लगातार

काम करता रहेगा। इजरायली और फिलिस्तीन के बीच संघर्ष की शुरुआत 7 अक्टूबर, 2023 को हुई थी। इजरायली अधिकारियों के अनुसार, हमास के आतंकवादियों ने इजरायल पर हमला किया था। इस हमले में 1,200 लोग मारे गए थे और लगभग 250 लोग बंधक बनाए गए थे। वहीं, गाजा स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, इजरायल के सैन्य हमलों में 47,000 से ज्यादा फिलिस्तीनी मारे गए थे। इजरायल पर नरसंहार और युद्ध के आरोप भी लगाए गए थे, लेकिन इजरायल ने इन आरोपों को खारिज कर दिया था। इस हमले से गाजा के लोग बेघर हो गए। इसके साथ भुखमरी जैसे हालात भी पैदा हो गए। युद्धविराम लागू हुआ, जिसके बाद गाजा में कुछ इजरायली बंधकों और इजरायल द्वारा बंदी बनाए गए फिलिस्तीनी कैदियों को रिहा कर दिया गया। कुछ संगठनों ने इजरायल के सैन्य हमलों के कारण बढ़ते मानवीय संकट की आलोचना की है। वाशिंगटन ने अपना समर्थन जारी रखते हुए कहा है कि वह गाजा में हमास, लेबनान में हिजबुल्लाह और यमन में हूती विद्रोहियों जैसे ईरान समर्थित आतंकवादी समूहों के खिलाफ अपने सहयोगी इजरायल की मदद कर रहा है।

ट्रंप के नेतृत्व में अमेरिका से संबंधों में बदलाव की संभावना, विश्लेषकों का अनुमान

एजेंसी

ढाका। अमेरिका में डोनाल्ड ट्रंप की सत्ता में वापसी के बाद बांग्लादेश से संबंधित नीतियों में भी बदलाव की संभावना है। ढाका में कई विश्लेषकों का मानना है कि बांग्लादेश के लिए अब अमेरिका के साथ रिश्ते असहज हो सकते हैं, विशेष रूप से मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार के सत्ता में आने के बाद से बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों, खासकर हिंदुओं के खिलाफ बढ़ते हमलों को लेकर अमेरिका में चिंता है। राष्ट्रपति चुनाव अभियान के दौरान ट्रंप ने बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों, विशेष रूप से हिंदुओं और ईसाइयों के खिलाफ बढ़ती हिंसा की निंदा की थी। ट्रंप ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा था, ÷मैं बांग्लादेश में हिंदुओं, ईसाइयों और अन्य अल्पसंख्यकों के खिलाफ बर्बर हिंसा की कड़ी निंदा करता हूं, जहां भीड़ द्वारा हमले और लूटपाट हो रही है। यह पूरी तरह से अराजकता की स्थिति है। उन्होंने कहा, ÷मेरे कार्यकाल में ऐसा कभी नहीं हुआ, हम कट्टरपंथी वामपंथियों के धर्म-विरोधी एजेंडे से हिंदू अमेरिकियों की रक्षा करेंगे। हम आपकी स्वतंत्रता के लिए लड़ेंगे। यूनुस सरकार ने अमेरिकी प्रशासन से अच्छे संबंध बनाने की कोशिश की है और यह दावा किया है कि ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में दोनों देशों के रिश्तों में कोई बदलाव नहीं होगा। लेकिन ढाका में कई विशेषज्ञों का मानना है कि अमेरिका के साथ संबंधों में मुश्किलें आ सकती हैं। सेंटर फॉर पार्टनरशिप इनिशिएटिव के संस्थापक रकीब अल हसन ने एक लेख में कहा कि बांग्लादेश को अमेरिकी नीति के विकास को ध्यान से देखना चाहिए और इसके लिए एक विशेष इकाई विदेश मंत्रालय में बनानी चाहिए। चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) में बांग्लादेश की भागीदारी पर अमेरिका पहले ही अपनी चिंता व्यक्त कर चुका है और ट्रंप के मुखर रुख से बांग्लादेश को कड़े फैसलों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अलावा, अमेरिका बांग्लादेश को सालाना लगभग 20 करोड़ डॉलर की विकास सहायता प्रदान करता है और बांग्लादेश का सबसे बड़ा निर्यात बाजार भी है, विशेष रूप से रेडीमेड गारमेंट (आरएमजी) क्षेत्र में। हालांकि, हाल की रिपोर्टों के अनुसार, बांग्लादेश में नए अमेरिकी निवेश और द्विपक्षीय व्यापार में वृद्धि की संभावना सीमित दिख रही है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि बांग्लादेश में वर्तमान में कई निवेशक पीछे हट रहे हैं और कुछ संभावित निवेशक स्थिति को देखकर फैसला लेने की रणनीति अपना रहे हैं। एक पूर्व बांग्लादेशी राजनयिक ने बताया कि नए निवेशकों को स्थिति का आकलन करने थोड़ा इंतजार करना पड़ सकता है। इस बीच, ढाका में अमेरिकी दूतावास के प्रभारी राजदूत ट्रेसी एन जैकबसन ने हाल ही में बांग्लादेश के विभिन्न नेताओं से मुलाकात की है। गत 11 जनवरी को कार्यभार संभालने के बाद, उन्होंने यूनुस से मुलाकात की और बांग्लादेश के लोगों के लिए एक स्थिर और लोकतांत्रिक भविष्य की दिशा में अमेरिका के समर्थन पर चर्चा की।

अमेरिका में अवैध प्रवासियों के खिलाफ कार्रवाई में चार बांग्लादेशी गिरफ्तार

एजेंसी

ढाका। अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा अवैध घुसपैठ पर कड़ी नीति अपनाने की घोषणा के बाद से कानून प्रवर्तन एजेंसियों ने बिना दस्तावेज वाले अवैध अप्रवासियों पर कार्रवाई शुरू कर दी है। इसी के तहत अमेरिकी आव्रजन और सीमा शुल्क प्रवर्तन (आईसीई) ने चार बांग्लादेशी नागरिकों को न्यूयॉर्क से गिरफ्तार किया है। बांग्लादेश का प्रमुख समाचार पत्र प्रोथोम अलो की रिपोर्ट के मुताबिक, आईसीई ने चार बांग्लादेशियों को न्यूयॉर्क के ब्रुकलिन बोरो के फुल्टन इलाके से गिरफ्तार किया है। इस कार्रवाई से स्पष्ट है कि ट्रंप के शपथ लेने और आव्रजन से संबंधित कार्यकारी आदेशों की एक श्रृंखला पारित करने के बाद से गैर-दस्तावेजी अवैध अप्रवासी डर में जी रहे हैं। रिपोर्ट में कहा गया है, जमीन पर देखा गया है कि बंगाली बहुल इलाकों में सड़कें और रेस्तरां, जहां लोगों की भारी भीड़

हुआ करती थी, अब लगभग पूरी तरह से खाली हैं। सुरक्षा व्यवस्था पहले से ही मजबूत कर दी गई है।रिपोर्ट में न्यूयॉर्क में अप्रवासियों के साथ काम करने वाली कानून प्रवर्तन अधिकारी खदीजा मुंतहा रूबा के हवाले से कहा गया है कि बिना दस्तावेज वाले बांग्लादेशियों को उस समय गिरफ्तार किया गया जब वे क्षेत्र में घूम रहे थे। मुंतहा ने बांग्लादेशियों को सतर्क रहने की सलाह देते हुए कहा है कि किसी भी कानून प्रवर्तन एजेंसी के सदस्यों द्वारा पूछताछ किए जाने पर उन्हें सहयोग करना चाहिए। साथ ही, किसी और के वर्क परमिट पर काम करना भी बंद कर देना चाहिए। इस कठिन समय में, उन्हें अनावश्यक पुलिस या अन्य विवादों में शामिल नहीं होना चाहिए।

स्की रिसॉर्ट होटल में आग लगने से 66 की मौत, 50 से ज्यादा घायल

अंकारा। तुर्की में एक स्की रिसॉर्ट होटल में लगी आग में कम से कम 66 लोगों की मौत हो गई और 50 से ज्यादा लोग घायल हो गए। यह हादसा उस समय हुआ जब बोलू प्रांत के कार्तलकाया स्की रिसॉर्ट में स्थित एक होटल में आधी रात के बाद आग लग गई। इमारत में एक मंजिल पर रेस्त्रां चलता है। आग रेस्तरां में लगी। स्थानीय अधिकारियों ने बताया, कई लोग घबराहट में होटल की इमारत से कूद गए, जिससे उनकी मौत हो गई।

ट्रंप के तीन फैसलों से नेपाल सरकार की चिंता बढ़ी

काठमांडू। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के पहले दिन किए गए कई फैसलों में से तीन ने नेपाल की चिंता बढ़ा दी है। इन तीन फैसलों में विश्व स्वास्थ्य संगठन, क्लाइमेट चेंज और अवैधानिक प्रवासी संबंधी फैसला शामिल है। 20 जनवरी को राष्ट्रपति पद का शपथ लेने के साथ ही डोनाल्ड ट्रंप ने 60 से अधिक कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर किया था। इनमें विश्व स्वास्थ्य संगठन को किए जा रहे फंडिंग और पेरिस जलवायु समझौते से अमेरिका को अलग किए जाने का असर नेपाल पर भी पड़ने वाला है। इसके अलावा अवैध रूप से रह रहे विदेशी नागरिकों पर होने वाली कार्रवाई ने भी नेपाल सरकार के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। नेपाल में स्वास्थ्य मंत्रालय के विभिन्न कार्यक्रमों में सबसे अधिक आर्थिक सहयोग विश्व स्वास्थ्य संगठन का ही रहता है। स्वास्थ्य मंत्रालय की अतिरिक्त सचिव संगीता मिश्रा ने कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति के नए घोषणा से नेपाल में विश्व स्वास्थ्य संगठन के सहयोग से चल रहे कई कार्यक्रमों को बंद करने की नौबत आ सकती है। उन्होंने बताया कि नेपाल में पोलियो उन्मूलन से लेकर मातृ तथा बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम, नवजात और बालबालिका संबंधी रोग, मातृ तथा प्रसवकालीन मृत्यु, प्रजनन तथा महिला स्वास्थ्य जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम विश्व स्वास्थ्य संगठन के आर्थिक सहयोग से चल रहा था। उनका कहना है कि अमेरिका के द्वारा इससे अलग होने के कारण अब बजट पर बहुत बड़ा

असर पड़ सकता है तथा नेपाल जैसे गरीब देशों के बजट में कटौती की जा सकती है। यदि विश्व स्वास्थ्य संगठन के द्वारा बजट में कटौती की गई तो इनमें से कुछ कार्यक्रम को बंद करना होगा या फिर नेपाल को अपना बजट देना होगा। अमेरिकी राष्ट्रपति के द्वारा हस्ताक्षर किए गए एक और कार्यकारी आदेश का नेपाल में प्रत्यक्ष असर दिखाई देने वाला है औरवाह है अमेरिका का पेरिस जलवायु संबंधी पेरिस समझौता से अलग होना। अभी दो दिन पहले ही जलवायु परिवर्तन को आधार बनाकर नेपाल ने सागरमाथा संवाद की घोषणा की थी। उस कार्यक्रम को संयुक्त राष्ट्र के आर्थिक सहयोग से किए जाने की बात कही गई थी। अमेरिकी राष्ट्रपति के नए आदेश के बाद नेपाल। जैसे विकासशील देश को जलवायु परिवर्तन के कारण हो रहे नुकसान के एवज में करोड़ों डॉलर सहयोग मिलता था जिससे नेपाल में जलवायु परिवर्तन को लेकर कई परियोजनाएं चलाई जा रही थी। अमेरिका के तरफ से इस क्षेत्र में फंडिंग बंद होने से नेपाल में जलवायु परिवर्तन से संबंधित कार्यक्रमों को बंद करना पड़ सकता है। नेपाल में जलवायु संबंधी कार्य करने वाली अंतराष्ट्रीय संस्था इंटरनेशनल सेंटर फॉर इंटीग्रेटेड माउंटेन के प्रमुख पेमा ज्ञामत्सो ने कहा कि कार्बन गैस उत्सर्जन करने वाले देश के द्वारा दिए गए बजट से ही विकासशील देशों को उससे होने वाले नुकसान की भरपाई दी जाती थी।

कौमी पत्रिका

संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।

Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg
ITO, New Delhi-110002

फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300

E - mail address :
qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in

R.N.I. No.
UP-HIN/2007/21472

Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

प्रवेश वर्मा ने किया केजरीवाल पर 100 करोड़ का मानहानि का दावा

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी के नई दिल्ली से उम्मीदवार प्रवेश वर्मा ने आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल और पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान के खिलाफ 100 करोड़ के मानहानि का दावा किया है। उन्होंने केजरीवाल पर पंजाबियों को लेकर उनके बयान को गलत तरीके से पेश करने का आरोप लगाया है। पंजाबियों से संबंधित बयान पर प्रवेश वर्मा का कहना है कि सिख समुदाय के लिए उनके परिवार के कार्य को किसी को बताने की जरूरत नहीं है। उन्होंने अपने बयान से हमारी छवि को खराब करने की कोशिश की है। प्रवेश वर्मा ने चुनावी मशीनरी के दुरुपयोग का आरोप लगाते हुए कहा था कि नई दिल्ली के क्षेत्र में पंजाब से बड़ी संख्या में लोग दिल्ली आ रहे हैं।

चाकू घोंपकर युवक की हत्या, तीन नाबालिग धरे गए

नई दिल्ली। मदनगीर इलाके में बेखौफ बदमाशों ने चाकू से ताबड़तोड़ वार करके मुकुल नामक एक युवक की हत्या कर दी। युवक का अगले ही दिन जन्मदिन आने वाला था। हत्या की पीछे की वजह पारिवारिक दुश्मनी सामने आ रही है। फिलहाल पुलिस ने मामले में मुख्य आरोपित समेत तीन नाबालिगों को पकड़ लिया है। पुलिस पकड़े गये आरोपितों से पूछताछ कर रही है। परिजनों ने इस मामले में पुलिस पर लापरवाही का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि यदि उनकी शिकायतों पर पहले कार्रवाई हुई होती तो आज मुकुल की जान नहीं जाती। पुलिस के मुताबिक मामले में मंगलवार शाम करीब पांच बजे मदनगीर इलाके में चाकू से हमले की पीसीआर कॉल मिली। मौके पर पुलिस के पहुंचने से पहले घायल हालत में 23 वर्षीय मुकुल को अस्पताल पहुंचाया जा चुका था। अस्पताल में उपचार के दौरान चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। इसके बाद पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की। जांच के दौरान पुलिस ने तीन नाबालिगों को पकड़ लिया। फिलहाल पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है। पकड़े गये नाबालिग आरोपितों में से एक मृतक मुकुल का पड़ोसी है और उनके परिवार के बीच पुरानी दुश्मनी चल रही थी।

संगम विहार में जांच के दौरान कार से 47 लाख रुपये बरामद

नई दिल्ली। दक्षिणी जिले के संगम विहार इलाके में रात एक कार से 47 लाख रुपये पुलिस ने बरामद किए। पुलिस ने कार को जांच के लिए रोका था। उसके बाद चुनाव आयोग और आयकर विभाग की टीम को सूचना दी गई। फिलहाल पुलिस के साथ ही अन्य एजेंसी मामले की जांच कर रही है। दक्षिणी जिले के डीसीपी अंकित चौहान ने बताया कि मंगलवार को संगम विहार थाने की टीम टी-पॉइंट, मंगल बाजार रोड में वाहनों की जांच कर रही थी। इसी दौरान एक कार वहां से गुजरी।

ग्रीनपीस इंडिया का पूर्व-बजट प्रस्तावः नई शहरी गतिशीलता नीति में 'क्लाइमेट टिकट्स' से मिलेगी सार्वजनिक परिवहन को नई दिशा

एजेंसी

नई दिल्ली। ग्रीनपीस इंडिया और पब्लिक ट्रांसपोर्ट फोरम के तत्वाधान में प्रेस क्लब ऑफ़ इंडिया दिल्ली में किफायती सार्वजनिक परिवहन के लिए नागरिक मसौदा नीति लॉन्च की गई। यह मसौदा नीति, विशेषज्ञों और नागरिकों के साथ व्यापक परामर्श के माध्यम से बनाई गई है, जिसका उद्देश्य भारत में शहरी गतिशीलता को पूरी तरह से दुरुस्त करना है। यह नीति सार्वजनिक परिवहन के महत्व को स्वीकार करती है और मौजूदा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता पर जोर देती है, जो वित्तीय कमी और निजी वाहनों को प्राथमिकता देने के कारण प्रभावी रूप से कार्य करने में असमर्थ हो गई है।मसौदा नीति में न्यायसंगत, टिकाऊ और समावेशी सार्वजनिक परिवहन प्रणाली का विस्तार से उल्लेख किया गया है, जिससे परिवहन सभी के लिए अधिक किफायती और सुलभ बन सके। इसमें क्लाइमेट टिकट्स जैसे प्रमुख सुझाव शामिल हैं, जो मुफ्त या रियायती सार्वजनिक परिवहन विकल्प प्रदान करते हैं। साथ ही नीति केंद्र सरकार से सार्वजनिक परिवहन के बुनियादी ढांचे और सेवाओं में वित्तीय योगदान बढ़ाने की मांग करती है। यह मसौदा नीति सार्वजनिक परिवहन में पहुंच, पर्यावरणीय जिम्मेदारी और संचालन क्षमता को प्राथमिकता देती है। नागरिकों के सुझावों पर आधारित यह नीति भारत की सार्वजनिक परिवहन प्रणाली को समावेशी, टिकाऊ और प्रभावी बनाने का उद्देश्य रखती है।

केंद्रीय बजट सरकार के लिए भारत के जलवायु लक्ष्यों को हासिल करने की प्रतिबद्धता प्रदर्शित करने का एक महत्वपूर्ण अवसर हो सकता है। परिवहन को सुलभ, किफायती और प्रभावी बनाने के लिए निवेश बेहद आवश्यक है। मसौदा नीति भारत के लिए एक टिकाऊ, न्यायसंगत और किफायती सार्वजनिक परिवहन प्रणाली का खाका पेश करती है। एक स्वच्छ और पर्यावरण-अनुकूल भारत के निर्माण के लिए केंद्र सरकार को ऐसी नीतिगत और वित्तीय पहल अपनानी चाहिए, जो सार्वजनिक परिवहन को प्रभावी और किफायती बनाएं।

फारूक ने कहा, हमारे जैसे देश में जहां सतत विकास की अपार संभावनाएं हैं, नौकरियों, स्वास्थ्य सेवाओं और अवकाश के अवसरों तक पहुंच सुनिश्चित करना आवश्यक है, और सभी के लिए सुलभ सार्वजनिक परिवहन इसमें एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह केवल मुफ्त टिकट प्रदान करने का मामला नहीं है, बल्कि राज्य की नागरिकों के प्रति जिम्मेदारी का प्रश्न है, विशेष रूप से महिलाओं, बुजुर्गों, और बच्चों जैसे समूहों के लिए, जो राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में अहम योगदान देते हैं। उन्होंने कहा कि मसौदा नीति भारत में मौजूदा सार्वजनिक परिवहन प्रणालियों की चुनौतियों को उजागर करती है। इनमें सड़क अवसंरचना पर अत्यधिक ध्यान और निवेश केंद्रित करना शामिल है, जहां संसाधन मुख्य रूप से सड़क विस्तार, फ्लाईओवर और सुरंगों पर खर्च किए जाते हैं, जबकि सार्वजनिक परिवहन के बुनियादी ढांचे को पर्याप्त प्राथमिकता नहीं मिलती। सार्वजनिक बस सेवाओं में भी कई कमियां हैं, जैसे अपर्याप्त बस अड्डे, महंगी किराए, सुरक्षा से जुड़ी चिंताएं और हाशिए पर रहने वाले समुदायों की सीमित पहुंच। इसके साथ ही, सार्वजनिक परिवहन के लिए समर्पित धनराशि की कमी है, जिससे संचालन और रखरखाव के लिए पर्याप्त वित्तीय सहायता उपलब्ध नहीं हो पाती। सार्वभौमिक निशुल्क सार्वजनिक परिवहनः महिलाओं, बच्चों, बुजुर्गों, ट्रांसजेंडर व्यक्तियों और दिव्यांगजनों के लिए क्लाइमेट टिकट के माध्यम से चरणबद्ध तरीके से निःशुल्क सार्वजनिक परिवहन की योजना बनाई गई है, जिसे अंततः सभी नागरिकों के लिए लागू किया जाएगा।

बहन के प्रेम विवाह से नाराज युवक ने जीजा को मारी गोली

एजेंसी

नई दिल्ली। द्वारका सेक्टर-23 इलाके में बहन के प्रेम विवाह से नाराज युवक ने गुस्से में अपने जीजा को गोली मार दी। वारदात के बाद वह फरार हो गया। गंभीर हालत में पीड़ित प्रदीप (25) को इंदिरा गांधी अस्पताल ले जाया गया, जहां उसका इलाज जारी है। पुलिस ने हत्या के प्रयास का मामला दर्ज कर दो आरोपितों गांव जगन्नाथपुर, गुन्नौर (संभल), उप्र निवासी जीतू (22) (साला) और दिल्ली निवासी उसके दोस्त नवनीत कोहकन (20) के रूप में हुई है। दोनों के पास से वारदात में इस्तेमाल पिस्टल भी बरामद कर ली गई है। पुलिस पकड़े गए दोनों आरोपितों से पूछताछ कर मामले की छानबीन कर रही है। द्वारका जिले के डीसीपी अंकित सिंह ने बताया कि 14 जनवरी को सेक्टर-23 में एक युवक को गोली मारे जाने की सूचना मिली। पुलिस टीम मौके पर पहुंची तो पता चला कि घायल को अस्पताल ले जाया जा चुका है। पुलिस अस्पताल पहुंची और पीड़ित प्रदीप का बयान लिया। पीड़ित ने बताया कि उसे गोली उसके साले जीतू व अन्य लोगों ने मारी है। जानकारी जुटाने के बाद पुलिस ने पहले जीतू को गिरफ्तार किया। उसके पास से पिस्टल बरामद हुई। पूछताछ के दौरान उसने बताया कि उसकी बहन ने प्रदीप से प्रेम विवाह कर लिया। यह उसे पसंद नहीं था। उसने जीजा की हत्या करने की योजना बनाई। दोस्त नवनीत को वारदात में साथ देने के लिए तैयार किया और हमला कर दिया।

रोड शो करते हुए पंजाब के मुख्यमंत्री

एजेंसी

नई दिल्ली। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने दिल्ली के नरेला, तिमारपुर और बुराड़ी विधानसभा में आम आदमी पार्टी के प्रत्याशियों के समर्थन में रोड शो किया। इस दौरान भगवंत मान ने कहा कि दिल्ली की जनता एक बार फिर बिजली, पानी और शिक्षा की बात करने वाले अरविंद केजरीवाल को चुनेगी। भाजपा और कांग्रेस वालों से मिलने के बाद लोग अपनी उंगलियां देखते हैं कि कहीं वो गायब तो नहीं कर दी।

उन्होंने कहा कि दिल्ली में चारों तरफ लोग कह रहे हैं कि पांच फरवरी को झाड़ू से सफाई करेंगे और फिर केजरीवाल को लाएंगे। आम आदमी पार्टी का किसी से मुकाबला नहीं है। भाजपा के पास कोई एजेंडा नहीं है और कांग्रेस लगातार दो बार से जीरो पर है। भगवंत मान ने आगे कहा कि मैं पंजाब से आपसे कहने आया हूं कि 5 फरवरी को आप झाड़ू के निशान पर बटन दबाइए और अपने अच्छे भविष्य के लिए एक बार फिर आम आदमी पार्टी की सरकार बनाइए। जब आप झाड़ू का बटन दबा दोगे तो उसके बाद से आपकी जिम्मेदारी खत्म और हमारी जिम्मेदारी शुरू हो जाएगी।

भाजपा की ऐतिहासिक हार होने वाली है : केजरीवाल

एजेंसी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली में भाजपा की ऐतिहासिक हार होने वाली है। केजरीवाल ने आरोप लगाते हुए कहा कि भाजपा के प्रत्याशी शांतिपूर्ण तरीके से चुनाव नहीं जीत सकते, इसलिए अब वो हिंसा का सहारा ले रहे हैं। कालकाजी विधानसभा समेत पूरी दिल्ली में भाजपा झगड़े करने पर उतर आई है। केजरीवाल का आरोप है कि भाजपा हमारी सभाओं को बाधित करने की कोशिश कर रही है। मुख्यमंत्री आतिशी ने भी कालकाजी विधानसभा में आआपा कार्यकर्ताओं को डरा-धमका रहे भाजपा के कई लोगों का नाम लिया है। उन्हें चुनाव तक गिरफ्तार करके रखा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने पूरी कमान संभाल ली है और दिल्ली पुलिस को कानून-व्यवस्था से हटाकर

भाजपा के चुनाव प्रचार में लगा दिया है। अरविंद केजरीवाल ने मुख्यमंत्री आतिशी के साथ संयुक्त प्रेसवार्ता की। इस दौरान वरिष्ठ नेता व कैबिनेट मंत्री सौरभ भारद्वाज भी मौजूद रहे। आरोप लगाते हुए केजरीवाल ने कहा कि यह बेहद चिंताजनक है कि भाजपा हिंसा फैला रही है। भाजपा के लोग सिर्फ कालकाजी विधानसभा तक सीमित नहीं हैं बल्कि नई दिल्ली, राजेंद्र नगर समेत पूरी दिल्ली के अंदर देखी जा रही है। हर जगह से शिकायतें आ रही हैं कि भाजपा मारपीट पर उतर आई है। मुख्यमंत्री आतिशी ने कहा कि जबसे रमेश बिधूड़ी भाजपा से कालकाजी विधानसभा से चुनाव लड़ रहे हैं, लगातार भाजपा द्वारा कालकाजी विधानसभा क्षेत्र में दशहत का माहौल बनाया जा रहा है। विधानसभा के हर इलाके में भाजपा के कार्यकर्ता और खुद को रमेश बिधूड़ी के भतीजे बताने वाले लोग आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं को डरा-धमका रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज इन सारे मुद्दों को लेकर हमने चुनाव आयोग से शिकायत की है।

केजरीवाल धोखेबाज हैं, दिल्ली की जनता बनाएगी भाजपा की सरकार -वीरेंद्र सचदेवा

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा चुनाव 2025 को लेकर पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल रोजाना कुछ न कुछ घोषणा कर रहे हैं। अब मिडिल क्लास को लेकर उन्होंने केंद्र सरकार से मांग की है कि अगला बजट मिडिल क्लास को समर्पित होना चाहिए। केजरीवाल ने केंद्र के सामने अपनी सात मांगें भी रखी हैं। केजरीवाल के इन मांगों पर दिल्ली भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि केजरीवाल ने दिल्ली के हर वर्ग को धोखा दिया है। ऑटो चालकों, कैब चालकों और दिल्ली की पूरी जनता को धोखा दिया है। हमें इस धोखेबाज से कोई उम्मीद नहीं है। दिल्ली की जनता इस धोखेबाज से मुक्ति चाहती है। आम आदमी पार्टी जाएगी और भाजपा आएगी।कांग्रेस नेता अजय माकन के बयान पर उन्होंने कहा कि अरविंद केजरीवाल ने न केवल स्वास्थ्य क्षेत्र में, बल्कि शिक्षा और विकास के क्षेत्र में भी भ्रष्टाचार किया है। उनकी सरकार घोटालों और भ्रष्टाचार की सरकार है, एक या दो नहीं बल्कि अनेक घोटाले हुए हैं। प्रधानमंत्री मोदी के कार्यक्रम 'मेरा बूथ सबसे मजबूत'

कार्यक्रम में शामिल होने के बाद भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि आज प्रधानमंत्री के संदेश ने सभी कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाया है। उन्होंने सभी से मतदान के सारे रिकॉर्ड तोड़ने और बूथ पर 50 फीसद से अधिक वोटों से जिताने का आग्रह किया। हमारा संदेश स्पष्ट है, बूथ जीतो, चुनाव जीतो। प्रधानमंत्री ने एक पत्र का भी जिक्र किया, जो खुशखबरी लेकर आएगा। राहुल गांधी की चुनावी सभा को लेकर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि मैं उनको शुभकामनाएं देता हूं। अरविंद केजरीवाल के साथ जो नूरा कुश्ती लड़ रहे हैं, वह बताएं कि दिल्ली में कितनी सीटों का बंटवारा हुआ है।

NAME CHANGE
I, JYOTI BALA W/O VIKAS BHARDWAJ R/O 605, SIDHI VINAYAK APARTMENT, SECTOR-55, GURGAON, HARYANA-122011, HAVE CHANGED MY NAME TO JYOTI GUPTA FOR ALL FUTURE PURPOSE

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I Khiyati Verma D/O Late Prashant Verma,W/O Yeshwant Kaushik R/O RZ-2063 A, gali no. 27, Tughlakabad Extn., Kalkaji, PO: Kalkaji, DIST: South Delhi, Delhi-110019, declare that name of mine has been wrongly written as Khiyati Kaushik in my marriage certificate no 90730000207804.The actual name of mine is Khiyati Verma,which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, JC-708125Y Rank-NB SUB Name-GIRI VINAYAK GURUDAS S/o GURUDAS V GIRI Presently residing at VPO-TUDIYE, TEH-CHANDGAD, DIST-KOLHAPUR, MAHARASHTRA-416507 have changed my mother's name from YUMUNA to YAMUBAI GURUDAS GIRI for all future purposes vide Affidavit dated 23/01/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, JC-704495F Rank-SUB/BTA Name-LABADE BALU ANANDA residing at VILL-KHALI, PO-ZAREKATHI, TEHSIL-SANGAMNER, DIST-AHMEDNAGAR, MAHARASHTRA-413714, have changed my daughter's name from SHRAVANI to SHRAVANI BALU LABADE for all future purposes vide Affidavit dated 23/01/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, SADASHIV Father of No-16113525A Rank-HAV Name-PRAKASH KADAM Presently residing at VPO-ADI, TEHCHIKODI, DIST-BELGAUM, KARNATAKA-591215, have changed my name from SADASHIV to SADASHIV DHONDIBA KADAM for all future purposes and in my son's service records my date of birth wrongly mentioned as 01/07/1953 instead of my correct date of birth as 01/01/1953 vide Affidavit dated 23/01/2025 before Notary Public, Delhi.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, Horil Shah S/o Raja Sah R/o S-175/42A, Rang Puri Pahari Nala Camp, Mahipalpur, Malik Pur Kohi alias Rang Puri, South West Delhi, Delhi-110037 declare that name of mine and my father has been wrongly written as Horil and Rajender Shah in my Driving Licence No-DL01 20080113126 and name of mine has been wrongly written as Horil in my Driver's Badge No-P121400055. The actual name of mine and my father are Horil Shah and Raja Sah.

PUBLIC NOTICE
It is for the information of general public that my client Sh. Shiv Kumar S/O Sh. Babu Lal and Smt. Pushpa Rani W/O Sh. Shiv Kumar, both R/o 3863, Katra Beri wala Churi Walan, Delhi, G.P.O. North Delhi, G.P.O., Delhi-110006, debarred their son Sh. Anshul Koli S/O Sh. Shiv Kumar, 34 years, and daughter-in-law Smt. Prabha W/O Sh. Anshul about 29 years old, both R/o 3863, Katra Beri wala Churi Walan, Delhi, G.P.O. North Delhi, G.P.O., Delhi-110006 from all movable and immovable properties and broken all relations due to their misconduct and ill behaviour. Anybody deals with them shall be responsible themselves.

Rehmat Ali Advocate
T-1A, Tehsil Lane, Tis Hazari Courts, Delhi

PUBLIC NOTICE
It is for general information that 1. RAGHUBAR DATT JOSHI, S/O SH. URBA DATT JOSHI R/o C-1/65, STREET NO.1, BLOCK-C, DAYALPUR, DELHI-110094 declare that name of mine and my father has been wrongly written as RAGHUBAR DATT and URBA DATT respectively in my 10% class educational documents and name of mine has also been wrongly written in English as RAGHUBAR DUTTA JOSHI in my Degree of bachelor of Arts. The actual name of mine and my father are RAGHUBAR DATT JOSHI and URBA DATT JOSHI respectively, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I NASIM PERVEIZ W/O TAHIR HASAN R/O Q-7 1ST FLOOR BATLA HOUSE OKHLA JAMIA NAGAR NEW FRIENDS COLONY DELHI-110025 I HAVE CHANGED MY NAME TO NASEEM PARVEZ

PUBLIC NOTICE
It is general information that I, ANISHA RAI D/O BIRENDER RAI R/O H. No. H-42, Ground Floor, Subhash Market, Near PNB Bank, Kotla Mubarakpur, Lodhi Road, New Delhi-110003 declare that name of mine has been wrongly written as ANISHA in my 10th and 12th Educational Documents. The actual name of mine is ANISHA RAI which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I hitherto known as Monu alias Harish S/O Mahesh Kumar R/O HOUSE NO. 8145/3, GALI NO 7 MULTANI DHANDA PAHAD GANJ Central Delhi, Delhi-110055, have changed my name and shall hereafter be known as Harish.

NAME CHANGE
It is for general information that I, Charvi Aggarwal D/O Harendra Kumar Aggarwal R/O Flat no-8D, Upper Ground floor, Hinaya Green, Bandh Road, Second Avenue Chandan Hola South Delhi – 110074, declare that name of mine has been wrongly written as Charvi in my passport (K8076726). The actual name of mine is Charvi Aggarwal. which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, JAYASHREE Mother of No-16113525A Rank-HAV Name-PRAKASH KADAM Presently residing at VPO-ADI, TEH-CHIKODI, DIST-BELGAUM, KARNATAKA-591215, have changed my name from JAYASHREE to JAYASHRI SADASHIV KADAM for all future purposes and in my son's service records my date of birth wrongly mentioned as 09/07/1959 instead of my correct date of birth as 01/01/1957 vide Affidavit dated 23/01/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I MEERA D/O RAJESH VERMA R/O 715/2 SUNARON WALI GALI AGGARSAIN CHOWK OLD FARIDABAD SECTOR-12 FARIDABAD HARYANA 121002 I HAVE CHANGED NAME TO MEERA VERMA

NAME CHANGE
I, Prerna Shailesh Arora W/o Sh. Yuvraj Brara R/o B-8/11, Ground Floor, Vasant Vihar-1, Vasant Vihar, New Delhi-110057, have changed my name after marriage from Prerna Shailesh Arora to Prerna Arora Brara for all future purposes.

NAME CHANGE
I HEENA NAZ W/O JAKIR ALI R/O RZ-3138 GALI NO-35 TUGHLAKABAD EXTENSION KALKA JI SOUTH DELHI 110019I HAVE CHANGED NAME TO HEENA NAAZ.

NAME CHANGE
I MOHAMMAD IKBAL D/O RAJESH VERMA R/O 715/2 SUNARON WALI GALI AGGARSAIN CHOWK OLD FARIDABAD SECTOR-12 FARIDABAD HARYANA 121002 I HAVE CHANGED NAME TO MD IQBAL

NAME CHANGE
I, Tayab Sohail Siddiky S/o Sohailuddin R/o House no-78 second floor,C/12 block, Yamuna vihar, North West Delhi -110053 have changed my name from Tayab Sohail Siddiky to Tayyab Sohail Siddiqui for all future purposes.

NAME CHANGE
I, hitherto known as SHYAM S/o VED-PRAKASH residing at House No. - B-54, 20 Futa Road, Budh Vihar, Mandoli, Nand Nagri, North East Delhi, Delhi -110093 have changed my name and shall hereafter be known as RAJ.

सार्वजनिक सूचना
मेरे मुवक्किल श्री जितेन्द्र भाटी ने मुझे आपके दैनिक समाचार पत्र में प्रकाशित सार्वजनिक नोटिस प्राप्त करने का निर्देश दिया है । आम जनता को यह जानकारी दी जाती है कि हमारी ग्राहक आम जनता को सूचित किया जाता है कि हमारे मुवक्किल श्रीमती ओमवती पत्नी श्री सोम प्रकाश शर्मा, फ्रीहोल्ड आवासीय प्लॉट संख्या 40, एवं नगर निगम संख्या 103, क्षेत्रफल 313 वर्ग गज यानि 261.70 वर्ग मीटर की मालिक हैं, जो कि आनंद विहार कॉलोनी में हदबस्त गांव नासरपुर, नगर निगम गाजियाबाद, तहसील एवं जिला गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश के अंतर्गत स्थित है। यह बिक्री विलेख दिनांक 06.09.2005 के अनुसार दस्तावेज संख्या 5606, पुस्तक संख्या 1, खंड संख्या 6183, पृष्ठ संख्या 1-56 पर, दिनांक 06.09.2005 को एसआर- I, गाजियाबाद में पंजीकृत हुआ। नीचे उल्लिखित दस्तावेजों की श्रृंखला में निम्नलिखित दस्तावेज उपलब्ध नहीं हैं अर्थात (1) मूल बिक्री विलेख (हस्तलिखित) दिनांक 10.04.1985, (2) मूल बिक्री विलेख (हस्तलिखित) दिनांक 02.03.1988, (3) मूल बिक्री विलेख (हस्तलिखित) दिनांक 15.03.1988, (4) मूल बिक्री विलेख दिनांक 14.01.1992, (5) मूल बिक्री विलेख दिनांक 14.01.1992, (6) मूल बिक्री विलेख दिनांक 14.01.1992 और (7) मूल बिक्री विलेख दिनांक 21.08.1997 हमारे ग्राहक यह घोषणा कर रहे हैं कि किसी अन्य व्यक्ति का उक्त संपत्ति पर कोई अधिकार नहीं है, और यह संपत्ति श्री जितेंद्र भाटी के नाम से बिकने जा रही है, जिसका वित्तपोषण टाटा कैपिटल हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड शाखाः प्रीत विहार, दिल्ली द्वारा किया जाना है।
यदि किसी भी व्यक्ति को उक्त संपत्ति में अधिकार@स्वामित्व या हित के संबंध में कोई आपत्ति या दावा है तो इस नोटिस के प्रकाशन की तारीख से 07 दिनों के भीतर हमसे संपर्क करें या उसी को संपर्क करें। यदि किसी को मिला तो अधोहस्ताक्षरित। इसके बाद किसी भी दावे पर विचार नहीं किया जाएगा

[NAVEEN KUMAR VERMA]
Advocate
1/566-A, Ground Floor, Sector-1, Vaishali, Ghaziabad, Uttar Pradesh-201010.
(Contact at 09958871432)

NAME CHANGE
I, No-17003081P, Rank-HAV(SKT), Name-SOHAN LAL Residing at 68, MADHAWAN PANA, KALWA, JIND, HARYANA-126113 have changed my mother's name from ROSHNI to ROSHANI for all future purposes and in my service records my mother's date of birth wrongly mentioned as 01/07/1959 instead of her correct date of birth as 01/01/1953 vide Affidavit dated 23/01/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, SABANA KHATOON W/o RUSTAM ALI R/o S-313/176, EAST MEHRAM NAGAR, DELHI CANTT, SOUTH WEST DELHI, DELHI-110010, have changed my name from SABANA KHATOON to SHABANA BEGUM for all future purposes.

NAME CHANGE
I, TASKIN BEGAM W/O ACHCHAN KHAN R/O 93/33, 33 FEET MAIN ROAD KABIR NAGAR GOKAL PUR DELHI-110094 have changed my name to TASKEEN BEGUM for all future purpose.

NAME CHANGE
I, No-15217006N Rank-NK(CC) Name-BHAGWAN SINGH SISODEYAA Residing at MAHUA, RAJGARH, MADHYA PRADESH-465685 have changed my minor daughter's name from PRIYANKA to PRIYANKA SISODIYA for all future purposes vide Affidavit dated 23/01/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
It is for general information that I, SUNIL KUMAR BHADORIA S/o MAHESH SINGH BHADORIA R/o H.No. US 249, Uttari School Block, Mandawali Fazalpur, East Delhi, Delhi-110092, declare that name of my wife has been wrongly written as PUNAM BHADORIA in my minor son ADITYA KUMAR BHADORIA aged 13 years in his School Record, and also name of my wife has been wrongly written as PUNAM BADHORIA in his Birth Registration Certificate No. MCDOLIR-2111-004953757. The actual name of my wife is PUNAM CHAUHAN.

सार्वजनिक सूचना
यह सूचित किया जाता है कि श्रीमती अनुज पचीसिया, सम्पूर्ण भूतल (पूरे बेसमेंट को खुदाई करने, निर्माण करने और कब्जा करने के अधिकारों के साथ) की संपत्ति, संख्या E-35, क्षेत्र 300 वर्ग गज पूर्व कैलाश, नई दिल्ली में में स्थित है, को (1) श्री प्रदीप कुमार मल्होत्रा (2) श्री प्रमोद कुमार मल्होत्रा (3) श्रीमती नीलम कोटरा (4) श्रीमती कविता मल्होत्रा (5) श्री वैभव मल्होत्रा की और से (GPA Holder) श्रीमती कविता मल्होत्रा के माध्यम से खरीदने का इरादा रखती हैं। यह संपत्ति मूल रूप से श्रीमती सुदर्शन मल्होत्रा की संपत्ति थी, जिन्होंने इसे POI से DD के माध्यम से 09.04.2001 को Conveyance Deed के तहत खरीदी थी। इसके बाद श्रीमती सुदर्शन मल्होत्रा का निधन हो गया और उनके कानूनी उत्तराधिकारी श्रीमती नीलम कोटरा, श्री प्रदीप कुमार मल्होत्रा, श्री प्रमोद कुमार मल्होत्रा और श्री सुनील मल्होत्रा थे। बाद में श्री सुनील मल्होत्रा का भी निधन हो गया, और उनके कानूनी उत्तराधिकारी श्रीमती कविता मल्होत्रा, श्रीमती श्रद्धा मल्होत्रा और श्री वैभव मल्होत्रा थे। श्रीमती श्रद्धा मल्होत्रा ने बाद में अपने हिस्से को श्रीमती कविता मल्होत्रा और श्री वैभव मल्होत्रा के पक्ष में 05.09.2022 के Relinquishment Deed (त्याग विलेख) और 20.02.2024 के Rectification Deed के माध्यम से रिलीज़ कर दिया। इसके बाद इन सब का नाम MCD रिकॉर्ड्स में म्युटेट हो गया, जैसा कि Mutation Letter 08.03.2024 में है। इसके बाद, श्री वैभव मल्होत्रा ने 03.01.2025 को एक पावर ऑफ अटॉर्नी डीड के माध्यम से श्रीमती कविता मल्होत्रा को अपनी जनरल पावर ऑफ अटॉर्नी धारक (GPA Holder) नियुक्त किया। यह संपत्ति RBL बैंक, शाखा गुड़गांव द्वारा वित्तपोषित किया जा रहा है।
यदि किसी व्यक्ति को संबंधित संपत्ति के संबंध में कोई आपत्ति हो, तो कृपया नोटिस की तिथि से 07 दिनों के भीतर अपनी आपत्ति लिखित रूप में प्रस्तुत करें। उक्त आपत्ति को पंजीकृत डाक के माध्यम से निम्नलिखित पते पर और ई-मेल के माध्यम से भेजा जा सकता है। यदि ऐसा नहीं किया जाता है, तो उपर्युक्त के अनुसार दावा को संबंधित संपत्ति के संबंध में शून्य और अमान्य माना जाएगा।

आपका विश्वासी,
[अश्वनी कुमार] वकील
चैंबर नंबर 122, तहसील कंपाउंड, गाजियाबाद, यूपी
kumar2021ashvani@gmail.com

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, Mohammad Majid Siddiqui S/o Mohd. Noor Alam R/o S4-1/2, Sarvodya Camp, Kalkaji, New Delhi-110019 declare that name of my father and my mother has been wrongly written as Nooralam and Rehmati Khatoon in my Passport No-M9789882. The actual name of my father and my mother are Mohd. Noor Alam and Rahmati Khatoon for all future purposes.

PUBLIC NOTICE
NOTICE is hereby given to public at large that my client Mrs. Anita Devi is the owner of Plot No. B 30 admeasuring 171.66 sq. yrds. out of Khasra no. 320 situated at Pradhan Enclave Ilachipur Loni, Ghaziabad by the virtue of Sale Deed dated 01.07.2013 as doc no. 29210 and Intend to mortgage the said property with Aditya Birla Finance Limited . If any person(s) has/have any objection(s) or claim(s) with respect to the right, title or interest in the said property may please contact us within 07 days from the date of this notice on the number & address mentioned herein below, failing which my client(s) shall not be held responsible in any manner whatsoever.

Khaitan & Khaitan
A-38 Kailash Colony,
New Delhi-110048,
Contact no.- 49774545

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I Mukesh Kumar Baghel S/O: Phool Singh,R/O G-BLOCK, 361, J J COLONY, SHAKUR PUR, Saraswati Vihar, Saraswati Vihar, North West Delhi, Delhi-110034,declare that name of mine,my wife and my minor daughter has been wrongly written as Mukesh Kumar,Rajwati and Yashika in my minor daughter namely Yashika Baghel aged 14 years in her School records.The actual name of mine,my wife and my minor daughter are Mukesh Kumar Baghel,Rajwati Baghel,and Yashika Baghel,which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, Savita alias Savita Verma W/O Ashwani Verma R/O K-1/157, Block K-1, Near Vaishno Mandir , Mohan Garden,D.K.Mohan Garden , West Delhi, Delhi -110059, have changed my name and shall hereafter be known as Savita Verma.

NAME CHANGE
I, Deepak S/O Swaran Singh R/O I-3/16, First floor , Sector -16 Rohini Delhi , Rohini Sector-15, North West Delhi, Delhi -110089, have changed the name of my minor daughter namely Dishita alias Dishita Choudhary aged 13 years and she shall hereafter be known as Dishita Choudhary.

NAME CHANGE
I, Monu alias Ajit Singh S/O Satender Singh R/O 52/44-F5, Gali No -17,Nai Basti Anand Parbat Near Choudhary Seeet Corner, Anand Parbat PO: Karol Bagh , Dist: Central Delhi , Delhi -110005, have changed my name and shall hereafter be known as Ajit Singh.

सार्वजनिक सूचना
निवासी गांव कनाहरवास, पोस्ट ऑफिस-कोसली, जिला रेवाड़ी, हरियाणा सूचित करता हूं कि मेरे पिता श्री पहलाद सिंह का देहांत 31 जनवरी 2002 को हो गया था। उनकी मृत्यु के बाद उनके कानूनी उत्तराधिकारी निम्नानुसार हैं–
(क) श्रीमती शकुंतला देवी पत्नी
(ख) सुमन यादव पुत्री
(ग) अनिल यादव पुत्र
(घ) अरुण यादव पुत्र
2. आम जनता को सूचित किया जाता है कि इन बताए गए वारिसों के अलावा कोई अन्य कानूनी वारिस नहीं है। यदि किसी को इन वारिसों के सम्बन्ध में कोई आपत्ति हो तो 30 दिन के अन्दर नगर परिषद रेवाडी में सम्पर्क करें।

आवेदक **अरुण यादव**

NAME CHANGE
I, No-15217006N Rank-NK(CC) Name-BHAGWAN SINGH SISODEYAA Residing at MAHUA, RAJGARH, MADHYA PRADESH-465685 have changed my minor son's name from ISHWAR SINGH to ISHWAR SINGH SISODEYAA for all future purposes vide Affidavit dated 23/01/2025 before Notary Public, Delhi.

PUBLIC NOTICE
This is to inform general public at large that our client who has approached **M/s Varthana Home Finance Ltd.** to borrow Loan Against Property in respect of Residential Land Area Measuring **3013 Sq. Mtrs. Having Khata No. 578, Khasra No. 559, Area 0.2527 Hect. and Khasra No. 561KH Area 0.0822 Hect., i.e. total 3013 Sq. Mtrs.,** Situated at Village Dhauladi, Pargana Baghara, Tehsil & Distt. Muzaffarnagar, U.P. At present this propoerty is in the name of **1.) Mrs. Ajeta** W/o Mr. Dheeraj Pal and **2.) Mrs. Suman** W/o Mr. Ranpal who were gifted this property vide Gift Deed Dated 27.01.2024 executed by **Mr. Virendra Singh** S/o Mr. Lakhi Singh.
It is to mention that the Original Gift Deed Dated 27.01.2024 executed by **Mr. Virendra Singh** S/o Mr. Lakhi Singh in favour of **1.) Mrs. Ajeta** W/o Mr. Dheeraj Pal and **2.) Mrs. Suman** W/o Mr. Ranpal in respect of Residential Land Area Measuring **3013 Sq. Mtrs. Having Khata No. 578, Khasra No. 559, Area 0.2527 Hect. and Khasra No. 561KH Area 0.0822 Hect., i.e. total 3013 Sq. Mtrs.,** Situated at Village Dhauladi, Pargana Baghara, Tehsil & Distt. Muzaffarnagar, U.P. Regd. As Doc No. 1585, Book 1, Volume No. 14131, Pages 259/274, SR-Sadar-1, Muzaffarnagar, is lost by **Mrs. Ajeta** W/o Mr. Dheeraj Pal and **Mrs. Suman** W/o Mr. Ranpal.
And the said property is going to be mortgaged in **M/s. Varthana Finance Pvt. Ltd, Unit No-3 Ground Floor, Pearls Omaxe Tower, Plot B-Netaji Subhash Place, Pitam Pura Delhi-110034.**
All persons, if any, including bank, financial institutions, or any party/ies having any claim (Objection to Khasra Number), demand, right, interest in respect of or against the said property or any part thereof by way of inheritance, assignment, mortgage, charge, possession, lien or otherwise, are hereby required to make the same known in writing within 7 days with the documentary evidence from the date of publication, falling which the said claim of the person/s, if any will be considered waived and settled.

Ms. Rani Shilpee (Advocate)
Office Add: H. No. T/181, UGF, Shukar Bazaar, Uttam Nagar, New Delhi-110059

NAME CHANGE
I, Keshav S/O Dinesh Kumar R/O House No- A 5,Gali No -1, Shiv Puri Colony , Samay Pur , North West Delhi , Delhi -110042, have changed my name and shall hereafter be known as Keshav Kumar.

NAME CHANGE
I, Ashwani Kumar S/O Ram Govind Munjal R/O -18 Doctors Apartments Vasundhara Enclave S. O. East Delhi , Delhi -110096, have changed my name and shall hereafter be known as Ashwani Kumar Munjal.

सार्वजनिक सूचना
मेरे मुवक्किल हेमन्ता मुखोपाध्याय पुत्र स्व0 संकटा मुखोपाध्याय निवासी मकान नं0 F-1148, प्रथम तल, चितरंजन पार्क, कालकाजी, नई दिल्ली-110019, का नाम जैसे हेमन्ता मुखोपाध्याय, एवं हेमन्ता मुखर्जी तथा हेमन्त मुखर्जी कागजातों में उल्लखित किया गया है, जो कि सही नाम हेमन्ता मुखोपाध्याय हैं।
उपरोक्त तीनों नाम एक ही व्यक्ति के नाम हैं जो कि उचित एवं सही है।

SUDARSHAN NAYAK &
DEBASHSH BHAUMIK
Advocates
Ch.No.182, Lawyers Chambers Complex, Saket Courts, New Delhi

NAME CHANGE
I, DROPDI W/O RAJAT KUMAR BHARTI R/O C1-315, NEW YADAV ENCLAVE, PREM NAGAR-3, KIRARI SULEMAN NAGAR, NORTH WEST DELHI- 110086 have changed the name of my minor son SHISHIR BHARTI alias DEEPAK KUMAR aged 14 year and he shall hereafter be known as SHISHIR BHARTI.

PUBLIC NOTICE
My clients Ranjeet Singh S/o Late Jagat Singh and Gurbachan Kaur W/o Sh. Ranjeet Singh both R/o Khasra No. 495, Ground Floor, Gurunanak Sadan, Gurudwdara Sector-A, Pocket-A, Vasant Kunj, New Delhi-110070, have disowned and debarred our son Sukhdev Singh and his wife Jaswant Kaur and grand childrens from their all movable, immovable properties and have no relation with them in future. My client and other family members shall not responsible for their any Civil and Criminal Act and Deeds. Our son and his wife changed their religion from Hindu to Christian.

Yudhister Singh, ADVOCATE
CH.NO.521,
SAKET COURTS NEW DELHI-17

अभियुक्त व्यक्ति की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा
धारा 82 Cr.P.C. देखिए

मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि अभियुक्त **संजय कुमार, पुत्रः सुखबीर, पताः गांव कनावली, अमरपाली स्कूल के पास, हिंडन नगर, इंद्रापुरम, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश** ने **FIR No. 385/2020, U/s 498A IPC, पुलिस थाना मधु विहार, दिल्ली** के अधीन दंडनीय अपराध किया है (या संदेह है कि उसने किया है) और उस पर जारी किये गए गिरफ्तारी के वारंट को यह लिख कर लौटा दिया गया है कि उक्त **संजय कुमार** मिल नहीं रहा है और मुझे समाधानप्रद रूप में दर्षित कर दिया गया है कि उक्त **संजय कुमार** फरार हो गया है (या उक्त वारंट कि तामील से बचने के लिए अपने आप को छिपा रहा है)।
इसलिए इसके द्वारा उद्घोषणा की जाती है कि **FIR No. 385/2020, U/s 498A IPC, पुलिस थाना मधु विहार, दिल्ली** केअभियुक्त **संजय कुमार** से अपेक्षा की जाती है कि वह इस न्यायालय के समक्ष (या मेरे समक्ष) उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए दिनांक **28.02.2025** को या इससे पहले हाजिर हो।

आदेशानुसार
सुश्री मोक्ष बैंस
न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी, महिला न्यायालय–02
शाहदरा जिला, कमरा नं. 60
कड़कड़डूमा कोर्ट, दिल्ली

DP/931/ED/2025

NANI RESORTS & FLORICULTURE PVT. LTD.
Corp. Off.: ROF Group, Building No. 80, First Floor, Sector-44, Gurgaon-122003, Ph. 0124-4399399

Applications are invited from general public out for booking of residential apartments in the Affordable Housing Project **"ROF AALYAS" & "ROF AALYAS - II"** being developed by M/s. **NANI RESORTS & FLORICULTURE PVT. LTD.** On first come first serve basis at **Sector 102,** Gurugram, **Haryana (License No. 11 of 2014 dated 10.06.2014) & (License No. 82 of 2018 dated: 06.12.2018)** which have been either surrendered by the applicants or allotment of which has been cancelled by the Developer due non-payment or any other reason in terms of the Haryana Affordable Housing Policy 2013 dated 19.08.2013 (as amended):

Application No.	Carpet Area + Balcony (Sq. Ft.)	Apartment No.
10485, 10694,	435+54.08, 2BHK (TYPE-3)	C-601, D-1101
10030	535.4+61.35, 2BHK (TYPE 2)	B-1407
1831, 1309	645+140, 3BHK (TYPE 11)	M-1408, M-304

* Payable as per payment plan.

The Applications forms containing detailed terms and conditions can be obtained from our office situated at First Floor, Building No. 80, Sector-44, Gurgaon-122003

For **NANI RESORTS & FLORICULTURE PVT. LTD.**
Place: Gurugram (Haryana) Director

जनता की समस्याओं का समाधान करना ही शिविर का मुख्य उद्देश्यः एडीसी

एजेंसी

नारनौल। अतिरिक्त उपायुक्त डॉ आनंद कुमार शर्मा ने आज लघु सचिवालय में लगे समाधान शिविर में आमजन की शिकायतें सुनकर अधिकारियों को समस्याओं का तुरंत समाधान करने के निर्देश दिए। जिला में आज कुल 16 शिकायतें आई। एडीसी ने कहा कि जनता की समस्याओं का त्वरित समाधान करना ही समाधान शिविर के आयोजन का मुख्य उद्देश्य है। उन्होंने कहा कि समाधान शिविर के मामलों में लापरवाही या देरी स्वीकार नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री हरियाणा के निर्देश अनुसार जिला व उपमंडल स्तर पर लग रहे समाधान शिविर लोगों के लिए बेहद कारगर साबित हो रहे हैं। लोग समाधान शिविर में अपनी शिकायत रखकर आसानी से समाधान करवा रहे हैं। इस अवसर पर नगराधीश मंजीत कुमार, डीएसपी सुरेश कुमार के अलावा विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद थे।

न्यू कॉलोनी क्षेत्र में 80 दुकानों के रैंप पर चला पीला पंजा

गुरुग्राम। एनफोर्समेंट टीम ने न्यू कॉलोनी क्षेत्र में अतिक्रमण के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए 80 दुकानों के बाहर बने अवैध रैंप को तोड़ दिया। यह अभियान नोडल अधिकारी आरएस बाट के नेतृत्व में चलाया गया, जिसमें कनिष्ठ अभियंता वरुण वशिष्ठ और हरिओम की टीम ने भाग लिया। नोडल अधिकारी आरएस बाट ने चेतावनी देते हुए कहा कि भविष्य में अगर दोबारा अतिक्रमण किया गया, तो इसे सख्ती से हटाया जाएगा। उन्होंने स्पष्ट किया कि अतिक्रमण को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और इस तरह के अभियान नियमित रूप से जारी रहेंगे। यह कार्रवाई शहर में चल रही अतिक्रमण विरोधी नीति के तहत की गई, जिसमें अवैध निर्माण और सार्वजनिक स्थलों पर किए गए अतिक्रमण को हटाने पर जोर दिया गया है। स्थानीय निवासियों ने इस पहल की सराहना की। अधिकारियों ने क्षेत्रवासियों और व्यापारियों से अपील की है कि वे नियमों का पालन करें और सार्वजनिक संपत्ति पर अतिक्रमण करने से बचें। अतिक्रमण हटाने का यह अभियान पूरे शहर में लगातार जारी है और आगे भी चलता रहेगा।

श्री राम जन्मभूमि मंदिर भारत के गौरव, एकता और संस्कारों का प्रतीक : विधायक मुकेश शर्मा

गुरुग्राम। भगवान श्री राम जन्मभूमि मंदिर में प्रभु श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की प्रथम वर्षगांठ के पावन अवसर पर गुरुग्राम में विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। इस शुभ अवसर पर गुरुग्राम के विधायक मुकेश शर्मा ने विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया और भगवान श्रीराम का आशीर्वाद प्राप्त कर गुरुग्राम की खुशहाली और समृद्धि की प्रार्थना की।

श्रीराम महोत्सव: सेक्टर 45 में भव्य आयोजन

सेक्टर 45, गुरुग्राम में आयोजित श्री राम महोत्सव में विधायक मुकेश शर्मा ने सैकड़ों श्रद्धालुओं के साथ भगवान श्रीराम की आराधना की। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा, 'प्रभु श्री राम जी से मैं समस्त गुरुग्राम वासियों के उज्ज्वल भविष्य, सुख, और समृद्धि की कामना करता हूं। सदियों के संघर्ष और लाखों रामभक्तों के तप एवं बलिदान से निर्मित श्री राम जन्मभूमि मंदिर भारत के गौरव का प्रतीक है। यह केवल एक मंदिर नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत और आस्था का केन्द्र है।' उन्होंने आगे कहा कि श्री राम जन्मभूमि मंदिर भारत के गौरव, एकता और संस्कारों का प्रतीक है। पिछले साल 22 जनवरी का ऐतिहासिक दिन हर रामभक्त के लिए एक अमूल्य क्षण था, जब भगवान श्री रामलला मंदिर में विराजमान हुए थे। इस आयोजन में स्थानीय निवासी, भाजपा कार्यकर्ता, धार्मिक संस्थाओं के पदाधिकारी और बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। सभी ने सामूहिक रूप से प्रभु श्रीराम के चरणों में अपनी आस्था व्यक्त की। शर्मा जी ने सभी सनातन प्रेमियों को इस पवित्र अवसर की बधाई देते हुए भगवान श्रीराम का आशीर्वाद सदैव सभी पर बने रहने की प्रार्थना की।

हकेंवि में संख्यात्मक अनुसंधान कार्यप्रणाली पर केंद्रित कार्यक्रम का हुआ समापन

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के मालवीय मिशन टीचर ट्रेनिंग सेंटर (एमएमटीटीसी) द्वारा संख्यात्मक अनुसंधान कार्यप्रणाली पर केंद्रित अल्पकालिक कार्यक्रम का समापन हो गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न शैक्षणिक और अनुसंधान क्षेत्रों के प्रतिभागियों ने संख्यात्मक अनुसंधान विधियों को जाना-समझा और उनके उपयोग से अवगत हुए। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. टंकेशवर कुमार ने अपने संदेश में कहा कि संख्यात्मक अनुसंधान कार्यप्रणाली पर केंद्रित यह आयोजन प्रतिभागियों को उनके कार्यक्षेत्र में मददगार साबित होगा। कुलपति ने प्रतिभागियों को अनुसंधान के क्षेत्र में नए-नए टूल्स का प्रयोग करने के लिए भी प्रेरित किया।

कार्यक्रम के अंतिम दिन विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के डीन प्रो. फूल सिंह ने प्रतिभागियों को डाटा विश्लेषण की विभिन्न तकनीकों से अवगत कराया। एमएमटीटीसी के निदेशक प्रो. प्रमोद कुमार ने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए। उन्होंने प्रतिभागियों से कार्यक्रम की सामग्री और प्रस्तुति पर महत्वपूर्ण प्रतिक्रिया भी लीं, जिसका उपयोग भविष्य के संस्करणों को और अधिक प्रभावी बनाने में किया जाएगा। उन्होंने कहा कि संख्यात्मक अनुसंधान कार्यप्रणालियों का व्यावहारिक अनुभव और सैद्धांतिक ज्ञान प्रदान करने के उद्देश्य से इसे डिजाइन किया गया। प्रो. प्रमोद कुमार ने कहा कि एमएमटीटीसी शिक्षकों के अनुसंधान कौशल को मजबूत करने के लिए ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन करने के लिए प्रतिबद्ध है।

इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं में गुणवत्ता पर किसी भी प्रकार से नहीं होगा समझौता- नायब सिंह सैनी

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा में सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने और बिजली लागत को कम करने के लिए 290 सरकारी भवनों पर रूफटॉप सोलर पावर प्लांट स्थापित किए जाएंगे। इस परियोजना पर लगभग 36 करोड़ रुपये की लागत आएगी। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की अध्यक्षता में आज यहां हुई उच्चाधिकार प्राप्त क्रय समिति (एचपीपीसी) में इस संबंध में मंजूरी प्रदान की गई है।

उच्चाधिकार प्राप्त क्रय समिति (एचपीपीसी), विभागीय उच्चाधिकार प्राप्त क्रय समिति (डीएचपीपीसी) तथा हाई पॉवर्ड वर्क्स परचेज कमेटी (एचपीडब्ल्यूपीसी) की बैठक में कुल 804 करोड़ रुपये के कॉन्ट्रैक्ट तथा विभिन्न वस्तुओं की खरीद को मंजूरी दी गई। बैठक में विभिन्न बोलीदाताओं से नेगोसिएशन के बाद दरें तय करके लगभग 30 करोड़ रुपये से अधिक की बचत की गई है।

बैठक में कैबिनेट मंत्री विपुल गोयल, रणबीर गंगवा और श्रुति चौधरी उपस्थित रहे। मुख्यमंत्री ने

कहा कि राज्य सरकार द्वारा पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना को तीव्र गति से क्रियान्वित किया जा रहा है। इसका उद्देश्य घरों की छत पर 2 किलोवाट तक का सोलर पैनल लगाकर लोगों को सस्ती बिजली मुहैया कराना है। जितनी उपभोक्ता की आवश्यकता होगी, वो उतनी बिजली उपयोग करेगा तथा शेष बिजली ग्रिड को बेचेगा। इस योजना के तहत केंद्र सरकार 60 हजार रुपये तथा हरियाणा सरकार अपनी तरफ से 50 हजार रुपए की सब्सिडी दे रही है। इसलिए अधिक से अधिक लोग इस योजना का लाभ अवश्य उठाएं।

बंधवाड़ी लैंडफिल साइट से लेगसी वेस्ट का पूर्ण रूप से होगा निस्तारण

बैठक में गुरुग्राम जिला में बंधवाड़ी लैंडफिल साइट पर लिगेसी वेस्ट के पूर्ण रूप से निस्तारण करने के लिए एजेंसी को फाइनल किया गया। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि आगामी 4 माह में बंधवाड़ी से कचरे का पूरी तरह से निस्तारण होना चाहिए। ऐसा न होने पर संबंधित एजेंसी के विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी और जुर्माना लगाया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हरियाणा में सभी शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में सफाई व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। कहीं पर भी कचरे के ढेर नहीं दिखाई दिए जाने चाहिएं।

बैठक में सीवरेज की सफाई व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए सुपर सकर मशीनों की खरीद को भी मंजूरी दी गई। इस पर लगभग 13 करोड़ रुपए की लागत आएगी। इसके अलावा, मुख्यमंत्री ने यह भी निर्देश दिए कि सीवरेज सफाई हेतु एडवांस तकनीक का भी अध्ययन किया जाए। इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं में गुणवत्ता पर किसी भी प्रकार से नहीं होगा समझौता मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स में गुणवत्ता पर किसी भी प्रकार से समझौता नहीं किया जाएगा। हर कार्य की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया जाए। क्वॉलिटी एश्योरेंस अथॉरिटी को भी इसमें जोड़ा जाए ताकि वो प्रोजेक्ट्स की क्वॉलिटी जांच कर सके। प्रत्येक कार्य को समयबद्ध तरीके से पूरा किया जाए। किसी भी प्रकार की लापरवाही को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

सड़क पर वाहन चलाते समय सड़क सुरक्षा नियमों की पालना करना अनिवार्य : विश्राम कुमार मीणा

एजेंसी

नूंह। उपायुक्त एवं अध्यक्ष जिला रैड क्रॉस सोसाइटी नूंह विश्राम कुमार मीणा के कुशल मार्गदर्शन एवं सचिव महेश गुप्ता की देखरेख में जिला रैड क्रॉस सोसाइटी ने आज सडक़ सुरक्षा -जीवन रक्षा एवम फर्स्ट एड ज्ञान देता है जीवन दान विषयों पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन रैड क्रॉस भवन नूंह में किया। जिसमे जिले के विभिन्न गांवों सैकड़ों युवाओं ने भाग लिया। जिला रैड क्रॉस सोसाइटी नूंह के जिला प्रशिक्षण अधिकारी महेश मलिक ने कार्यशाला के दौरान मोटर वाहन संशोधन विधेयक-2019 की विस्तृत जानकारी दी। जिनमें मुख्यतः शराब पीकर या किसी भी प्रकार का मादक पदार्थ लेकर वाहन ना चलाने, नाबालिग से वाहन ना चलवाने, वाहन चलाते समय मोबाइल का प्रयोग न करने, आपातकाल वाहन को तुरंत रास्ता देने, आपातकाल नंबरों के बारे जागरूक किया। उन्होंने बताया कि वाहन चलाते समय चालक के साथ बैठी सवारी को भी हेलमेट, सीट बेल्ट का इस्तेमाल करना चाहिए। वाहन चलाते हुए वाहन निर्धारित लेन में लो-हाई बीम का इस्तेमाल करते हुए चलाएं तथा ओवर स्पीड, ओवरलोड वाहन बिल्कुल न चलाएं।

हरियाणा के मुख्य मार्गों पर ऑटोमेटिक सिस्टम लगाने पर किया जा रहा है अध्ययन : अनिल विज

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के परिवहन मंत्री अनिल विज ने कहा कि हरियाणा के मुख्य मार्गों पर ऑटोमेटिक सिस्टम लगाने पर अध्ययन भी किया जा रहा है जिसके माध्यम से यह पता चल जाएगा कि अमुक गाड़ी सड़क पर चलने के लायक है या नहीं है। इसके अलावा, हरियाणा रोडवेज को बेहतर बनाने के लिए पूरे हरियाणा की कंडम बसों का सर्वे भी करवाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधन डीजल-पेट्रोल अब धीरे-धीरे समाप्ति की ओर है और इस धरती को प्रदूषण से बचाने पर भी हमारा जोर है इसलिए हमारा इलेक्ट्रिक बसों पर भी पूरा बल रहेगा। विज जयपुर में गत दिवस आयोजित ऊर्जा मंत्रियों की बैठक में शिरकत करने के उपरांत वापसी के समय आज नांगल चौधरी में ठहराव के दौरान मीडिया कर्मियों के सवालों का जवाब दे रहे थे। उन्होंने बताया कि जयपुर में ऊर्जा मंत्रियों की बैठक में सोलर ऊर्जा को बढ़ावा देने पर चर्चा और विचार विमर्श किया गया है और आज मैं इस बैठक से वापस आ रहा हूं। मीडिया से बातचीत के दौरान उनसे पूछा गया कि सुरक्षित स्कूल वाहन नियमों का उल्लंघन किया जा रहा है, इस संबंध में उन्होंने कहा कि ÷हाल ही में उनके द्वारा कैथल में एक स्कूल के विरुद्ध कार्रवाई करवाई गई है। इसलिए वे

सभी स्कूल संचालकों से आह्वान करते हैं कि स्कूल वाहन से संबंधित नियम के अनुसार कार्य करें अन्यथा जो मेरे शिकंजे में आ गया मैं उसे नहीं बक्शूंगा। खनन क्षेत्र में ओवरलोड की समस्या को लेकर पूछे गए सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि बिल्कुल यह सही है कि ओवरलोडिंग से सड़के भी टूटती हैं, लोगों की जिंदगी भी जाती है, चोरी भी होती है और भ्रष्टाचार भी होता है। उन्होंने बताया कि अभी हाल ही में दिल्ली में देश के सभी परिवहन मंत्रियों की एक बैठक थी, उसमें एक विचार आया है कि एक गैजेट स्थापित जाएगा जिसके ऊपर वजन आ जाएगा क्योंकि इस तरह की ओवरलोडिंग के मामले को लेकर सभी चिंतित है विज ने बताया कि गत दिनों यह बैठक केंद्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री श्री नितिन गडकरी जी ने ली थी और नितिन गडकरी जी की अपने सब्जेक्ट में पूरी मास्टरी है। इस बैठक के दौरान ओवरलोडिंग का यह मामला आया था और उसके अंदर ऑल इंडिया ट्रांसपोर्ट कारपोरेशन के पदाधिकारी भी शामिल हुए थे। उस दौरान बैठक में मैंने स्वयं ट्रांसपोर्ट कॉरपोरेशन के पदाधिकारियों को कहा कि आपकी इतनी बड़ी एसोसिएशन है तो आप अपने लिए स्वयं नियम निर्धारित करें कि हम ओवरलोडिंग गाड़ी नहीं चलाएंगे, ओवर स्ट्रक्चर्ड गाड़ी को नहीं चलाएंगे और स्टाफ के भी ड्यूटी के घंटे निर्धारित होंगे। क्योंकि एक व्यक्ति सुबह गाड़ी पर बैठता है और 15 से 20 घंटे गाड़ी चलाता है और दुर्घटना होने की पूरी संभावना रहती हैं।

इसलिए ट्रांसपोर्ट कॉरपोरेशन कोई ना कोई सिस्टम खुद बना ले अन्यथा अगर सरकार बनाएगी तो सख्ती से लागू करेगी।

हरियाणा सरकार के 100 दिन पर कार्यक्रम, गौरव गौतम ने दिया विकास कार्यों का ब्यौरा

एजेंसी

पलवल। हरियाणा के खेल राज्यमंत्री गौरव गौतम ने प्रदेश में भाजपा सरकार के 100 दिन पूरे होने की खुशी में पलवल में हो रहे विकास कार्यों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में प्रदेश में अभूतपूर्व विकास हो रहा है, और इस दिन को यादगार बनाने के लिए मुख्यमंत्री कार्यालय के अधिकारी तैयारी में जुटे हैं।

गौरव गौतम ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि 24 जनवरी को प्रदेश सरकार के 100 दिन पूरे हो रहे हैं, जिसके तहत 23 जनवरी को कैबिनेट बैठक में कई अहम घोषणाओं पर मुहर लगेगी और अगले दिन यानी 24 जनवरी को आठ बड़ी परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास होगा। पलवल में भी इन 100 दिनों के दौरान रिकॉर्ड तोड़ विकास कार्य हुए हैं, जो शहर के विकास में अहम योगदान दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि चुनाव के दौरान मैंने पलवल को स्वच्छ और सुंदर बनाने का वादा किया था, जिसे पूरा करने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। पलवल शहर के सौंदर्यीकरण के लिए कई परियोजनाएं चल रही हैं। शहर के अंडरपास और चौक-चौराहों को ऐतिहासिक धरोहरों और महान

व्यक्तियों के चित्रों से सजाया जा रहा है। इसके साथ ही, नई ट्रैक्टर ट्रॉली और जेसीबी जल्द ही खरीदी जाएंगी ताकि सफाई व्यवस्था को और बेहतर बनाया जा सके।उन्होंने कहा कि पलवल में विभिन्न स्थानों पर सेल्फी प्वाइंट भी बनाए जा रहे हैं, जिससे शहर को और आकर्षक बनाया जाएगा। इसके अलावा, शहर में पानी की निकासी के लिए नालों और नालियों का चौड़ीकरण किया जा रहा है। 40 से 50 करोड़ रुपये की लागत से कई विकास कार्य चल रहे हैं, जिनमें सड़कों की मरम्मत, लाइटिंग व्यवस्था और पार्कों के सौंदर्यीकरण के काम शामिल हैं। पलवल में 5 हजार से ज्यादा लाइटों का काम तेजी से चल रहा है, जिसके बाद शहर जगमगाएगा।

इसके अलावा, तिरंगा लाइट्स का भी टेंडर हो चुका है, जिससे शहर की रौनक और बढ़ेगी। उन्होंने यह भी बताया कि शहर के मुख्य चौराहों पर जल्द ही ट्रैफिक लाइट्स लगाए जाएंगे, जिससे ट्रैफिक की समस्या से राहत मिलेगी। शहर के व्यापारी और नागरिक अतिक्रमण हटाने में सहयोग कर रहे हैं, जिससे अब पलवल शहर में जाम की समस्या में कमी आई है।गौरव गौतम ने आगे कहा कि रेल यात्रा की समस्याओं को लेकर हम रेल मंत्री से चर्चा कर चुके हैं और बहुत जल्द यात्रियों को राहत मिलने वाला है।

भाजपा के संकल्प पत्र से दिल्लीवालों रहना सावधानः कुमारी सैलजा

एजेंसी

चंडीगढ़। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की महासचिव, पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं सिरसा की सांसद कुमारी सैलजा ने कहा कि दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा के अध्यक्ष जेपी नड्डा ने संकल्प पत्र (घोषणा पत्र) जारी किया है वह मात्र छलावा है। दिल्ली वालों को भाजपा के संकल्प पत्र से सावधान रहने की जरूरत है क्योंकि भाजपा जो भी घोषणाएं करती है उन्हें पूरा नहीं करती, मतदान के बाद भाजपा जनता से किया गया अपना हर वायदा भूल जाती है। हरियाणा की जनता से भी भाजपा ने चुनाव से पहले वायदे किए थे जो सरकार गठन के चार माह बाद भी पूरे नहीं हुए है। अगर भाजपा दिल्ली वालों को पानी-बिजली निशुल्क जारी रखने की बात करती है तो हरियाणा की जनता की जेब पर क्यों डाका डाल रही है। आज स्थिति ये है कि भाजपा के नेता, उनकी नीति और उनकी नीयत कुछ भी साफ नहीं हैं। मीडिया को जारी बयान में कुमारी सैलजा ने कहा कि भाजपा ने दिल्लीवासियों वायदा किया है कि दिल्ली में जन कल्याण की चल रहीं वर्तमान योजनाएं उनकी सरकार (भाजपा) बनने के बाद भी जारी

रहेंगी। योजनाओं से जुड़ी सुविधाओं को मजबूत और उनमें सुधार किया जाएगा। उनको भ्रष्टाचार मुक्त भी किया जाएगा। भाजपा का संकल्प पत्र तीन चरणों में लागू होगा। भाजपा ने जरूरतमंदों परिवार के बच्चों को केजी से लेकर पीजी की शिक्षा मुफ्त, एससी छात्रों को हर महीने एक हजार रुपये की मदद, ऑटो-टैक्सी वालों के लिए वेलफेयर बोर्ड, युवाओं को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए 15 हजार रुपये की मदद का जनता से वायदा किया है। जबकि भाजपा ने हरियाणा की जनता के बारे में ऐसा कभी नहीं सोचा यानि भाजपा एक ही देश के दो राज्यों की जनता से भेदभाव करती है। भाजपा ने वायदा किया है कि वह दिल्ली में महिला समृद्धि योजना के तहत प्रति महीने महिलाओं को 2500 देगी, चार माह पूर्व हरियाणा की महिलाओं से 2100 रुपये प्रतिमाह देने का वायदा किया था जो अभी पूरा नही हुआ है। कुमारी सैलजा ने कहा कि दिल्ली में गर्भवती महिलाओं को 21000 रुपये देने का वायदा किया था, अच्छी बात है पर हरियाणा की महिलाओं को इस लाभ से क्या वंचित रखा गया। भाजपा ने संकल्प पत्र में पुजारियों-ग्रंथियों को हर महीने 18,000 रुपये की आर्थिक मदद की बात कही गई है, इस प्रकार की मदद के बारे में हरियाणा की महिलाओं की अनदेखी की गई। कुमारी सैलजा ने कहा कि इससे साफ है कि भाजपा जन कल्याण को लेकर कोई घोषणा नहीं करती वह चुनाव में लाभ हासिल करने के लिए ही संकल्प पत्र जारी करती है।

एनकोर्ड तथा नशा मुक्त भारत अभियान को लेकर डीसी ने ली बैठक

एजेंसी

नारनौल। उपायुक्त डा. विवेक भारती ने कहा कि नशा न केवल एक व्यक्ति और परिवार को बर्बाद करता है बल्कि इससे पूरा समाज प्रभावित होता है। इस विषय की गंभीरता को देखते हुए हरियाणा सरकार तथा जिला प्रशासन इसकी रोकथाम के लिए प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रहा है। अधिकारी इस विषय को लेकर इसी प्रकार जागरूकता अभियान चलाए रखें। डीसी आज लघु सचिवालय में एनकोर्ड तथा नशा मुक्त भारत अभियान की मासिक बैठक में अधिकारियों को संबोधित कर रहे थे। इस मौके पर पुलिस अधीक्षक पूजा वशिष्ठ भी मौजूद थी।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी शिक्षण संस्थानों में लगातार नशा के खिलाफ जागरूकता अभियान चलाएं तथा उसकी रिपोर्ट प्रशासन को प्रस्तुत करें। उन्होंने कहा कि नशा से पीड़ितों की पहचान करके उन्हें नशा मुक्ति केंद्र तथा अस्पतालों में पहुंचकर उनकी काउंसलिंग करें। यह भी सुनिश्चित किया जाए की शैक्षिक संस्थानों के 100 मीटर की

परिधि में सिगरेट-बीड़ी की बिक्री ना हो।

उन्होंने कहा कि समिति मादक पदार्थों की तस्करी के बारे में खुफिया जानकारी प्रशासन के साथ साझा करें। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए की जिला में सभी दवा विक्रेताओं की दुकानों पर सीसीटीवी कैमरे लगे हुए होने चाहिए। अगर अभी भी किसी दुकान पर सीसीटीवी कैमरे नहीं है तो उसे 10 दिन का नोटिस दिया जाए। इससे पहले उपायुक्त ने चिन्हित अपराधों को लेकर बनाई जिला स्तरीय कोऑर्डिनेशन कमेटी की बैठक ली। इसके अलावा इस मौके पर गंभीर अपराध तथा महिलाओं के खिलाफ अपराध जैसे मामलों की समीक्षा बैठक भी की। इस मौके पर जेल अधीक्षक संजय बांगड़, कनीना एसडीएम डा. जितेंद्र सिंह, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. धर्मेंद्र सांगवान, जिला न्यायवादी रमणीक यादव के अलावा अन्य अधिकारी भी मौजूद थे।

31 जनवरी तक गांव-गांव जाकर लोगों को बाल विवाह की दी जा रही है जानकारी : सीजेएम नेहा गुप्ता

नूंह। जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण द्वारा लोगों को कानूनी जागरूकता देने के लिए द्वारा बाल विवाह जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। ये कैंप 10 जनवरी से 31 जनवरी तक बाल विवाह को लेकर लोगों को जानकारी दी जा रही है। इस कैंप में एम डीडी ऑफ इंडिया (शक्ति वाहिनी) की टीम भी डालसा के साथ काम कर रही है।आज डालसा नूंह की सीजेएम नेहा गुप्ता ने एडीआर सेंटर में सभी पी एल वी की एक मीटिंग ली जिसमें मतदान और बाल विवाह की सभी पी एल वी ओर पैनल वकीलों की एक शपथ कराई गई। जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण की सचिव नेहा गुप्ता ने बताया कि जिला नूंह में कोई भी व्यक्ति कानून से वंचित न रहे 10 से 31 जनवरी तक लोगों में कानूनी जागरूकता और बाल विवाह की जानकारी देने की लिया शुरू की गई है। इस जानकारी से नूंह जिले से बाल विवाह पर रोक लग सके। इस कैंप में डालसा नूंह से सोनू वर्मा और एम डीडी ऑफ इंडिया (शक्ति वाहिनी) से नरेश, सुमन, कपिल राजोरा के द्वारा बाल विवाह ओर नालसा द्वारा चलाया गया टोल फ्री नंबर 15100 के बारे में भी जानकारी दी जा रही है। नूंह जिले के सभी ब्लॉकों में सरपंच के माध्यम से ये कैंप लगाए जा रहे हैं। एडीआर सेंटर में डालसा में सीजेएम नेहा गुप्ता द्वारा सभी पी एल वी को प्रशासन पत्र देकर सम्मानित किया गया।

डीसी ने किया विभिन्न कार्यालय का औचक निरीक्षण

एजेंसी

नारनौल। उपायुक्त डा. विवेक भारती ने आज स्वच्छ हरियाणा मिशन के तहत विभिन्न कार्यालयों का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने स्वच्छता पर विशेष फोकस रखने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इस अभियान को लेकर मुख्यमंत्री का पूरा फोकस है। ऐसे में इस मामले में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं होगी।

सबसे पहले डीसी ने बीडीपीओ नारनौल के कार्यालय का औचक निरीक्षण किया। इस मौके पर उन्होंने कार्यालय की सभी ब्रांच का बारी-बारी से निरीक्षण किया। उन्होंने 31 जनवरी तक कंडम सामान की सूची बनाकर उसे नियम अनुसार आगामी कार्रवाई के निर्देश दिए।

इसके बाद उन्होंने बस स्टैंड का निरीक्षण किया। यहां पर साफ सफाई के संबंध में कार्य संतोषजनक पाया गया। डीसी ने जीएम रोडवेज अनित यादव को निर्देश दिए कि बस स्टैंड की चार दिवारी पर सफेदी करवाकर सरकार की योजनाओं से संबंधित जानकारियां लिखवाई जाएं। इस मौके पर उन्होंने आम नागरिकों से भी बस स्टैंड पर दी जा रही सुविधाओं के बारे में सवारियों से फीडबैक

लिया। उपायुक्त ने डीआरडीए तथा एडीसी कार्यालय में चल रहे रिनोवेशन के कार्य का भी निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि यहां पर पार्किंग के लिए स्थान निश्चित किया जाए। इसके बाद उन्होंने जिला लाइब्रेरी का निरीक्षण किया। यहां पर विद्यार्थियों से उनकी समस्याओं के बारे में जानकारी ली। डीसी ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि लाइब्रेरी में मौसम के अनुसार पेयजल की व्यवस्था होनी चाहिए। अतिरिक्त नए शौचालय के संबंध में अधिकारियों ने बताया कि जल्द ही नए शौचालय बनाने की कार्रवाई शुरू की जाएगी। उन्होंने सभी विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी अधिकारी अपने कार्यालय में लगातार स्वच्छता अभियान चलाएं।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान के जरिये तेजी से समाज में सकारात्मक बदलाव आया

एजेंसी

गुरुग्राम। महिला एवं बाल विकास विभाग की ओर से जिला परिषद स्वतंत्रता सेनानी सभागार में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान की 10वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में उपायुक्त अजय कुमार बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे। उन्होंने इस अभियान की निरंतर सफलता के लिए शुभकामनाएं देते हुए बेटियों को आगे बढ़ते रहने के लिए प्रेरित किया।

उपायुक्त अजय कुमार ने कहा कि किसी भी क्षेत्र में सफलता काफी संघर्ष के बाद प्राप्त होती है। ऐसे में इस अभियान के जरिए प्राप्त हो रहे सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन की सफलता को बनाये रखने में सभी को साथ देना होगा। इसके लिए निरंतर प्रयास जारी रखने होंगे। उन्होंने कार्यक्रम में मौजूद विद्यार्थियों को शैक्षणिक कीर्तिमान स्थापित करने के लिए प्रेरित किया। उपायुक्त ने बताया कि बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान से उनका दिल से जुड़ाव रहा है।

वर्ष 2015 में इस अभियान की लॉन्चिंग में वह सक्रिय रूप से भागीदार रहे। उन्होंने महसूस किया कि इस अभियान के जरिए तेजी से समाज में सकारात्मक बदलाव आया है। उन्होंने भविष्य में बेटा-बेटी की जन्मदर के बीच व्याप्त वर्तमान अंतर को और कम करने के लिए प्रयास तेज करने की भी बात कही। उपायुक्त ने कहा कि जिला स्तर पर ऐसे क्षेत्रों की पहचान की जाएगी जहां लिंगानुपात जन्म दर अन्तर के प्रति जागरूकता की आवश्यकता है, ऐसे चिन्हित क्षेत्र में प्रयास और बढ़ाए जाएंगे। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली बेटियों व सहयोगी संस्थाओं को उपायुक्त ने सम्मानित किया। स्वतंत्रता सेनानी जिला परिषद हॉल में मौजूद दर्शकों ने बेटियों के सम्मान की शपथ ली।

NAME CHANGE

I, Jaipal Singh S/O Vikram Singh R/O Bapas (266) PO: Pahari , Dist: Gurgaon Haryana - 122502, have changed the name of my minor daughter namely Mahaima aged 15 years and she shall hereafter be known as Durgesh.

NAME CHANGE

I hitherto known as HINA D/O HEM SINGH R/O JHAGROLI (67), DISTT. MAHENDRA-GARH, HARYANA-123034 have changed my name and shall hereafter be known as HINA SINGH SIROWA.

काबरा ज्वेल्स की धांसू लिस्टिंग से खिले निवेशकों के चेहरे, पहले दिन ही दोगुना हुआ पैसा

एजेंसी

नई दिल्ली। गोल्ड और डायमंड की ज्वेलरी बनाने वाली कंपनी काबरा ज्वेल्स ने आज शेयरों की लिस्टिंग के जरिए स्टॉक मार्केट में शानदार शुरुआत की। इस जोरदार शुरुआत के कारण कंपनी के आईपीओ निवेशकों का पैसा पहले दिन ही लगभग दोगुना हो गया। आईपीओ के तहत कंपनी के शेयर 128 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे। आज नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के एसएमई प्लेटफॉर्म पर ये शेयर 90 प्रतिशत प्रीमियम के साथ 243.20 रुपये के स्तर पर लिस्ट हुए। लिस्टिंग के बाद खरीदारों ने इसे हाथों हाथ लिया, जिसकी वजह से थोड़ी ही देर में ये शेयर उछल कर 255.35 रुपये के अपर सर्किट लेवल पर पहुंच गया काबरा ज्वेल्स का 40 करोड़ रुपये का आईपीओ 15 से 17 जनवरी के बीच सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था। इस आईपीओ को निवेशकों की ओर से जोरदार रिस्पॉन्स मिला था, जिसके कारण ये ओवरऑल 356.02 गुना सब्सक्राइब हो गया था। इनमें क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) के लिए रिजर्व पोर्शन 154.53 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इसी तरह नॉन इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स (एनआईआई) के लिए रिजर्व पोर्शन में 556.90 गुना सब्सक्रिप्शन आया था। इसके अलावा रिटेल इन्वेस्टर्स के लिए रिजर्व पोर्शन 384.90 गुना सब्सक्राइब हुआ था।

स्टॉक मार्केट में रिखव सिक्योरिटीज की जोरदार एंट्री, पहले दिन ही डबल हुआ निवेशकों का पैसा

नई दिल्ली। ब्रोकरेज, बैंकिंग सर्विसेज और इन्वेस्टिंग फैसिलिटी मुहैया कराने वाली कंपनी रिखव सिक्योरिटीज के शेयरों की आज स्टॉक मार्केट में जोरदार एंट्री हुई। आईपीओ के तहत कंपनी के शेयर 86 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे। आज बीएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर इसकी लिस्टिंग एसएमई सेगमेंट के लिए तय मैक्सिमम परमीसिबल लिमिट 90 प्रतिशत प्रीमियम के साथ 163.40 रुपये के स्तर पर हुई। लिस्टिंग के बाद खरीदारी के सपोर्ट से इस शेयर में और तेजी आ गई, जिसके कारण थोड़ी ही देर में ये उछल कर 171.57 रुपये के अपर सर्किट लेवल पर पहुंच गया। इस तरह पहले ही दिन कंपनी के आईपीओ निवेशकों का पैसा लगभग डबल हो गया। रिखव सिक्योरिटीज का 71.62 करोड़ रुपये का आईपीओ 15 से 17 जनवरी के बीच सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था। इस आईपीओ को निवेशकों की ओर से जोरदार रिस्पॉन्स मिला था, जिसके कारण ये ओवरऑल 307 गुना सब्सक्राइब हो गया था। इनमें क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) के लिए रिजर्व पोर्शन 170.92 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इसी तरह नॉन इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स (एनआईआई) के लिए रिजर्व पोर्शन में 616.42 गुना सब्सक्रिप्शन आया था। इसके अलावा रिटेल इन्वेस्टर्स के लिए रिजर्व पोर्शन 251.36 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इस आईपीओ के तहत 71.62 करोड़ रुपये के नए शेयर जारी किए गए हैं। इसके अलावा 5 रुपये फेस वैल्यू वाले 20 लाख शेयर ऑफर फॉर सेल विंडो के तहत बेचे गए हैं।

बीपीसीएल का मुनाफा 36.85 प्रतिशत बढ़ा

मुंबई। सरकारी तेल रिफाइनर भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल) ने चालू वित्त वर्ष की दिसंबर 2024 में समाप्त तिमाही में एकल शुद्ध लाभ 4649 करोड़ रुपये रहा है जो पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि के 3397 करोड़ रुपये की तुलना में 36.85 प्रतिशत अधिक है। बीपीसीएल ने निदेशक मंडल की बैठक के बाद आज जारी वित्तीय लेखाजोखा में कहा कि हालांकि दिसंबर 2024 को समाप्त तिमाही के लिए परिचालन राजस्व में 1.86 प्रतिशत की गिरावट आई, जो पिछले साल की समान अवधि में 1,29,946.95 करोड़ की तुलना में कुल 1,27,520.50 करोड़ रहा। कंपनी ने चालू वित्त वर्ष के लिए 5 रुपये प्रति शेयर अंतरिम लाभांश की भी घोषणा की है और लाभांश भुगतान के लिए 29 जनवरी को रिकॉर्ड तिथि निर्धारित की गई है।

एस्सार रिन्यूएबल्स ने महाराष्ट्र सरकार के साथ किया करार

मुंबई। हरित ऊर्जा क्षेत्र की अग्रणी कंपनी एस्सार रिन्यूएबल्स लिमिटेड (ईआरएल) ने महाराष्ट्र सरकार के साथ दो गीगावाट अक्षय ऊर्जा क्षमता विकसित करने के लिए करार किया है। कंपनी ने बयान जारी कर बताया कि ईआरएल) ने महाराष्ट्र सरकार के साथ दावोस में वर्ल्ड इकनॉमिक फोरम (डब्ल्यूईएफ) के दौरान एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। यह समझौता राज्य में एस्सार रिन्यूएबल्स की दो गीगावाट अक्षय ऊर्जा क्षमता विकसित करने और ग्रीन मोबिलिटी को सशक्त बनाने की योजना को आगे बढ़ाता है।कंपनी ने बताया कि इस परियोजना के तहत 8,000 करोड़ रुपये का निवेश किया जाएगा।चौबीसों घंटे चलने वाली अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं का निर्माण, जो इलेक्ट्रिक वाहन ट्रकों के चार्जिंग इकोसिस्टम (ब्लू एनर्जी मोटर्स और ग्रीनलाइन) का समर्थन करेगी। इससे 2000 से अधिक प्रत्यक्ष रोजगार का सृजन होगा। परियोजनाएं वित्तीय वर्ष 2026-27 में शुरू होंगी। एस्सार रिन्यूएबल्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अंकुर कुमार ने कहा, हम महाराष्ट्र सरकार के साथ इस महत्वपूर्ण साझेदारी को लेकर उत्साहित हैं। यह कदम हमारी अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं को नया आयाम देगा और हमें इस क्षेत्र में अग्रणी बनाएगा।

रेड मॉल मामले में जीडीए को मिला दो सौ सत्रह करोड़ अट्ठारह लाख वसूलने के अधिकार

एजेंसी

गाजियाबाद। एनसीएलटी (नेशनल कम्पनी लॉ ट्रिब्यूनल) ने रेड मॉल मामले ऐतिहासिक फैसला सुनाया है। एनसीएलटी ने रेड मॉल के वित्तीय विवाद को सुलझाते हुए प्राधिकरण को वित्तीय ऋणदाता के रूप में मान्यता दी है। इस जीत के साथ ही प्राधिकरण को दो सौ सत्रह करोड़ अट्ठारह लाख रुपये की धनराशि की वसूली का अधिकार मिल गया है। यह धनराशि 28 फरवरी 2022 तक बकाया थी। जीडीए ने इस धनराशि को एनसीएलटी में क्लेम किया था।

माना जा रहा है कि जीडीए द्वारा मजबूत पक्ष रखने के कारण यह ऐतिहासिक जीत मिली है। जीडीए उपाध्यक्ष अतुल वत्स को इस

ऐतिहासिक जीत का श्रेय जा रहा है। क्योंकि उन्होंने समय-समय पर इस मामले में एनसीएलटीसी में अपना पक्ष मजबूत करने के लिए संबंधित अधिकारियों को लगातार प्रेरित किया था। आपको बता दें कि विवादित संपत्ति (खसरा संख्या 352, 353, 354, 355, 358, 371, 372) के स्वामित्व, भुगतान और परियोजना निर्माण से जुड़े मुद्दों को लेकर रेड मॉल ग्रुप के साथ विवाद एनसीएलटी में लंबित था। जिस पर जीडीए ने मजबूती से अपना पक्ष रखा। जिसमे प्रत्येक सुनवाई पर प्राधिकरण से उपाध्यक्ष के निर्देशन मे अधिकारियों द्वारा प्रतिभाग किया गया और बारीकी से केस की प्रगति पर निगरानी रखी गयी और उस पर उपाध्यक्ष से चर्चा कर आगे की रणनीति तय की गयी। इस निर्णय के बाद जीडीए उपाध्यक्ष अतुल वत्स ने कहा है कि गाजियाबाद विकास प्राधिकरण ने यह साबित किया है कि वह क्षेत्र के विकास के साथ-साथ विवादित मामलों को निष्पक्षता और प्रभावी तरीके से सुलझाने में भी सक्षम है। यह सफलता प्राधिकरण की प्रतिबद्धता और कुशलता का प्रमाण है।

एनएसई ने 5 माह में एक करोड़ निवेशक जोड़े, आंकड़ा 11 करोड़ के पार

एजेंसी

नई दिल्ली। शेयर बाजार के प्रमुख सूचकांक नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) पर पंजीकृत निवेशकों की संख्या 11 करोड़ पार हो गई है। इसमें एक करोड़ पंजीकरण सिर्फ पांच महीनों में हुए हैं। एक्सचेंज के मुख्य व्यवसाय विकास अधिकारी श्रीराम कृष्णन ने कहा, एनएसई में पंजीकृत निवेशकों की संख्या 11 करोड़ के आंकड़े को पार कर गई है। उन्होंने कहा कि इसके साथ ही एक्सचेंज में पंजीकृत क्लाइंट कोड (खातों) की कुल संख्या 21 करोड़ हो गई है, जिसमें आज तक किए गए सभी पंजीकरण शामिल हैं। साल 1994 में एनएसई के परिचालन की शुरुआत के बाद से 1 करोड़ निवेशकों तक पहुंचने में इसको 14 साल लग गए। इसके बाद यह गति तेज हुई। वहीं, अगले एक करोड़ पंजीकरण में करीब सात साल लगे, उसके बाद अगले एक करोड़ के लिए 3.5 साल और चौथे करोड़ को जोड़ने में एक साल से थोड़ा ज्यादा वक्त लगा। पिछले साल मानक

सूचकांक निफ्टी 50 ने 8.8 फीसदी का रिटर्न दिया जबकि निफ्टी 500 सूचकांक में 15.2 फीसदी की शानदार बढ़त देखने को मिली। उल्लेखनीय है कि पिछले नौ साल से भारतीय बाजारों में सकारात्मक रिटर्न देखने को मिल रहा है। विशेष बात यह है कि कोई ग्राहक एक से अधिक ट्रेडिंग सदस्यों के साथ पंजीकरण करा सकते हैं।

एचडीएफसी बैंक को तीसरी तिमाही में 16,736 करोड़ रुपये का मुनाफा

एजेंसी

नई दिल्ली। निजी क्षेत्र के सबसे बड़े बैंक एचडीएफसी ने चालू वित्त वर्ष 2024-25 की तीसरी तिमाही के नतीजे का ऐलान कर दिया है। 31 दिसंबर, 2024 को समाप्?त (अक्?टूबर-दिसंबर) तिमाही में बैंक का मुनाफा सालाना आधार पर 2.2 फीसदी बढ़कर 16,736 करोड़ रुपये रहा है। पिछले वित्त वर्ष 2023-24 की समान तिमाही में बैंक को 16,373 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हुआ था।

एचडीएफसी बैंक ने शेयर बाजार को दी सूचना में कहा कि चालू वित्त वर्ष 2024-25 की तीसरी तिमाही में एकल आधार पर शुद्ध लाभ दो फीसदी बढ़कर 16,736 करोड़ रुपये रहा है। पिछले वित्त वर्ष 2023-25 की समान अवधि में बैंक को 16,373 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हुआ था। बैंक ने बताया कि तीसरी तिमाही में एकल आधार पर उसकी कुल आय बढ़कर 87,460 करोड़ रुपये हो गई, जो पिछले वित्त वर्ष की इसी तिमाही में 81,720 करोड़ रुपये थी। बैंक के मुताबिक तीसरी तिमाही में एकीकृत आधार पर उसका लाभ मामूली

सुधार के साथ 17,258 करोड़ रुपये से बढ़कर 17,657 करोड़ रुपये हो गया। हालांकि, एकीकृत कुल आय घटकर 1,12,194 करोड़ रुपये रह गई है, जो पिछले वित्त वर्ष की अक्टूबर-नवंबर तिमाही में 1,15,016 करोड़ रुपये रही थी। परिसंपत्ति की गुणवत्ता के मामले में बैंक की सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (एनपीए) दिसंबर, 2024 के अंत तक कुल कर्ज का 1.42 फीसदी रह गई, जो पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में 1.26 फीसदी थी। इसके अलावा शुद्ध एनपीए यानी फंसा कर्ज बढ़कर 0.46 फीसदी रहा है, जो पिछले वित्त वर्ष की इसी तिमाही में 0.31 फीसदी था।

भारत की अक्षय ऊर्जा क्रांति: 2024 की उपलब्धियां और 2025 का लक्ष्य

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत की कुल गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा क्षमता 20 जनवरी, 2025 तक 217.62 गीगावाट तक पहुंच गई है। इसमें वर्ष 2024 में रिकॉर्ड तोड़ 24.5 गीगावाट सौर ऊर्जा क्षमता और 3.4 गीगावाट पवन ऊर्जा क्षमता जोड़ी गई, जो 2023 की तुलना में सौर प्रतिष्ठानों में दोगुने से ज?यादा और पवन ऊर्जा प्रतिष्ठानों में 21 फीसदी की वृद्धि को दर्शाता है। नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय ने जारी एक बयान में बताया कि भारत जैसे-जैसे एक स्थायी भविष्य की ओर अपने को बढ़ा रहा है, इसके नवीकरणीय ऊर्जा (आरई) क्षेत्र में अभूतपूर्व वृद्धि देखी जा रही है। वर्ष 2024 में देश ने सौर और पवन ऊर्जा प्रतिष्ठानों, नीतिगत प्रगति तथा बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए महत?वपूर्ण प्रगति की है, जिससे वर्ष 2025 में महत्वाकांक्षी लक्ष्यों के लिए मंच तैयार हो गया है। मंत्रालय के मुताबिक वर्ष 2030 तक 500 गीगावाट गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा क्षमता हासिल करने की प्रतिबद्धता के साथ भारत स्वच्छ ऊर्जा के क्षेत्र में ग्लोबल लीडर के रूप में उभर रहा है। वर्ष

2024 में रिकॉर्ड तोड़ 24.5 गीगावाट सौर क्षमता और 3.4 गीगावाट पवन क्षमता जोड़ी गई, जो 2023 की तुलना में सौर प्रतिष्ठानों में दोगुने से अधिक वृद्धि और पवन प्रतिष्ठानों में 21 फीसदी की वृद्धि को दर्शाती है। मंत्रालय के मुताबिक यह बढ़ोतरी सरकारी प्रोत्साहन, नीतिगत सुधारों और घरेलू सौर और पवन टरबाइन विनिर्माण में बढ़े हुए निवेश के कारण संभव हुआ। भारत की अक्षय ऊर्जा वृद्धि में सौर ऊर्जा प्रमुख योगदानकर्ता के रूप में बनी रही, जो कुल स्थापित अक्षय ऊर्जा क्षमता का 47 फीसदी है। पिछले साल 18.5 गीगावाट सौर क्षमता की स्थापना हुई, जो 2023 की तुलना में करीब 2.8 गुना अधिक है। राजस्थान, गुजरात और तमिलनाडु शीर्ष प्रदर्शन करने वाले राज्यों के रूप में उभरे, जिनका भारत के कुल सौर ऊर्जा उत्पादन में 71 फीसदी का योगदान रहा।

दूरसंचार क्षेत्र में वृद्धि के लिए प्रभावी स्पेक्ट्रम प्रबंधन महत्वपूर्ण: ट्राई प्रमुख

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण (ट्राई) के अध्यक्ष अनिल कुमार लाहोटी ने कहा कि दूरसंचार क्षेत्र में नवाचार, सार्वभौमिक कनेक्टिविटी और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रभावी स्पेक्ट्रम प्रबंधन रणनीति महत्वपूर्ण है।संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने जारी बयान में बताया कि ट्राई के अध्यक्ष अनिल कुमार लाहोटी ने एशिया प्रशांत दूरसंचार समुदाय (एपीटी) के महासचिव मसनोरी कोंडो की उपस्थिति में स्पेक्ट्रम पर दक्षिण एशियाई दूरसंचार विनियामक परिषद (एसएटीआरसी) कार्यशाला का उद्घाटन किया।

मंत्रालय के मुताबिक तीन दिवसीय कार्यशाला में एसएटीआरसी के सदस्य देशों के प्रतिनिधि, कार्य समूह के सदस्य, उद्योग विशेषज्ञ, कई सरकारी विभागों के प्रतिनिधि आदि भाग लेंगे। इस कार्यशाला का आयोजन एशिया प्रशांत दूरसंचार समुदाय की ओर से किया गया है, जिसकी मेजबानी भारतीय दूरसंचार विनियामक गोवा के होटल डबल ट्री बाय हिल्टन में कर रहा है। इस कार्यशाला का उद्देश्य तेजी से विकसित हो रहे दूरसंचार परिदृश्य में प्रभावी स्पेक्ट्रम प्रबंधन के महत्व पर चर्चा करना है।

कार्यशाला के प्रमुख बिंदु

-स्पेक्ट्रम पर इस एसएटीआरसी कार्यशाला से प्रतिभागियों के बीच स्पेक्ट्रम प्रबंधन के प्रमुख मुद्दों के बारे में बेहतर समझ विकसित होने की उम्मीद है, जिससे एसएटीआरसी कार्य समूह के लिए कार्रवाई योग्य दिशा-निर्देश तैयार होंगे। इसके अतिरिक्त, कार्यशाला का उद्देश्य सदस्य देशों और उद्योग विशेषज्ञों के बीच सहकार्यता को बढ़ावा देना है।

डीपीआईआईटी ने जॉब्स पैदा करने और प्रतिभा को बढ़ावा देने के लिए 'अपना' के साथ साझेदारी की

एजेंसी

नई दिल्ली। उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डीपीआईआईटी) और रोजगार एवं पेशेवर नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म 'अपना' ने प्रतिभा खोज के लिए हाथ मिलाया है, ताकि डीपीआईआईटी-पंजीकृत स्टार्टअप्स को उच्च कुशल जनशक्ति से लैस किया जा सके और इस प्रकार बेरोजगार युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा किए जा सकें। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने जारी एक बयान में बताया कि ये समझौता ज्ञापन (एमओयू) के जरिए औपचारिक रूप से की गई है। इस साझेदारी से भारत स्टार्टअप रजिस्ट्री (भास्कर) प्लेटफॉर्म पर पंजीकृत 7 लाख संस्थाओं में से प्रत्येक के लिए अपना के प्लेटफॉर्म पर हायरिंग क्रेडिट में 2000 रुपये प्रति इकाई का मौद्रिक मूल्य मिलेगा। वर्तमान में इसका मूल्य 140 करोड़ रुपये होगा। जैसे-जैसे स्टार्टअप इकोसिस्टम धीरे-धीरे

विकसित होगा, इस पहल का मूल्य बढ़कर अनुमानित 300 करोड़ रुपये तक पहुंच जाएगा। मंत्रालय के मुताबिक यह आपसी सहयोग डीपीआईआईटी पंजीकृत स्टार्टअप को अपना के प्लेटफॉर्म पर 2000 रुपये के क्रेडिट प्रदान करने का प्रयास करता है। यह क्रेडिट जॉब पोस्टिंग को सक्षम करके और अनुरूप प्रतिभा पूल तक पहुंच को अनलॉक करके बेहतर भर्ती का समर्थन करेंगे। भास्कर पर सात लाख पंजीकरणों के साथ यह पहल 140 करोड़ रुपये से अधिक के मूल्य का प्रतिनिधित्व करती है। जैसे-जैसे पारिस्थितिकी तंत्र के भीतर स्टार्टअप की संख्या बढ़ती है, मूल्य 300 करोड़ रुपये तक बढ़ जाएगा, जो भारत की उद्यमशीलता का समर्थन करने के लिए महत्वपूर्ण संसाधन प्रदान करेगा। वाणिज्य मंत्रालय के मुताबिक क्रेडिट स्टार्टअप को अपना के व्यापक भर्ती उपकरणों तक पहुंचने में सक्षम करेगा, जिससे बेहतर जॉब मैचिंग और दक्षता को बढ़ावा मिलेगा।

प्रतिभा तक बेहतर पहुंच नई पहलों के लिए बाजार में लगने वाले समय में कमी लाएगी, जिससे परिचालन को बढ़ाने में स्टार्टअप को मदद मिलेगी। इसके अलावा अपना का प्लेटफॉर्म कुशल श्रमिकों के लिए भारत के उभरते उद्यमी पारिस्थितिकी तंत्र से जुड़ने के लिए रास्ते तैयार करेगा। क्रेडिट स्टार्टअप को अपना की जॉब पोस्टिंग और एआई-संचालित मिलान सुविधाओं का उपयोग करने में सक्षम बनाएगा, जो उनकी भर्ती आवश्यकताओं के अनुरूप होगा।

गैर निवासी क्रूज शिप संचालकों के लिए आयकर अधिनियम में संशोधन अधिसूचित

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) ने गैर-निवासी क्रूज शिप ऑपरेटरों के लिए अनुमानित कराधान व्यवस्था की प्रयोज्यता के लिए शर्तें निर्धारित करने हेतु आयकर नियमों में संशोधन को अधिसूचित किया है। आयकर विभाग ने जारी एक बयान में कहा कि निवेश और रोजगार को बढ़ावा देने के उपाय के रूप में वित्त अधिनियम, 2024 ने क्रूज जहाजों के संचालन के व्यवसाय में लगे गैर-निवासियों के लिए एक अनुमानित कराधान व्यवस्था शुरू की गई है। इसके अलावा किसी विदेशी कंपनी को भारत में ऐसे जहाजों का संचालन करने वाली संबंधित कंपनी से प्राप्त क्रूज जहाजों के पट्टा किराये से होने वाले इनकम के लिए भी छूट प्रदान की गई है।

सीबीडीटी की ओर से जारी अधिसूचना के मुताबिक इस

प्रकल्पित कराधान व्यवस्था की प्रयोज्यता निर्धारित शर्तों के अधीन है। इसमें गैर-निवासियों के लिए निर्धारित इन शर्तों के अनुसार संचालित किए जाने वाले यात्री जहाज की वहन क्षमता 200 से अधिक यात्रियों की होनी चाहिए या इसकी लंबाई 75 मीटर या उससे अधिक होनी चाहिए तथा इसमें यात्रियों के लिए मनोरंजन और मनोरंजन के लिए उपयुक्त भोजन और केबिन की सुविधा होनी चाहिए।

अधिसूचना के मुताबिक

संचालित किए जाने वाले जहाज को भारत के कम से कम दो समुद्री बंदरगाहों या भारत के एक ही समुद्री बंदरगाहों को दो बार छूते हुए निर्धारित यात्रा या तटीय भ्रमण पर होना चाहिए। यह भी अनिवार्य है कि संचालित किया जाने वाला जहाज मुख्य रूप से यात्रियों को ले जाने के लिए हो, न कि माल ढोने के लिए। इसके अलावा जहाज को पर्यटन मंत्रालय या शिपिंग मंत्रालय द्वारा जारी प्रक्रिया और दिशानिर्देशों के अनुसार संचालित किया जाना होगा।

इन संशोधनों का प्रस्ताव केन्द्रीय बजट में क्रूज-शिपिंग उद्योग को बढ़ावा देने के लिए किया गया था, जिसका उद्देश्य भारत को एक आकर्षक क्रूज पर्यटन स्थल बनाना, देश में क्रूज शिपिंग के लिए वैश्विक पर्यटकों को आकर्षित करना और घरेलू पर्यटकों के बीच क्रूज शिपिंग को लोकप्रिय बनाना था।

उल्लेखनीय है कि केंद्र सरकार ने पांच वर्षीय क्रूज भारत मिशन भी शुरू किया है, जिसका लक्ष्य 2029 तक 10 लाख यात्रियों तक पहुंच कर तथा 4,00,000 नौकरियां सृजित करके भारत में क्रूज पर्यटन को बढ़ावा देना है। इस मिशन में एक समर्पित कोष की स्थापना, कैबोटेज विनियमों को आसान बनाना और वित्तीय प्रोत्साहन शामिल हैं।

ईपीएफओ ने नवंबर महीने के दौरान शुद्ध 14.63 लाख सदस्य जोड़े

एजेंसी

नई दिल्ली। रोजगार के मोर्चे पर अच्छी खबर है। कर्मचारी भविष्?य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने नवंबर महीने में शुद्ध रूप से (नेट) 14.63 लाख सदस्य जोड़े हैं। पिछले महीने अक्टूबर, 2024 के दौरान ईपीएफओ ने 13.41 लाख सदस्यों को जोड़ा था। श्रम एवं रोजगार मंत्रालय ने बताया कि ईपीएफओ ने नवंबर, 2024 में 14.63 लाख नेट सदस्यों को जोड़ा है, जबकि अक?टूबर, 2024 के दौरान ईपीएफओ ने 13.41 लाख सदस?यों को जोड़ा था। इस तरह ईपीएफओ से जुड़ने वाले सदस्यों की संख?या में शुद्ध 9.07 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई है। वहीं, सालाना आधार पर नवंबर 2023 की तुलना में शुद्ध सदस्यों की संख?या में 4.88 फीसदी की वृद्धि है। अनंतिम पेरोल डेटा के मुताबिक ईपीएफओ ने नवंबर, 2024 में करीब 8.74 लाख नए सदस्य जोड़े हैं। अक्टूबर, 2024 की तुलना में नए सदस्यों की संख्या में 16.58 फीसदी की वृद्धि दर्ज हुई है।

नए सदस्यों के सालाना आधार पर विश्लेषण से पता चलता है कि नवंबर 2023 में पिछले वर्ष की तुलना में नए सदस्यों की संख्या में 18.80 फीसदी की वृद्धि दर्ज हुई है।आंकड़ों के मुताबिक इस दौरान ईपीएफओ से जुड़ने वालों में 18-25 आयु वर्ग के सदस?यों का दबदबा रहा है। नवंबर, 2024 के दौरान 18-25 आयु वर्ग में 4.81 लाख नए सदस्य जुड़े हैं, जो इस दौरान जोड़े गए कुल नए सदस्यों का 54.97 फीसदी है। वहीं, 18-25 आयु वर्ग के नए सदस्यों की संख?या पिछले महीने अक्टूबर की तुलना में 9.56 फीसदी ज?यादा है, जबकि नवंबर 2023 की तुलना में 13.99 फीसदी की वृद्धि है। श्रम एवं रोजगार मंत्रालय ने कहा कि ईपीएफओ के जारी आंकड़ों के मुताबिक यह पहले की प्रवृत्ति के अनुरूप है, जो दर्शाता है कि संगठित कार्यबल में शामिल होने वाले अधिकांश व्यक्ति युवा हैं।

रुपया 26 पैसे मजबूत

मुंबई । अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की टैरिफ योजनाओं पर स्पष्टता की कमी के कारण वित्तीय बाजारों में अनिश्चितता से दुनिया की प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले डॉलर के दो सप्ताह के निचले स्तर तक लुढ़कने की

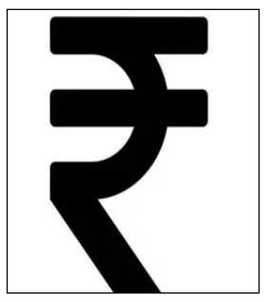

बदौलत आज अंतरबैंकिंग मुद्रा बाजार में रुपया 26 पैसे मजबूत होकर 86.33 रुपये प्रति डॉलर पर पहुंच गया। वहीं, इसके पिछले कारोबारी दिवस रुपया 86.59 रुपये प्रति डॉलर पर रहा था। शुरूआती कारोबार में रुपया सात पैसे की बढ़त लेकर 86.52 रुपये प्रति डॉलर पर खुला और सत्र के दौरान आयातकों एवं बैंकरों की डॉलर बिकवाली होने से 86.30 रुपये प्रति डॉलर के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। वहीं, लिवाली के दबाव में यह 86.60 रुपये प्रति डॉलर के निचले स्तर पर भी रहा। अंत में पिछले दिवस के 86.59 रुपये प्रति डॉलर की तुलना में 26 पैसे चढ़कर 86.33 रुपये प्रति डॉलर पर पहुंच गया।

इंडेक्स शेयरों में हुई खरीदारी से शेयर बाजार में तेजी, बढ़त के साथ बंद हुए सेंसेक्स और निफ्टी

एजेंसी

नई दिल्ली।बड़ी गिरावट के बाद आज घरेलू शेयर बाजार इंडेक्स शेयरों में हुई खरीदारी के कारण मजबूती के साथ बंद होने में सफल रहा। आज के कारोबार की शुरुआत भी तेजी के साथ हुई थी। हालांकि दिन के कारोबार में सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांक कुछ देर के लिए लुढ़क कर लाल निशान में भी पहुंचे लेकिन इसके बाद खरीदारी का सपोर्ट मिल जाने के कारण दोनों सूचकांकों में तेजी आ गई। पूरे दिन उतार चढ़ाव का सामना करने के बाद सेंसेक्स 0.75 प्रतिशत और निफ्टी 0.57 प्रतिशत की बढ़त के साथ बंद हुए। आज के कारोबार में आईटी और फार्मास्यूटिकल सेक्टर के शेयरों में लगातार खरीदारी होती रही। इसके साथ ही बैंकिंग और टेक इंडेक्स भी बढ़त के साथ बंद हुए। रियल्टी, पीएसई और एनर्जी सेक्टर के शेयरों में जम कर बिकवाली होती रही। इसके अलावा ऑटोमोबाइल, कैपिटल गुड्स, कंज्यूमर ड्यूरेबल, एफएमसीजी, मेटल और ऑयल एंड गैस इंडेक्स भी गिरावट के साथ लाल निशान में बंद हुए। ब्रॉडर मार्केट में भी आज लगातार बिकवाली का दबाव बना रहा, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 1.20 प्रतिशत की कमजोरी के साथ बंद हुआ। इसी तरह स्मॉलकैप इंडेक्स ने 1.56 प्रतिशत की गिरावट के साथ आज के कारोबार का अंत किया। आज शेयर बाजार में आई मजबूती के बावजूद ब्रॉडर मार्केट में हुई जोरदार बिकवाली के कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक की कमी हो गई। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन आज के कारोबार के बाद घट कर 421.96 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) हो गया। पिछले कारोबारी दिन यानी मंगलवार को इनका मार्केट कैपिटलाइजेशन 424.07 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह निवेशकों को आज के कारोबार से करीब 2.11 लाख करोड़ रुपये का नुकसान हो गया। आज दिन भर के कारोबार में बीएसई में 4,059 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें 1,147 शेयर बढ़त के साथ बंद हुए, जबकि 2,797 शेयरों में गिरावट का रुख रहा, वहीं 115 शेयर बिना किसी उतार चढ़ाव के बंद हुए। एनएसई में आज 2,559 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें से 635 शेयर मुनाफा कमा कर हरे निशान में और 1,914 शेयर नुकसान उठा कर लाल निशान में बंद हुए। इसी तरह सेंसेक्स में शामिल 30 शेयरों में से 21 शेयर बढ़त के साथ और 9 शेयर गिरावट के साथ बंद हुए। निफ्टी में शामिल 50 शेयरों में से 27 शेयर हरे निशान में और 23 शेयर लाल निशान में बंद हुए। बीएसई का सेंसेक्स आज 276.06 अंक की मजबूती के साथ 76,114.42 अंक के स्तर पर खुला। कारोबार की शुरुआत होने के बाद कुछ देर तक ये सूचकांक मामूली उतार चढ़ाव के साथ कारोबार करता रहा लेकिन दोपहर 11 बजे के करीब बाजार में बिकवाली का दबाव बन गया, जिसकी वजह से ये सूचकांक सारी बढ़त गंवा कर 21.86 अंक की कमजोरी के साथ 75,816.50 अंक तक गिर गया। हालांकि दोपहर 2 बजे के बाद खरीदारों ने एक बार फिर जोर लगाया, जिसकी वजह से सेंसेक्स 566.63 अंक की मजबूती के साथ 76,404.99 अंक के स्तर पर बंद होने में सफल रहा। सेंसेक्स की तरह ही एनएसई के निफ्टी ने आज 74.50 अंक की मजबूती के साथ 23,099.15 अंक के स्तर से कारोबार की शुरुआत की। बाजार खुलने के बाद लिवालों और बिकवालों के बीच एक दूसरे पर हावी होने की कोशिश शुरू हो गई, जिसकी वजह से इस सूचकांक की चाल में भी उतार-चढ़ाव होने लगा।

सफेद प्याज और लाल प्याज में क्या है फर्क किसका इस्तेमाल है ज्यादा फायदेमंद

प्याज भारतीय घरों का सबसे इम्पोर्टेंट हिस्सा है. देसी फूड्स में प्याजा का खूब इस्तेमाल किया जाता है. मार्केट में दो सफेद और लाल दो तरीके की प्याज उपलब्ध हैं. वैसे तो इन दोनों प्याज को एक ही समझा जाता है, लेकिन दोनों में काफी अंतर होता है जो हम आपको आज इस आर्टिकल में बताने जा रहे हैं.

प्याज हमारी डेली लाइफ का काफी इम्पोर्टेंट हिस्सा है. भारतीय रसोई में इसका उपयोग लगभग हर खानें में किया जाता है. ये न केवल खाने का स्वाद बढ़ाता है बल्कि हेल्थ के लिए भी कई फायदे देता है. प्याज के बिना सलाद अधूरी लगती है, और तड़के में इसका योगदान खाने का स्वाद बढ़ा देता है. वैसे तो लाला प्याज भारतीय घरों में खाया जाता है. मार्केट में लाल प्याज के अलावा सफेद प्याज भी मिलता है.

अक्सर लोग सोचते हैं कि ये दोनों एक ही जैसे हैं और इन्हें किसी भी खाने में इस्तेमाल किया जा सकता है. लेकिन सच्चाई ये है कि लाल और सफेद प्याज के स्वाद, पोषण और उपयोग में बड़ा अंतर होता है. आज इस आर्टिकल में हम आपको सफेद प्याज और लाल प्याज के बीच क्या अंतर है, उनके कौन-कौन से फायदे हैं, और किसका इस्तेमाल हेल्थ के लिए ज्यादा फायदेमंद है.

सफेद प्याज और लाल प्याज के बीच अंतर

1. रंग और बनावट

लाल प्याज गहरे लाल या बैंगनी रंग की परतों वाला होता है. इसके अंदर का भाग हल्का गुलाबी रंग का होता है. वहीं, सफेद प्याज का बाहरी भाग हल्के सफेद रंग का होता है, और इसके अंदर का हिस्सा भी पूरी तरह सफेद होता है.

2. स्वाद

लाल प्याज का स्वाद थोड़ा तीखा और मसालेदार होता है. ये सलाद और भारतीय खानों में सबसे ज्यादा उपयोग किया जाता है. वहीं, सफेद प्याज का स्वाद हल्का मीठा और माइल्ड होता है, जो इसे सूप, सैंडविच और लाइड डिश के लिए परफेक्ट बनाता है.

3. पानी और चीनी की क्वांटिटी

लाल प्याज इसमें पानी की क्वांटिटी कम और तीखे स्वाद के कारण चीनी की क्वांटिटी भी थोड़ी कम होती है. वहीं, सफेद प्याज में पानी और चीनी की क्वांटिटी अधिक होती है, जिससे ये स्वाद में अधिक मीठा और रसदार होता है.

4. फूड में यूज

लाल प्याज को कच्चा या पका हुआ दोनों तरह से उपयोग किया जा सकता है. ये ग्रेवी, सलाद, और अचार में सबसे ज्यादा डाला जाता है. वहीं. सफेद प्याज ज्यादातर पका हुआ उपयोग किया जाता है. ये वेस्टर्न और लाइट सूप में ज्यादा यूज किया जाता है.

लाल प्याज के फायदे

एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर- लाल प्याज में क्वेरसिटिन नामक एंटीऑक्सीडेंट होता है, जो शरीर में फ्री रेडिकल्स को कम करने में मदद करता है. ये दिल की बीमारियों और कैंसर के खतरे को भी कम कर सकता है.ब्लड प्यूरिफिकेशन में मददगार- ये खून को साफ करने और कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल करने में सहायक है.

इम्यूनिटी बूस्टर: इसमें विटामिन ष्ट और सल्फर होते हैं जो डिफेंस सिस्टम को मजबूत बनाते हैं.

डायबिटीज में फायदेमंद: लाल प्याज इंसुलिन के उत्पादन को बढ़ाने में मदद करता है, जिससे ब्लड शुगर लेवल कंट्रोल रहता है.

सफेद प्याज के फायदे

पाचन में सुधार: सफेद प्याज फाइबर से भरपूर होता है, जो पाचन को बेहतर बनाता है. ये पेट की समस्याओं जैसे कब्ज और एसिडिटी को दूर करने में मदद करता है

हड्डियों के लिए अच्छा: इसमें मौजूद कैल्शियम और फॉस्फोरस हड्डियों को मजबूत बनाने में सहायक हैं.

त्वचा और बालों के लिए लाभकारी- सफेद प्याज का रस त्वचा को निखारने और बालों के झड़ने को रोकने में फायदेमंद होता है.ब्लड प्रेशर में मदद: सफेद प्याज पोटैशियम का अच्छा स्रोत है, जो ब्लड प्रेशर को कंट्रोल रखने में मदद करता है.

वाहियात लड़ाई वाला महत्वपूर्ण चुनाव

पुरबिया वोट के मसले पर भाजपा शुरू से बहुत संवेदनशील रही है लेकिन उसने पुरबिया लोगों के लिए कुछ किया नहीं है। संवेदनशीलता की हालत यह है कि कहीं बाहर से लाकर मनोज तिवारी को सर्वेसर्वा बना दिया और इस बार उनका टिकट रिपीट भी किया लेकिन ये सारे फैसले भाजपा के मूल चरित्र और आधार से इतना उलट है।

दिल्ली को सबसे अच्छी तरह जानने और दिल्ली विधान सभा चुनाव को काफी करीब से जानने के आधार पर कहा जा सकता है कि देश की राजनीति में अपने कद से काफी बड़ा स्थान रखने के बावजूद इतना वाहियात चुनाव प्रचार कहीं नहीं होता। बड़े मुद्दे बताते हुए दिल्ली राज्य सरकार के अधिकार और उसकी सीमाओं की चर्चा भी हो सकती है लेकिन यहां दिल्ली का यातायात (खासकर जाम की समस्या), दमघोंटू प्रदूषण, शिक्षा और स्वास्थ्य से लेकर हर मामले में कई-कई स्तर का साफ बंटवारा (और हर दल के नेता और अधिकारियों के एक अलग ही स्तर पर जीने), संसाधनों के दुरुपयोग (जिसमें सबसे ज्यादा नेताओं के प्रचार का खर्च अखरता है), गंदगी के साम्राज्य, अपराधों, की भरमार, बेतहाशा शराबखोरी और महंगाई-बेरोजगारी चुनावी मुद्दा बनते ही नहीं। सत्ता के साथ समृद्धि का केंद्र बनाकर दिल्ली जिस तरह दूरदराज के गरीब इलाकों के बेरोजगार और बीमार लोगों को बसने और इलाज के लिए आकर्षित करती है उसमें यहां कोई व्यवस्थित नीति बने यह चर्चा सिरे से गायब है- जबकि पुरबिया प्रेम अचानक सबसे बड़ा चुनावी मुद्दा बन गया है। उसमें जरा सी चूक या मन के तह में बैठे पुरबिया द्वेष के बाहर आते ही बवाल मच जाता है-भाजपा के एक नामी प्रवक्ता तो झा जी को झान्टूजी कहकर शहीद भी हो चुके हैं।चुनाव के समय अचानक पुरबिया समाज के महत्वपूर्ण होने के मसले की चर्चा से पहले यह देखना जरूरी है कि जैसे ही कोई गंभीर मसला उठता है दोनों प्रमुख पक्ष एक दूसरे को दोषी बताने का नाटक चलाकर चुप्पी साध लेते है।

भाजपा शिक्षा का रोना रोएगी तो आप वाले प्रिंसिपल और अध्यापकों की नियुक्ति की फाइल लाट साहब द्वारा रोकने की बात करेगी। अदालत पेड़ कटवाने पर उप राज्यपाल को दोषी बताते हैं तब भी आप के नेताओं को उस पर दबाव बनाने की नहीं सूझती। जबकि वे लगभग रोज उनकी दखलंदाजी की या अधिकारियों द्वारा उनका निर्देश न मानने की शिकायत करते हैं। इस बार तो शक्तियों के बंटवारे का सवाल उठा ही नहीं वरना अभी तक दिल्ली चुनाव में केंद्र बनाम राज्य एक मुद्दा रहा करता था। भाजपा झुग्गी झोपड़ी वालों को मकान देने का आप का वायदा पूरा न होने का आरोप लगाएगी तो आप वाले डीडीए से जमीन न मिलने का बहाना ढूंढ लेते हैं। दंगा, अपराध, प्रदूषण, यमुना सफाई, गंदगी, कूड़े का पहाड़ जैसे हर मुद्दे पर यही खेल चलता है और बात आई गई हो रही है और यह अखरता ज्यादा है क्योंकि चौथी बार आप और भाजपा आमने सामने है तथा सारा जोर भी लगा है पर मुद्दों के मामले में खेल और बिगड़ा है।27 साल से दिल्ली की सत्ता से बाहर रहने और महाबली नरेंद्र मोदी की सत्ता के ठीक नीचे अरविन्द केजरीवाल का एक अलग तरह की राजनीति शुरू करना और बार बार-बार भाजपा को पटखनी देना मोदी-शाह को जरूर अखरता है लेकिन जिस तरह आप और अरविन्द खड़े रहा करते हैं और दिल्ली से बाहर हर जगह की चुनावी लड़ाई में मोटे तौर पर भाजपा को ही मदद करते रहे हैं उससे भाजपा उनकी मौजूदगी से ज्यादा शिकायत नहीं लगती। पंजाब में जरूर आप की सत्ता हो जाने से अरविन्द को बल मिला है

लेकिन वहां कांग्रेस का हारना भाजपा को अच्छा ही लगा है। दिल्ली की लड़ाई भाजपा चुनाव के अलावा भी लगातार लड़ती है लेकिन जिस तरह उसने अपना स्थानीय नेतृत्व खत्म किया है और इस चुनाव में भी साफ कमजोरियां दिखा रही है वह उसके इस डर को भी बताता है कि कहीं कांग्रेस और राहुल गांधी मजबूत न हों जाएं। भाजपा ने शराब नीति के घोटाले और मुख्यमंत्री आवास के मसले पर कुछ अति कर दिया हो लेकिन इन्हें मुद्दा बनाने में वह सफल रही, चुनाव में उस पर जोर न देना समझ नहीं आता। केजरीवाल ने भी इन मुद्दों पर बेशर्मी की हद तक राजनीति की (उन्हें हेमंत सोरेन से सीख लेनी चाहिए थी) लेकिन वे अब इन्हें भुलाने में लगे हैं क्योंकि इनका असर देखकर ही उन्होंने मुख्यमंत्री की कुर्सी छोड़ी थी।पुरबिया वोट के मसले पर भाजपा शुरू से बहुत संवेदनशील रही है लेकिन उसने पुरबिया लोगों के लिए कुछ किया नहीं है। संवेदनशीलता की हालत यह है कि कहीं बाहर से लाकर मनोज तिवारी को सर्वेसर्वा बना दिया और इस बार उनका टिकट रिपीट भी किया लेकिन ये सारे फैसले भाजपा के मूल चरित्र और आधार से इतना उलट हैं कि लाभ करने की जगह नुकसान ही हुआ लगता है। इस बार भी आप के एक दर्जन पुरबिया उम्मीदवारों की जगह उसने मात्र चार या पांच उम्मीदवार उतारे हैं, वह भी कपिल मिश्र को पुरबिया बताकर जबकि उनका पूरब से कोई लेना-देना नहीं है। आप को यह आधार मिला लेकिन यह कांग्रेसी आधार है। इस बार कांग्रेस जोर लगा रही है लेकिन ऐसा कोई बड़ा शिफ्ट होता दिखाई नहीं देता।

मुसलमान वोटों के मामले में ऐसा कहना जल्दबाजी होगी पर उसमें बदलाव हो सकता है। खुद कांग्रेस पूरा जोर नहीं लगा रही है। अभी तक राहुल गांधी की सिर्फ एक सभा हुई है और प्रियंका तो मैदान से बाहर ही हैं। कांग्रेस के प्रति दलितों और पिछड़ों में आकर्षण बढ़ा है लेकिन मतदान तक की स्थिति बहुत मेहनत और भरोसे से आती है। फिर दिल्ली की चुनावी राजनीति में जाति उतना बड़ा फैक्टर नहीं होती जितना यूपी-बिहार-राजस्थान या उत्तराखंड में। यहां उसकी तुलना में वर्ग का आधार ज्यादा कारगर है जो काफी कुछ मुहल्लों और चुनाव क्षेत्रों की बसावट से भी जाहिर होता है। स्लम और निम्न-मध्यमवर्गी बस्तियों में पहले कांग्रेस का जोर रहता था और अब आप का।लेकिन इन सबसे दिल्ली चुनाव का महत्व इतना काम नहीं हो जाता कि कभी सैफ के कथित हमलावर की राष्ट्रीयता तो कभी काटोगे-बांटोगे और कभी भाजपा प्रवक्ता शहजाद पूनावाला जी जुबान फिसलने को केन्द्रीय मुद्दा बना दिया जाए। अभी भी छोटा और सत्ता से कमजोर राज्य होने के बावजूद दिल्ली देश की राजधानी है और उभरते भारत की प्रतिष्ठा इसके साथ जुड़ी है। सत्ताईस साल से सत्ता से दूर रही भाजपा के स्थानीय नेता अगर भूखे भेड़िए सा व्यवहार करते हैं तो बात समझ आती है।

नरेंद्र मोदी तथा अमित शाह के लिए भी काफी कुछ दांव पर लगा है क्योंकि हर्षवर्द्धन जैसे नेता को किनारे करना और भाजपा के पंजाबी, बनिया और ब्राह्मण आधार को झुठलाकर पुरबिया मनोज तिवारी जैसों के हाथ में पतवार देने का फैसला उनका ही रहा है। कांग्रेस का ज्यादा कुछ दांव पर भले न हों पर आप का फिर से जीतना इंडिया गठबंधन की राजनीति को मटियामेट करेगा और संभव है कांग्रेस विरोधी एक तीसरे मोर्चे की राजनीति भी शुरू करा देगा और अरविन्द केजरीवाल तथा आप के लिए तो जीवन-मरण प्रश्न है। उन्हें सिर्फ जीतना ही नहीं है अगर सीटें ज्यादा काम हुईं तब भी भाजपा और मोदी उन्हें जीने नहीं देंगे। बीते पांच साल भी इस बात की गवाही हैं।

संपादकीय

दोषी को सजा और समाज की जिम्मेदारी

प.बंगाल में आरजी कर अस्पताल में 8-9 अगस्त 2024 की रात ट्रेनी डॉक्टर के साथ बलात्कार और हत्या के दोषी संजय रॉय को सोमवार को सियालदह कोर्ट ने उम्रकैद की सजा सुनाई है। इससे दो दिन पहले अदालत ने 18 जनवरी को संजय को दोषी ठहराया था। अदालत ने इस मामले को जघन्य तो माना, लेकिन दुर्लभतम यानी रेयरेस्ट ऑफ द रेयर नहीं माना, इसलिए दोषी को मृत्युदंड न देकर मरने तक उम्रकैद दी गई है। हालांकि प.बंगाल सरकार ने अब कलकत्ता हाईकोर्ट में उम्रकैद को सही नहीं मानते हुए दोषी को फांसी देने के लिए याचिका दायर की है, जो मंजूर तो कर ली गई है, लेकिन इस पर सुनवाई कब होगी, यह अभी तय नहीं है। वहीं पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा- मुझे पूरा विश्वास है कि यह रेयरेस्ट ऑफ रेयर मामला है, जिसके लिए मौत की सजा मिलनी चाहिए।कोर्ट यह कैसे कह सकता है कि यह दुर्लभतम मामला नहीं है? वहीं भाजपा ने भी इस मामले में उम्रकैद मिलने पर अपनी नाराजगी जताई और इसके लिए ममता सरकार को कटघरे में खड़ा किया। जबकि भाजपा यह जानती है कि मामले की पूरी जांच सीबीआई की निगरानी में हुई और उसके द्वारा पेश तथ्यों और सबूतों के आधार पर ही दोषी को सजा दी गई है। अगर भाजपा को आपत्ति दर्ज करनी ही है तो उसे फिर सीबीआई पर भी सवाल उठाने चाहिए। लेकिन ऐसा लगता है कि यहां न्याय से अधिक राजनीतिक लाभ लेने का खेल चल रहा है। वैसे पीड़िता के परिजन भी इस फैसले से निराश हैं और उन्होंने भी बड़ी अदालत में याचिका दायर करने का फैसला किया है।सियालदह अदालत ने दोषी को सजा के साथ-साथ पीड़िता के परिवार को मुआवजा देने का भी आदेश दिया है। अदालत ने डॉक्टर की मौत के लिए 10 लाख और बलात्कार के लिए 7 लाख मुआवजा तय किया। इस दौरान कोर्ट में मौजूद ट्रेनी डॉक्टर के माता-पिता ने हाथ जोड़कर कहा कि हमें मुआवजा नहीं, न्याय चाहिए। इस पर जज ने कहा- मैंने कानून के मुताबिक यह मुआवजा तय किया है। आप इसका इस्तेमाल चाहे जैसे कर सकते हैं। इस रकम को अपनी बेटी के बलात्कार और हत्या के मुआवजे के तौर पर मत देखिए।बात सही है कि इस जघन्य अपराध का कोई मुआवजा तय ही नहीं हो सकता, फिर भी अदालत ने कानून के दायरे में जो उचित था, वैसा फैसला सुनाया। पीड़िता के माता-पिता ने यह दावा भी किया है कि जांच ठीक से नहीं हुई है। कई लोगों को बचाया गया है। इस बारे में अदालत ने भी पुलिस और अस्पताल के रवैये की आलोचना की है। अस्पताल की तरफ से घटना की जानकारी देने में देर की गई और उसके बाद पुलिस ने केस दाखिल करने में देर की। दो पुलिसकर्मियों के बयान के आधार पर अदालत ने टिप्पणी की, %इस बात में कोई शक नहीं कि अधिकारियों द्वारा ये कोशिश की जा रही थी कि इस मौत को आत्महत्या दिखाया जाए ताकि अस्पताल पर कोई बुरा असर न पड़े। जज ने अपने फैसले में कहा, चूंकि जूनियर डॉक्टरों ने विरोध करना शुरू कर दिया था, इसलिए ये ग़ैर क़ानूनी सपना पूरा नहीं हो पाया।अदालत की यह टिप्पणी काफी गंभीर है, क्योंकि समाज में अनेक महिलाएं ताउम्र केवल इसलिए नाइंसाफी का शिकार बनी रहती हैं क्योंकि किसी न किसी वजह से दोषी को बचाने या मामले को दबाने की कोशिश की जाती है। इसमें अगर राजनीति का खेल शुरु हो जाता है, तब तो बात और बिगड़ जाती है। आर जी कर मामले में ही देश ने देखा कि किस तरह भाजपा ने इसे ममता बनर्जी सरकार पर निशाना साधने के लिए इस्तेमाल किया। इससे पहले निर्भया मामले में भी भाजपा का रवैया ऐसा ही था। लेकिन कठुआ, हाथरस, उन्नाव जैसे मामलों में भाजपा का रवैया दूसरा ही रहा। मणिपुर की घटना पर तो अंतरराष्ट्रीय मंचों से आलोचना हुई, लेकिन फिर भी भाजपा की तथाकथित डबल इंजन सरकार नाकारा साबित हुई। यही हश्र महिला पहलवानों के संघर्ष का भी रहा, जो यौन उत्पीड़न की शिकायत करती रहीं, मगर आरोपी सत्ताश्रय में मजे से रहे।आर जी कर मामले के दोषी संजय रॉय को चाहे मरने तक जेल में रहना पड़े या उसे बड़ी अदालतों से मौत की सजा मिल जाए, इससे देश में महिलाओं के साथ अत्याचार रुकेगा,

ट्रम्प के न बुलाये जाने के लिये मोदी खुद ही जिम्मेदार हैं

अमेरिका के नये बने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प को लेकर इसी तरह की आशंकाएं हैं

अमेरिका के नये बने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प को लेकर इसी तरह की आशंकाएं हैं। उनकी वाणी जैसी स्वच्छंद है, कार्यप्रणाली वैसी ही उच्छृंखल। 4 साल के अंतराल के बाद फिर से लौटे ट्रम्प जब दुनिया के सबसे ताकतवर राष्ट्रपति के पद की सोमवार को वाशिंगटन डीसी में शपथ ले रहे थे तो उनके अतिथियों के रूप में उन्हीं के जैसे अनेक दक्षिणपंथी नेता मौजूद थे।एक समय था जब किसी भी देश के राष्ट्राध्यक्ष, खासकर बड़े देशों के राष्ट्रपति-प्रधानमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह में कौन आमंत्रित है और कौन नहीं, यह बहुत मायने नहीं रखता था। देखा यह जाता था कि किस व्यक्ति के सर्वोच्च पद पर आसीन होने से किस तरह की आंतरिक व बाह्य नीति अपनाई जायेगी? हाल के वर्षों में शपथ ग्रहण समारोह एक इवेंट बन गया है जो घरेलू मोर्चे के साथ-साथ विदेशी मित्र हों या शत्रु अथवा तटस्थ देश-सभी को साधने का अवसर माना जाने लगा है। जब से यह परिपाटी चल पड़ी है, तब से मेहमानों की सूची इस मौके की सबसे अधिक गौरपूर्वक देखे जाने वाली बात बन गयी है। अतिथियों का चयन शपथ लेने वाले व्यक्ति पर काफी कुछ छोड़ दिया गया है और वह इस अवसर पर कौन उपस्थित रहेगा यह तय करने के साथ ही यह संदेश भी दे देता है कि अपने कार्यकाल में वह किसके साथ कैसे सम्बन्ध निभायेगा (या निभायेगी)। देश और पार्टी की नीतियां एवं विचारधाराएं अब गौण हो चली हैं तथा ज्यादातर राष्ट्राध्यक्ष जनता को अपने बूते हांकने लगे हैं। विशेष रूप से वे शासक जिनका रवैया अपेक्षाकृत कम या अलोकतांत्रिक होता है। ऐसे शासक अपने देश की चिर-परिचित नीतियों के साथ-साथ वैश्विक संतुलन बिगाड़ने में भी सक्षम होते हैं।

अमेरिका के नये बने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प को लेकर इसी तरह की आशंकाएं हैं। उनकी वाणी जैसी स्वच्छंद है, कार्यप्रणाली वैसी ही उच्छृंखल। 4 साल के अंतराल के बाद फिर से लौटे ट्रम्प जब दुनिया के सबसे ताकतवर राष्ट्रपति के पद की सोमवार को वाशिंगटन डीसी में शपथ ले रहे थे तो उनके अतिथियों के रूप में उन्हीं के जैसे अनेक दक्षिणपंथी नेता मौजूद थे। अतिथियों के रूप में किसे बुलाना है और किसे नहीं, इसके सामान्यत- दो उद्देश्य होते हैं- एक, नयी शुरुआत करने की इच्छा की अभिव्यक्ति। याद करें 2014 में पहली बार नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री की शपथ ले रहे थे तब उन्होंने सार्क देशों के प्रमुखों को आमंत्रित किया था।

पाकिस्तान के पीएम नवाज़ शरीफ़ को भी बुलाकर मोदी ने संदेश दिया था कि वे पड़ोसी मुल्कों के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाना चाहते हैं। यह हो नहीं सका वह अलग बात है जिसके अनेक कारण हैं। दूसरे, ऐसे राष्ट्राध्यक्ष अपने जैसे राष्ट्रपतियों-प्रधानमंत्रियों का कुनबा बनाते हैं। ये मिलकर दुनिया पर राज करने की इच्छा रखते हैं या सम्मिलित गुट के रूप में अपने हितों को साधते हैं। अमेरिका और उसके जैसे बड़े देश सम्बन्ध निर्वाह में अपनी शर्तें लाद सकते हैं। वहां के राष्ट्रपति किसे बुलाते हैं किसे नहीं, इसका असर उनके अपने देशों पर कम आमंत्रित या अनामंत्रित देशों पर अधिक पड़ता है- जैसे मोदी को न बुलाये जाने पर अमेरिकियों को फर्क नहीं पड़ेगा लेकिन वह भारत में हंगामे का सबब बन गया है। मोदी नहीं बुलाये गये हैं तो यह साफ संकेत हैं कि आने वाले समय में अमेरिका को लेकर भारत की परेशानियां बढ़ सकती हैं।

पिछले एक दशक से भारत की स्थिति अंतरराष्ट्रीय पटल पर चाहे जो रही हो, लेकिन यह सच है कि मोदी ने भारत की विदेश नीति को राष्ट्रीय की बजाये अपनी व्यक्तिगत छवि निर्माण की नीति बना रखा है। वे राष्ट्राध्यक्षों के ग्रुप फोटो में कहां खड़े होते हैं, किसके साथ चाय पी रहे हैं, किसे झूला झुला रहे हैं- यह अधिक महत्वपूर्ण बना दिया गया है। इसलिये वे संसदीय परम्पराओं के अनुरूप अपनी विदेश यात्राओं की रिपोर्ट न संसद में पेश करते हैं और न ही राष्ट्रपति को देते हैं। अपने कारोबारी मित्रों को साथ लेकर घूमना और उन्हें विदेशों ठेके दिलाना तो विदेश नीति नहीं हो सकती। दो देशों के सम्बन्धों को मोदी ने व्यक्तिगत दोस्ती के प्रदर्शन का विषय बना लिया है। वे किसके गले लगते हैं, किसे अंगूठी भेंट करते हैं और किस देश में जाकर वहां का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पाते हैं, इसका उपयोग हेडलाइन मैनेजमेंट के लिये तो किया जा सकता है; या खुद को अपने लोगों के बीच देवता के रूप में स्थापित करने में भी वह उपयोगी होगा, परन्तु वह देशहित में रत्ती भर भी नहीं है। जिन लोगों के लिये मोदी विश्वगुरु हैं, वे सोचें कि आज वे अनामंत्रित क्यों हैं। दरअसल, इसका आभास ट्रम्प को होगा कि मोदी अपने देश में ही कमजोर पड़ गये हैं। भारत ने अपनी पूरी वैदेशिक नीति को मोदी के जरिये कुछ लोगों के व्यवसाय संवर्धन अथवा हथियार खरीद तक सीमित कर दिया है। अमेरिका जानता है कि फिलहाल मोदी अपनी जमीन पर ही ठीक से खड़े नहीं हो पा रहे हैं।

मोदी को यदि ट्रम्प ने नहीं बुलाया है, तो यह उनकी अपनी पराजय है। इसे भारत की हार, नाकामी या अपमान के रूप में नहीं देखा जाना चाहिये क्योंकि भारत की चिर-परिचित विदेश नीति तटस्थता की रही है। उस विदेश नीति को मोदी कभी से मटियामेट कर चुके हैं। वर्तमान दौर की यह उनकी अपनी निजी यात्राएं बन गयी है वरना हमारी विदेश नीति में न तो ताकतवर राष्ट्राध्यक्षों की चिरौरी करने की परम्परा रही है और न ही किसी भी कदम के लिये किसी शक्तिशाली राष्ट्रपति के सामने अपने सुरक्षा सलाहकार को भेजकर इस बात की सफाई देने की रही कि हमारे राष्ट्रपति ने आपके साथ युद्ध कर रहे देश के राष्ट्रपति के कंधे पर हाथ रखकर चलहकदमी क्यों की। हमारे किसी भी पूर्व प्रधानमंत्री ने अपनी विदेश यात्राओं के दौरान पार्टी या सरकार के खर्च पर विदेशी जमीन पर भीड़ नहीं जुटाई, न ही किसी के लिये नारे लगवाये कि %अबकी बार फलां-फलां की सरकार%। तमाम बड़े देशों में हमारे पीएम जाते रहे हैं और वहां की सड़कों के दोनों ओर वहीं की जनता जोश व सम्मान के साथ उनका अभिवादन करती थी- अमेरिका हो या उसका धुर विरोधी तत्कालीन सोवियत रूस। अमेरिका जान गया है कि भारत के पास अब ऐसा प्रधानमंत्री नहीं है जो अपने राजदूत को यह सुनने पर तत्काल वापस बुला लेता था कि %जो अमेरिका के साथ नहीं वह उसका दुश्मन है।% अब उसके पास ऐसा पीएम भी नहीं है जो दुनिया को कह सके कि %अमेरिका अपना सातवां बेड़ा भेजे या सत्तरवां। यह युद्ध नहीं रूकेगा।% अब तो ऐसी सरकार है जो अपने देश की सबसे बड़ी सैन्य जीत की प्रतीक बनी तस्वीर को सेना मुख्यालय से हटाती है।

ट्रम्प द्वारा एक स्वाभिमानी भारत को नहीं वरन उन मोदी को %नहीं% बुलाया गया है जो हर राष्ट्राध्यक्ष से निजी मित्रता के दावे करते हैं, किसी के आने पर उन्हें गंगा आरती दिखाते हैं तो किसी के आगमन पर अपने ही देशवासियों की बस्तियों के आगे रातों-रात दीवारें खड़ी कर देते हैं ताकि उनकी गरीबी न दिख सके। फिर, भारतीय प्रधानमंत्री को न बुलाना बहुत स्वाभाविक है क्योंकि कोई भी पूंजीवादी व्यक्ति अथवा देश उसी से लगाव रखता है जिसमें उसे फायदा दिखे। उसके हितों का विस्तार हो। आज अमेरिका को भारत के मुकाबले चीन से मित्रता में अधिक लाभ दिख रहा है सो ट्रम्प ने मोदी को नज़रंदाज कर दिया।देश को आगे कीजिये मोदी जी! आप ताकतवर अपने बल पर नहीं वरन भारत के भरोसे हैं। जवाहर लाल नेहरू से लेकर अटल बिहारी वाजपेयी से होते हुए मनमोहन सिंह सभी की अपनी शख्सियतें थीं लेकिन किसी ने खुद को देश से बड़ा नहीं बताया। देश को बड़ा कीजिये- आप अपने आप बड़े बन जायेंगे!

बच्चों में रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने के ये हैं बेस्ट तरीके

हमारी शिक्षा, लाइफ और करियर में क्रिएटिविटी एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लेकिन यह बात छोटे बच्चे को आप कैसे समझाएं? अब समर वेकेशन शुरू हो चुकी है और ऐसे में पैरेंट्स यही सोचते हैं कि इन छुट्टियों को बच्चों के लिए कैसे प्रोडक्टिव बनाएं।

क्रिएटिविटी एक ऐसी चीज है, जो आपको जीवन में और बेहतर बनाता है। हालांकि यह एक गलत धारणा है कि रचनात्मकता एक जन्मजात प्रतिभा है। इसमें आप खूब सारे आइडियाज और इमेजिनेशन का यूज करते हैं और कुछ शानदार आर्ट के साथ आते हैं। हमारी शिक्षा, लाइफ और करियर में क्रिएटिविटी एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लेकिन यह बात छोटे बच्चे को आप कैसे समझाएं? अब समर वेकेशन शुरू हो चुकी है और ऐसे में पैरेंट्स यही सोचते हैं कि इन छुट्टियों को बच्चों के लिए कैसे प्रोडक्टिव बनाएं। अपने बच्चों को क्रिएटिव थिंकिंग के लिए कैसे प्रोत्साहित करें यह हर मां-बाप सोचता है।

सीनियर क्लीनिकल साइकोलॉजिस्ट कहती हैं, 'बच्चों को नई चीजों को आजमाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। उन्हें उन चीजों के बारे में बताएं और वो चीजें करने के लिए प्रेरित करें, जो उनकी स्कूल करिकुलम का हिस्सा न हों। उनके साथ डॉक्यूमेंट्री देखें और उनसे डॉक्यूमेंट्री के बारे में पूछें।' आइए एक्सपर्ट से जानें कि बच्चों को और किन तरीकों से प्रेरित किया जा सकता है।

बच्चों को सवाल पूछना सिखाएं

बच्चों में रचनात्मक सोच विकसित करने का एक मेन तरीका यह है कि उन्हें हमेशा सवाल करते रहने के लिए प्रेरित करें ।जब भी आप उनके साथ समय बिता रहे हों तो उनसे सवाल पूछें। जैसे आप उनसे छोटे-छोटे सवाल कर सकते हैं। ऐसे में उनके मन में जिज्ञासा बनेगी और वह नई चीजों के बारे में समझने की कोशिश करेंगे। इससे उनके कल्पनाशील कौशल में वृद्धि होगी और समस्या को सुलझाने की क्षमता विकसित होगी।

अच्छी डॉक्यूमेंट्रीज दिखाएं

एक शॉर्ट डॉक्यूमेंट्री स्टोरी स्टूडेंट्स की लिटरेसी को सोर्स, स्वयं से और दुनिया से जुड़ाव के साथ बढ़ाने में मदद करती है। यह न केवल दुनिया को समझने और उससे जुड़ने का अवसर प्रदान करती हैं, बल्कि हमारे आसपास कई चीजों को समझने का भी एक अच्छा तरीका है। अपने बच्चों के साथ कोई भी डॉक्यूमेंट्रीज देखें तो उसकी चर्चा करें। उन्होंने इससे क्या सीखा और क्या समझा जानने की कोशिश करें।

उनके साथ क्विज और पजल खेलें

क्विज और पजल जैसे गेम बच्चों के दिमागी विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। पजल आपके बच्चे की समस्या-समाधान और क्रिटिकल थिंकिंग स्किल को विकसित करती हैं, जो बाद में जीवन में अन्य स्किल की महारत के लिए महत्वपूर्ण होती हैं। पजल्स बच्चों को पैटर्न रिकग्निशन, मेमोरी और ग्रॉस और फाइन मोटर स्किल दोनों में मदद कर सकती हैं। इसलिए उनके साथ पजल खेलें।

आउटडोर गेम खिलाएं

अपने बच्चों को घर में रहने के लिए ही न कहें। उन्हें बाहर निकालें और कई फन एक्टिविटीज में उन्हें शामिल होने के लिए कहें। बच्चों के साथ आउटडोर गेम्स खेलें। ऐसे में उनकी एक्सरसाइज भी होगी और वे कुछ नया भी सीखेंगे। आप उन्हें तैराकी करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। किसी गेम में जैसे क्रिकेट, फुटबॉल, बैडमिंटन आदि जैसे खेलों में शामिल होने के लिए कह सकते हैं।

सामाजिक और भावनात्मक कौशल सिखाएं

अपने बच्चों सामाजिक और भावनात्मक कौशल सिखाना भी बहुत जरूरी है। उन्हें पशु आश्रयों और वृद्धाश्रमों जैसी जगहों पर ले जाएं और स्वयं सेवा का महत्व सिखाएं। जब बच्चे ऐसा करेंगे तो वह औरों के प्रति भी सेंसेटिव अप्रोच रखने में सक्षम होंगे। ऐसी जगहों पर वे महत्वपूर्ण सामाजिक और भावनात्मक कौशल सीख सकेंगे और साथ ही समाज में भी योगदान दे सकेंगे।

नींद में न करें लापरवाही

इन सबके बाद सबसे महत्वपूर्ण चीज है कि आपका बच्चा पूरी और अच्छी नींद ले। अच्छी नींद का मतलब है कि उसके दिमाग को बेहतर आइडियाज उत्पन्न करने के लिए और नई चीजों पर काम करने के लिए समय मिलेगा। इनोवेटिव आइडियाज तभी आएंगे जब उसके दिमाग को शांति मिलेगी। बाकी एक्टिविटी के साथ उसकी नींद का भी पूरा ध्यान दें।

घर में लगाएं ये फूल तनाव होगा दूर, भीनी-भीनी खुशबू से आएंगी जीवन में खुशियां

आजकल के भागदौड़ भरे जीवन में सुकुन के दो पल चुराना बेहद मुश्किल हो गया है। बिजी लाइफ स्टाइल की वजह से लोग अक्सर तनाव में रहते हैं। ऐसे में इस तनाव को दूर करने के लिए अधिकतर लोग शहर से दूर बाहर किसी हिल स्टेशन पर जाना पसंद करते हैं। लेकिन हर कोई टेंशन कम करने के लिए हिल स्टेशन नहीं जा सकते हैं। लेकिन इसका ये मतलब नहीं है कि आप तनाव में रहें।

आप जीवन की टेंशन को घर में ही कम कर सकते हैं। आपके दिमाग में भी यहीं सवाल आया होगा कि कैसे टेंशन कम होगी? घबराइए मत हम आपकी सारी उलझन को दूर कर देंगे। इस लेख में हम आपको कुछ फूल के बारे में बताएंगे, जो आपके घर में खुशियां लेकर आएंगे। साथ ही यह फूल घर के साथ-साथ जीवन को भी महका देंगे।

चमेली

फूल न केवल घर की सुंदरता को बढ़ाते हैं बल्कि घर का वातावरण भी शुद्ध होता है। ऐसे में आप अपने घर में चमेली के फूल का पौधा लगा सकते हैं। चमेली का फूल अक्सर हर घर में मिल जाता है। इस फूल से पॉजिटिव एनर्जी मिलती है। फूल की भीनी-भीनी खुशबू आपके घर को खुशनुमा माहौल देगी। कहा जाता है कि चमेली का पौधा लगाने से घर में खुशियां आती हैं।

कमल

हिंदू धर्म में कमल का फूल बेहद खास माना जाता है। यह फूल मां लक्ष्मी को बेहद प्रिय है। कहा जाता है कि इस फूल को लगाने से घर में लक्ष्मी और सुख-समृद्धि आती है। घर में इस पौधे को लगाना बेहद शुभ माना जाता है।

मोगरा का फूल

ऐसा कहा जाता है कि घर में मोगरा पौधा लगाने से नकारात्मक ऊर्जा कम हो जाती है। मोगरे के फूल गर्मियों के मौसम में खिलता है। इस फूल की भीनी-भीनी खुशबू आपके तनाव को कम कर देंगे। मोगरा के फूल की खुशबू से घर आपके मन को तरोताजा कर देगी।

गुलाब

गुलाब का फूल न केवल दिखने में खूबसूरत है बल्कि यह फूल औषधीय गुण से भरपूर है। गुलाब की खुशबू तनाव को दूर करने में मदद करती है, साथ ही इससे रिश्ते की मिठास बनी रहती हैं।

चम्पा

चम्पा फूल को लगाने से घर का वातावरण शुद्ध होता है। हल्के पीले और सफेद रंग के ये चम्पा के फूल बहुत ही खूबसूरत होते हैं। इस फूल को लगाने से घर में सौभाग्य आता है।

गुड़हल का फूल

गुड़हल के फूल का उपयोग पूजा-पाठ में किया जाता है। भगवान गणेश को लाल गुड़हल के फूल बेहद पसंद है। ऐसा माना जाता है कि इस फूल को घर में लगाने से सकारात्मक ऊर्जा आती है। लाल गुड़हल के फूल को आप भगवान बजरंगबली को भी अर्पित कर सकते हैं।

पारिजात

ऐसा माना जाता है कि पारिजात का फूल लगाने से घर में सुख-शांति बनी रहती है। यह फूल रात के समय में खिलते हैं सुबह पेड़ से टूटकर गिर जाते हैं। इस फूल की खुशबू से पूरा घर महक जाता है। सुबह-सुबह घर में भीनी-भीनी खुशबू से घर में सकारात्मक ऊर्जा बनी रहती हैं।

पारिजात के फूल को हरसिंगार के नाम से भी जाना जाता है। इस फूल की खुशबू से तनाव कम हो जाता है।

फर्नीचर हर घर की जरूरत है। आमतौर पर, लोग अपने घर के लिए ऐसे फर्नीचर खरीदना पसंद करते हैं, जो देखने में आकर्षक भी हों और बेहद अफोर्डे बल भी हों। इस लिहाज से प्लास्टिक के फर्नीचर का चयन करना एक अच्छा ऑप्शन माना जाता है। इनमें आपको डिजाइन से लेकर साइज व कलर आदि में एक बिग वैरायटी देखने को मिलेगी।

घर में प्लास्टिक फर्नीचर रखते समय वास्तु के इन टिप्स का रखें ध्यान

यूं तो प्लास्टिक के फर्नीचर का इस्तेमाल करने में कोई समस्या नहीं है। लेकिन अगर आप प्लास्टिक के फर्नीचर को घर में जगह दे रही हैं, तो आपको वास्तु के कुछ नियमों का ध्यान रखना चाहिए। दरअसल, प्लास्टिक के फर्नीचर को अगर घर में सही तरह से ना रखा जाए तो यह कभी-कभी नकारात्मकता भी पैदा कर सकते हैं। तो चलिए आज इस लेख में आपको वास्तुशास्त्री डॉ. आनंद भारद्वाज बता रहे हैं कि घर में प्लास्टिक के फर्नीचर रखते समय किन वास्तु टिप्स का ख्याल रखा जाना चाहिए

कलर का रखें ख्याल

जब आप प्लास्टिक के फर्नीचर का इस्तेमाल कर रही हैं, तो आपको इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि उस फर्नीचर का कलर कैसा है। आमतौर पर, प्लास्टिक के फर्नीचर के लिए क्रीम, व्हाइट, येलो और लाइट कलर का इस्तेमाल करना काफी अच्छा माना जाता है। कभी भी ब्लैक कलर के प्लास्टिक फर्नीचर को घर में नहीं रखना चाहिए। वहीं, आजकल ऐसे प्लास्टिक फर्नीचर भी अवेलेबल हैं, जिसमें एक साथ कई कलर मिक्स होते हैं, बेहतर होगा कि आप उसे भी अवॉयड करें।

जब करें स्टडी

आजकल बच्चों की स्टडी टेबल और चेयर प्लास्टिक की मिलती हैं, जिन्हें लोग खरीदना काफी पसंद करते हैं। लेकिन वास्तु के अनुसार बच्चों की स्टडी टेबल और चेयर प्लास्टिक की नहीं होनी चाहिए। इससे बच्चे को पढ़ाई में ध्यान लगाने में समस्या पैदा हो सकती है। बेहतर होगा कि आप उनके लिए लकड़ी से बने फर्नीचर को प्राथमिकता दें। हालांकि, आप किसी कारणवश प्लास्टिक फर्नीचर का इस्तेमाल कर रहे हैं तो उस पर कोई कपड़ा बिछा दें।

जब करें पूजा

ऐसे कई लोग होते हैं, जिन्हें घुटनों की समस्या होती है तो वह कुर्सी पर बैठकर पूजा करते हैं। कोशिश करें कि आप जिस कुर्सी का इस्तेमाल पूजा स्थान में कर रहे हैं,, वह प्लास्टिक की ना हो। लेकिन फिर भी अगर आप ऐसा कर रहे हैं, तो कुर्सी पर कोई कपड़ा अवश्य बिछाएं। आपको यह विशेष रूप से ध्यान रखना है कि पूजा करते समय आप प्लास्टिक के डायरेक्ट संपर्क में ना रहें।

लॉन में करें इस्तेमाल

यूं तो प्लास्टिक के फर्नीचर को लोग घर के किसी भी हिस्से में इस्तेमाल करते हैं। लेकिन आमतौर पर इस तरह के फर्नीचर को ऐसी जगह रखने की सलाह दी जाती है, जहां पर आप फुर्सत के पल बिताते हों और कोई बहुत आवश्यक या सेंसेटिव काम ना करते हों। इस लिहाज से प्लास्टिक फर्नीचर को घर के पीछे लॉन या फिर सामने खुले आंगन, व छत आदि पर रखना अधिक अच्छा माना जाता है।

प्लास्टिक का ना हो बेड

कुछ समय पहले तक बेड बनाते समय केवल लकड़ी का ही इस्तेमाल किया जाता था, लेकिन अब मार्केट में प्लास्टिक के बेड भी मिलने लगे हैं। हालांकि, कभी भी घर में प्लास्टिक के बेड का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। बेड एक ऐसा फर्नीचर है, जिस पर आप एक लंबा समय बिताते हैं। ऐसे में प्लास्टिक की एनर्जी आपकी बॉडी की एनर्जी में नकारात्मक परिवर्तन ला सकती है। बेड के लिए हमेशा लकड़ी के इस्तेमाल को ही प्राथमिकता दें।

1 नहीं बल्कि 3 तरीकों से उगाया जा सकता है फ्रेश हरा धनिया

भारतीय घरों में खाने का जायका बढ़ाने के लिए हरा धनिया का इस्तेमाल किया जाता है। इसलिए हर रसोई में खाने में स्वाद और फ्लेवर के लिए फ्रेश धनिया गार्निश के लिए डाला जाता है। हालांकि, हर वक्त फ्रेश धनिया लाना थोड़ा मुश्किल हो जाता है। लेकिन अगर हम आपसे कहें कि आप घर में ही फ्रेश धनिया उगा सकती हैं और वो भी 3 तरीकों से। जी हां, आपने सही पढ़ क्योंकि आज आप इस लेख में जानने वाले हैं घर पर आसानी से हरा धनिया कैसे उगाया जा सकता है

सीड्स से उगाएं हरा धनिया

आप अपने गार्डन में हरा धनिया बीज की सहायता से लगा सकती हैं।(सेहत के लिए वरदान है हरा धनिया, डाइट में जरूर करें शामिल) आपको किसी भी प्लांट की शॉप से बीज आसानी से मिल जाएंगे, जिसे आप किसी गमले, कंटेनर या फिर प्लास्टिक की बोतल में मिट्टी की मदद से पौधा लगा सकती हैं। हालांकि, पौधे की ग्रोथ तभी होगी जब आप इसका नियमित रूप से ध्यान रखेंगी जैसे- आप मिट्टी की नमी पर ध्यान दें, पौधे में नियमित रूप से पानी डालें।

कटिंग से उगाएं हरा धनिया

आप अपने किचन में भी हरा धनिया का पौधा लगा सकती हैं। इसके लिए, आपको बस धनिये के पत्ते की जरूरत होगी। हालांकि, इसके पौधे को सही तरीके से लगाने के लिए आपको मिट्टी सही तरीके से तैयार करनी होगी। साथ ही, आपको बाजार से गमला खरीदकर लाना होगा और इसमें मिट्टी और खाद की मदद से कटिंग लगानी होगी।

हरा धनिया की जड़ का करें इस्तेमाल

बहुत-सी महिलाएं हरा धनिये की जड़ को बेकार समझकर फेंक देते हैं। लेकिन क्या आपको पता है कि आप इसकी जड़ की सहायता से फ्रेश हरा धनिया भी उगा सकती हैं। कहा जाता है कि जड़ से उगाया गया पौधा बीज से ज्यादा अच्छा होता है। साथ ही, इसकी ग्रोथ भी अच्छी होती हैं। इसके लिए बस आपको मिट्टी में जड़ को बोना है और नियमित तौर पर पानी डालना है।

धनिया उगाने का आसान तरीका

आवश्यक सामग्री- कंटेनर/गमला/ प्लास्टिक की बोतल, मिट्टी और खाद, कटिंग/बीज, पानी

विधि - पौधा लगाने के लिए सबसे पहले आपको गमले का चुनाव करना होगा। आप छोटा गमला सेलेक्ट कर सकती हैं। गमले का चुनाव करने के बाद आप इसमें मिट्टी डालें और अच्छी तरह से मिला लें। आप पौधे की मिट्टी तैयार करते समय 50% कोको-पीट और 50% वर्मीकम्पोस्ट का इस्तेमाल कर सकती हैं।

मिट्टी तैयार करने के बाद आप इसमें पौधे की कटिंग, बीज को अच्छी तरह से लगा दें। कटिंग या बीज को लगाने के बाद आप पौधे में पानी डालें।

बस आपका पौधा पूरी तरह से तैयार है। आप इसका नियमित रूप से ध्यान रखें और फ्रेश हरा धनिया आने का इंतजार करें।

मिल सकती है फूलों-सी कोमल काया

तेज रसायनयुक्त उत्पाद आपकी त्वचा पर रूखापन और खिंचाव पैदा करते हैं। कृत्रिम खुशबूदार उत्पाद भी आपकी त्वचा के लिए हानिकारक हो सकते हैं। इसलिए आप अपनी त्वचा की बेहतर देखभाल के लिए अधिक से अधिक प्राकृतिक चीजों का इस्तेमाल करें, साथ ही यहां दिए जा रहे टिप्स पर भी ध्यान रखें।

साफ रखें अपनी त्वचा

आपकी त्वचा साफ रहे इसके लिए आवश्यक है त्वचा को साफ रखना। अत्यधिक रसायनयुक्त क्रीम या प्रसाधनों के इस्तेमाल से बचें। हफ्ते में एक बार गुनगुने पानी से स्नान त्वचा के लिए फायदेमंद होता है। घरेलू फेसपैक से त्वचा को दें नया निखार। इसके लिए दो चम्मच गेहूं के आटे में एक चम्मच बादाम रोगन, एक चम्मच गुलाबजल मिलाकर पेस्ट बना लें और उसे चेहरे पर दस मिनट तक लगाएं। फिर हलके हाथों से मलकर छुडाएं। ऐसा हफ्ते में दो बार करें। इससे आपकी त्वचा कांतिमय हो जाएगी और उसे बाहरी व आंतरिक नमी भी मिलेगी।

तनाव से रहें दूर

तनाव कई प्रकार के होते हैं। शारीरिक तनाव तब होता है, जब आप अत्यधिक कार्य करती हैं और कुछ समय बाद आपका शरीर थक जाता है। इसका सीधा असर आपकी त्वचा पर पडता है, क्योंकि इससे आपकी त्वचा के लिए जरूरी नमी खत्म होने लगती है और त्वचा रूखी और बेजान नजर आने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि आप अपने शरीर को आवश्यकतानुसार आराम करने का भी मौका दें। जब आप तनाव में होती हैं तो उसका असर भी आपकी त्वचा पर पडता है। जो स्त्रियां अधिक तनाव में रहती हैं उनकी त्वचा उम्र से पहले झुर्रियों युक्त, रूखी, बेजान हो जाती है। जहां तक हो छोटे-छोटे, अनावश्यक तनावों को मन में पाले न रहें। उनसे जितनी जल्दी हो मुक्ति पाने का प्रयास करें। आप अगर खुश रहेंगी तो आपका चेहरा भी खिला-खिला नजर आएगा।

बचें मानसिक तनाव से

यह तो सभी को पता है कि चिंता चिता के समान होती है। लेकिन इस बात की जानकारी कम ही लोगों को होगी कि अत्यधिक चिंता करने से आपकी त्वचा को नमी प्रदान करने वाली ग्रंथियों का संतुलन भी बिगड जाता है, जिसका परिणाम तुरंत आपकी त्वचा पर दिखता है जैसे-झुर्रियां, रूखापन और लकीरें। मानसिक तनाव से बचने के लिए जरूरी है कि आप चीजों को सकारात्मक रूप से लें। अधिक तनाव आपके स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक है।

करें भावनाओं पर नियंत्रण

वैवाहिक मतभेद या किसी अपने से अलग होने का गम, प्यार में धोखा खाने से आप भावनात्मक रूप से तनावग्रस्त हो जाती हैं। इसका प्रभाव आपकी त्वचा पर साफ दिखाई देता है। आप खुद ही महसूस करें कि कई बार गुस्से या शर्म से आपका चेहरा लाल हो जाता है। देखिए कि कैसे भावनाओं का सीधा असर आपके चेहरे पर पडता है। बहुत अधिक तनावग्रस्त होने पर आपकी त्वचा कई बार फटने लगती है या फिर जो स्त्रियां हमेशा तनाव में रहती हैं उनके माथे और आंखों के आसपास लकीरें बन जाती हैं। इन लकीरों का उम्र से कोई वास्ता नहीं होता है। ऐसे तनाव से बचने के लिए मेडिटेशन या ध्यान एक अच्छा उपाय है। इसे अपनी आदत बनाएं। सिर्फ एक दिन-दो दिन योग या मेडिटेशन करने भर से ही तनाव कम नहीं होता। सुबह उठकर टहलें। हरे-भरे, रंगीन फूलों से लदे पेड आपमें जीने की नई ललक और ऊर्जा भर देंगे और आपका मन हलका हो जाएगा।

वरदान है पानी

खूब पानी पिएं। सौंदर्य विशेषज्ञा मीनाक्षी दत्त और वंदना लूथरा का कहना है कि पानी त्वचा के लिए वरदान है। पानी में कुछ मसालों का प्रयोग करके उसे और भी फायदेमंद बनाया जा सकता है। जिसका एक आसान तरीका यह है कि पानी उबालें और उसे एक जार में डाल दें। अब उसमें काली मिर्च पाउडर, गुलाब की 5-6 पंखुडियां और एक चुटकी इलायची पाउडर डालकर जार ढंक दें। फिर इसे थोडा-थोडा दिन में कई बार पिएं। ठंडाई का भी सेवन करें।

मालिश दे युवा त्वचा

तेल मालिश से त्वचा स्वस्थ और लंबे समय तक युवा रहती है। बेहतर परिणाम के लिए नहाने से पूर्व रोजाना हर्बल तेल से अपनी त्वचा की मालिश करें। अपने मनपसंद बॉडी ऑयल से नहाने के 45 मिनट पूर्व तेल मालिश करें। फिर पानी में रोज एसेंशियल ऑयल डालकर नहाएं।

सीखें खुश रहना

जब आप अच्छी-अच्छी बातें सोचती हैं और खुश रहती हैं तो आपके चेहरे पर एक अलग चमक और रौनक आ जाती है। खुश रहने से त्वचा में एकत्रित नमी का संतुलन बना रहने के साथ ही रक्तसंचार भी सुचारु रूप से होता है। खुलकर हंसना एक अच्छी एक्सरसाइज भी है। आप खुद ही आजमाकर देख लीजिए।

अपने लिए निकालें समय

अपने व्यस्त जीवन में अपने लिए समय निकालना भी बेहद जरूरी है। हफ्ते में कोई एक दिन ऐसा निकालें जो सिर्फ आपके नाम हो। इस दिन आप अपने हाथों, पैरों और त्वचा की संपूर्ण सफाई के लिए कुछ घरेलू पैक बनाएं। सौंदर्य विशेषज्ञा सुपर्णा त्रिखा कहती हैं कि अगर आपके पास ज्यादा समय न हो तो कोई एक गूदेदार मौसमी फल को मैश करके त्वचा पर हलके हाथों से कुछ देर स्क्रब करें। फिर ऐसे ही छोड दें। फिर ठंडे पानी धोकर पोंछ लें। इसी प्रकार हाथों और पैरों का सौंदर्य बढाने के लिए हलके गर्म पानी में कुछ बूंदें ग्लिसरीन और आधा चम्मच पिसी फिटकरी मिलाकर अपने हाथों और पैरों को उसमें डुबोएं। फिर नीबू के छिलके से कोहनियों को अच्छी तरह साफ करें। साफ पानी से धोकर सुखा लें। फिर बॉडी क्रीम लगाएं। अगर आप हफ्ते में एक बार भी ऐसा करती हैं तो त्वचा के लिए जरूरी पोषण आसानी से मिल जाएगा। ऐसे ही कुछ आसान तरीके अपनाकर आप अपनी त्वचा ही नहीं, बल्कि तन और मन को स्वस्थ रख सकती हैं।

कुकुम्बर सबमरीन

सामग्री : 5 ककड़ी, 200 ग्राम पनीर कद्दूकस किया हुआ, 1 छोटी गाजर कद्दूकस की हुई, 1 शिमला मिर्च, 1 बारीक कटा हुआ टमाटर, नमक व कालीमिर्च पाउडर स्वादानुसार।

विधि : ककड़ी को छीलकर बीच में से लंबाई में काटकर उसके दो टुकड़े कर लें और अंदर का गूदा निकाल लें। अब ककड़ी का गूदा पनीर, कटी हुई शिमला मिर्च, टमाटर व गाजर- इन सबको मिला लें। नमक व कालीमिर्च डालें और फिर इस मिश्रण को ककड़ी में भर दें।

हेयर स्टाइल से जगाएं आत्मविश्वास

बाल चाहे किसी भी प्रकार के हों, उनका सुंदर और स्वस्थ होना आपमें आत्मविश्वास पैदा करता है। सही ढंग से संवारे गए बाल भी आपको बेहतर रूप प्रदान करते हैं। शर्त यह है कि वह आपके व्यक्तित्व पर सूट करते हों। कैसा हेयर स्टाइल चलन में है, इसे लेकर परेशान होने से बेहतर होगा कि ऐसा हेयर स्टाइल अपनाएं, जो आपके व्यक्तित्व के अनुकूल हो और आप जिसे संभाल व संवार सकें। कोई नया स्टाइल तभी अपनाएं जब आप उसे आत्मविश्वास के साथ रख सकें।

- बालों के स्टाइल के लिए यह नहीं कहा जा सकता है कि यही तीन-चार प्रकार के स्टाइल चलन में हैं। हर तरह के स्टाइल आज चलन में हैं। आप अपने बाल कैसे संवारें, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह आपके सौंदर्य को बढा रहा है या फिर घटा रहा है।
- स्ट्रेट बाल आजकल काफी पसंद किए जा रहे हैं। इसके लिए आप सेमी या परमानेंट स्ट्रेटनंग करा सकती हैं। इसके बाद बालों की विशेष देखभाल करनी होती है। दरअसल, बालों में किसी भी तरह का केमिकल इस्तेमाल होने से वे कमजोर और पहले से अधिक रूखे हो जाते हैं। उनकी कंडीशनिंग बहुत आवश्यक होती है।
- हलके घुंघराले बालों को खुला छोडा जा सकता है। यह स्टाइल वेस्टर्न आउट फिट्स पर जंचता है।
- बाल लंबे और सीधे हों तो उन्हें खुला भी छोड सकती हैं या फिर पोनी भी बना सकती हैं।
- शाम के किसी कार्यक्रम के लिए फ्रेंच बन भी अच्छा लगता है।

बिंदास आर्टिफिशियल कड़े

आजकल आर्टिफिशल कड़ें महिलाओं को काफी लुभा रहे हैं। अब ये हर रंग हर डिजाइन में मार्केट में उपलब्ध है, जिन्हें आप अपने ड्रेस को साथ मैचिंग कर पहन सकती हैं। बेशक सोने और हीरे के कंगन महिलाओं का पसंदीदा आभूषण रहा है, लेकिन इनकी भी महत्ता कम नहीं है। कॉलेज जानेवाली लड़कियां ही नहीं, शादीशुदा युवा महिलाएं भी आर्टिफिशल कड़ों से बिंदास लुक पाती हैं। तरह-तरह के डिजाइन, आकार व कार्विग लिए ये कड़े देखने में बेहद ट्रेंडी और लुभावने लगते हैं। विभिन्न राज्यों में बनाये जा रहे मेटल, लाख व मोती जड़ित इन कड़ों की अपनी अलग ही दुनिया है। अपनी कलाई के सौंदर्य को और भी निखारने के लिए आप भी इन्हें पहन सकती हैं। साथ ही प्रिंटेड, पेंटिंग लिए व सॉटर्न के धागों में लिपटे ये कड़े बेहद खूबसूरत लगते हैं। आपकी साड़ी या सूट से मैच करते हुए ये कड़े आपको फैशनेबल बनायेंगे, इसमें कोई शक नहीं।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ)

मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश सफल होगी। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। नवीन जिम्मेदारी बढ़ने के आसार रहेंगे। यात्रा शुभ रहेगी। अपने काम को प्राथमिकता से करें। शुभांक-3-7-9

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो)

कारोबारी काम में बाधा उभरने से मानसिक अशांति बनी रहेगी। यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा। सुविधा और समन्वय बना रहने से कामकाज में प्रगति बन जाएगी। आर्थिक हित के काम को साधने में मदद मिल जाएगी। यात्रा शुभ रहेगी। मांगलिक कार्योंक्रमों का आयोजन होगा। शुभांक-3-4-6

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा)

स्वास्थ्य लाभ में समय और धन व्यय होगा। लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं। मध्याह्न पूर्व समय आपके पक्ष का बना रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने का प्रयास होंगे। परिश्रम से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। शुभांक-3-6-9

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो)

पर-प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। कल का परिश्रम आज लाभ देगा। आलस्य का त्याग करें। कारोबारी काम में नवीन तालमेल बन जाएगा। यार-दोस्तों के साथ किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। शुभांक-5-8-9

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे)

कार्यक्षेत्र में संतोषजनक सफलता मिलेगी। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। पत्नी व संतान पक्ष से थोड़ी चिंता रहेगी। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की संभावना है। मित्रों से सावधान रहें तो ज्यादा उत्तम है। शुभांक-3-5-7

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो)

पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। खान-पान में सावधानी रखें। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। निष्ठा से किया गया कार्य पराक्रम व आत्मविश्वास बढ़ाने वाला होगा। शुभांक-3-4-8

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते)

शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। संतान पक्ष की समस्या समाप्त होगी। खान-पान में सावधानी रखें। व्यापार में प्रगति होगी। अधीनस्त लोगों से कम सहयोग मिलेगा। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। शुभांक-3-5-8

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू)

जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। व्यापार व नौकरी में स्थिति अच्छी रहेगी। आलस्य का त्याग करें। पुरुषार्थ का सहारा लें। कार्यसिद्धि होने में देर नहीं लगेगी। आर्थिक लाभ उत्तम रहेगा। शैक्षणिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। किसी मांगलिक कार्य पर वार्ता होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभांक-4-6-9

धनु (ये यो मा मी मू धा फा ढा मे)

मध्याह्न पूर्व समय आपके पक्ष का बना रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने का प्रयास होंगे। धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा। अपना काम दूसरों के सहयोग से पूरा होगा। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। शुभांक-6-7-9

मकर (भे जा जी खी खू खे खो गा गी)

समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। शत्रुपक्ष से सावधान रहें। शुभांक-5-7-9

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा)

हित के काम में आ रही बाधा मध्याह्न पश्चात दूर हो जाएगी। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंगे। साथ ही आगे के लिए रास्ता भी बन जाएगा। धार्मिक स्थलों की यात्रा का योग। दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। पूंजी निवेश सोच-समझकर करें। शुभांक-3-5-7

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची)

कहीं रुका हुआ पैसा वसूलने में मदद मिल जाएगी। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। शुभकार्यों में अड़चनें और परिवार के बुजुर्गजनों से मतभेद रहेगा। शुभांक-2-4-6

काकुरो पहेली - 1966

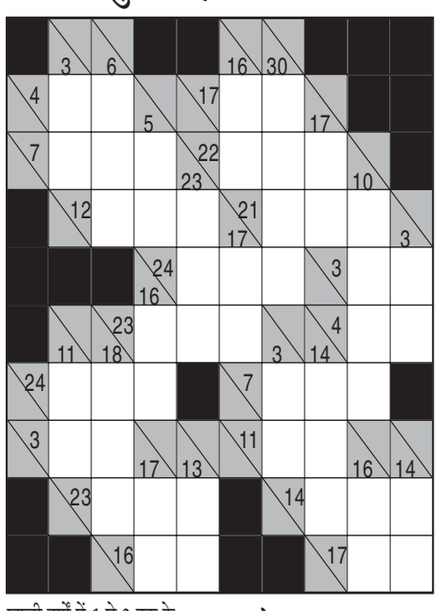

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए.किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणतः

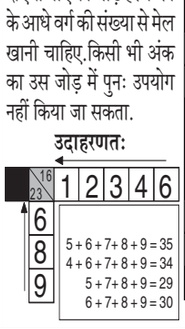

काकुरो - 1965 का हल

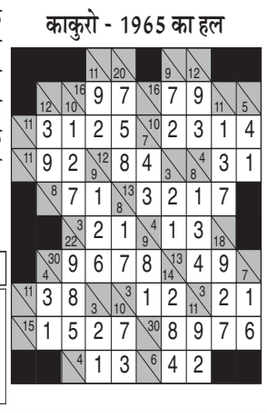

हंसी के फव्वारें

दो दोस्त आपस में बातें कर रहे थे.

एक ने कहा-'जब मैं जंगल से होकर जा रहा था,एकाएक मुझे डाकुओं ने घेर लिया. उन्होंने मेरा सब रुपया-पैसा छीन लिया.'

'मगर तुम्हारे पास तो रिवाल्वर थी?' दोस्त ने चकित होते हुए पूछा.

'था तो!'

'फिर ?'

'उस पर डाकुओं की नजर नहीं पड़ी.'दोस्त ने भोलेपन से कहा.

□ □ □

दो अफीमची बातें कर रहे थे.

एक बोला-'मेरे पिता का मकान इतना ऊंचा था कि एक बार एक बच्चा छत पर से गिरा तो जमीन तक आते-आते वह आदमी बन गया.'

दूसरा अफीमची उससे भी दो कदम आगे था. वह बोला-'मगर मेरे पिता का मकान तुम्हारे पिता के मकान से भी ऊंचा था. उसकी छत से एक बार एक बन्दर गिरा तो नीचे आते-आते वह आदमी बन गया.'

□ □ □

मालिक-'सारे मजदूर दो-दो बोरियाँ उठा कर ला रहें हैं, पर तुम एक-एक बोरी ही क्यों ला रहे हो ?'

मजदूर-'साहब वो सब आलसी हैं इसलिए दूसरा चक्कर लगाने से डरते हैं.'

□ □ □

फिल्म वर्ग पहेली- 1966

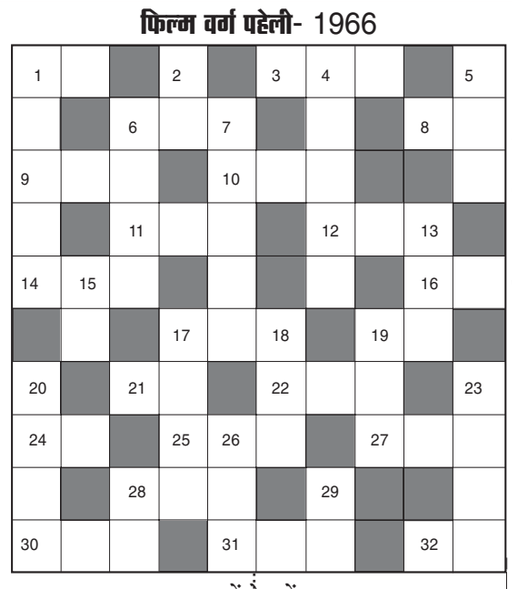

बायें से दायें:-

१. 'तेरे बिना तेरे बिना' गीत वाली फरदीन, करीना की फिल्म-२
३. 'ये प्यार यार क्या है' गीत वाली फिल्म-३
६. 'ओ सजना बरखा बहार आई' गीत किस फिल्म का है?-३
८. अमिताभ, अजय, अक्षय, ऐश्वर्या की फिल्म-२
९. 'घर आजा परदेसी' गीत वाली सनी, अमीषा की फिल्म-३
१०. अक्षय, करीना की 'तुने कहा जबसे हाँ' गीत वाली फिल्म-३
११. 'रूठे सैंया हमारे सैंया' गीत वाली धर्मेन्द्र, शर्मिला की फिल्म-३
१२. रणधीर कपूर, रेखा की फिल्म-३
१४. 'तेरी गलियों में ना रखेंगे कदम' गीत किस फिल्म का है?-३
१६. बॉबी, मनीषा, काजोल की फिल्म-२
१७. 'पल्लो लटके' गीत वाली फिल्म-३
१९. दिलीपकुमार, निम्मी की 'दिल में छुपाके' गीत वाली फिल्म-२
२१. 'जो भी कसमें' गीत वाली डीनो मोरिया, बिपाशा की फिल्म-२
२२. धर्मेन्द्र, हेमा की 'राजा ना जा' गीत वाली फिल्म-३
२४. 'रूकी रूकी सी जिंदगी' गीत वाली फिल्म-२
२५. राजकुमार, प्रिया राजवंश की फिल्म-३
२७. 'संडे की रात थी' गीत वाली गोविंदा, रवीना की फिल्म-३
२८. राहुल, दीपक, पूजा भट्ट की 'मेरे दिल का पता' गीत वाली फिल्म-३
३०. 'जिंदगी आ रहा' गीत वाली की फिल्म-३
३१. विनोद, डैनी, मौसमी की 'संसार है एक नदिया' गीत वाली फिल्म-३
३२. 'तू मेरे सामने' गीत वाली फिल्म-२

ऊपर से नीचे:-

१. अमिताभ, श्रीदेवी की 'मैं तुझे कबूल' गीत वाली फिल्म-२,३
२. 'जीवन चलने का नाम' गीत वाली मनोज, जया की फिल्म-२
४. फिल्म 'आनंद' में आनंद की शीर्षक भूमिका किसने की थी?-३,२
५. शशिकपूर, शबाना की 'दिल में तुझे बिठाके' गीत वाली फिल्म-३
६. अमरीशपुरी पर फिल्माये 'ये दुनिया एक दुल्हन' गीत वाली फिल्म-४
७. 'मंदिर में ना मस्जिद' गीत वाली फिल्म-५
१३. धर्मेन्द्र, वहीदा, जया की 'कब माने हो दिल के दीवाने' गीत वाली फिल्म-३
१५. 'हम जब सिमट' गीत वाली शशि, साधना, शर्मिला टैगोर की फिल्म-२
१७. देवानंद, गीत बाली की 'ठंडी हवाएं लहरा के आए' गीत वाली फिल्म-४
१८. नायक के रूप में अनिल कपूर की पहली फिल्म-३
१९. 'नींद कभी रहती थी' गीत वाली विश्वजीत, माला सिन्हा की फिल्म-३
२०. मनोजकुमार, नंदा की 'काले हैं तो क्या हुआ' गीत वाली फिल्म-४
२३. 'किताबें बहुत सी' गीत वाली फिल्म-४
२६. सर्वश्रेष्ठ फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त एक हिंदी फिल्म-३
२८. सनी, तब्बू, रीमा सेन की 'जो प्यार तुमने' गीत वाली फिल्म-२
२९. 'खोया है तूने' गीत वाली लक्की अली, गौरी कार्णिक की फिल्म-२

फिल्म वर्ग पहेली- 1965

सूडोकु -1966

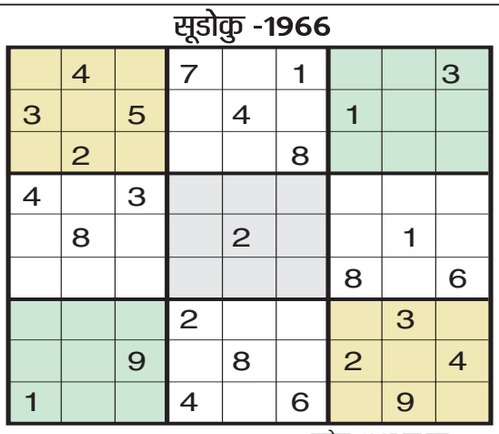

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -1965 का हल

9	2	7	4	8	6	5	3	1
5	1	6	3	2	9	4	8	7
3	4	8	7	1	5	9	6	2
8	3	4	9	5	1	2	7	6
7	6	5	8	4	2	3	1	9
1	9	2	6	3	7	8	5	4
6	7	3	2	9	8	1	4	5
2	8	1	5	7	4	6	9	3
4	5	9	1	6	3	7	2	8

शब्द पहेली - 1966

बाएँ से दाएँ

1. मरघट,कब्रिस्तान-4
3. पागल,बुद्धिहीन-4
8. भगवान,ईश्वर,खुदा-7
10. डांटना,दुत्कार-3
11. तरुण, किशोर-3
13. ओट,घूँघट-3
15. तपस्या-2
17. पराया,अजनबी-2
18. आनंद,मौज-2
19. सूर्य,भास्कर-2
21. चिंतन,सोच विचार-3
25. वेणी,फूलों की माला जो बालों में लगाते हैं-3
26. वैद्य-3
27. आभास करना-4,3
30. शिव के इस मंदिर को महमूद गजनवी ने कई बार लूटा था-2,2
31. युद्धघोष,आक्रमण, हमला-4

ऊपर से नीचे

2. कवि,गजलकार-3
4. भारत का झंडा-3
5. ईश्वर,भगवान-4
6. गुरुवार-4
7. दुर्ज,पापी,भूत-3
8. शरण,आश्रय-3
9. चांदी-3
12. उत्तराधिकारी-3
13. उत्कृष्ट,प्रधान-3
14. आंचल-3
16. कमल-3
20. रुकना,अंत, ठहराव-3
22. उत्तमता, खूबी (उर्दू-4)
23. बर्दाश्त करना, निभाना-3
24. आय, कमाई-4
25. उष्ण-3
28. पराजित करना-3
29. उपपत्नी,दूसरी पत्नी-3

शब्द पहेली - 1965 का हल

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने दो हाई कोर्ट के लिए छह जज नियुक्त किए

एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने दो हाई कोर्ट के लिए छह जजों की नियुक्ति की है। राष्ट्रपति ने तेलंगाना हाई कोर्ट के लिए चार और आंध्रप्रदेश हाई कोर्ट के लिए दो जजों की नियुक्ति की है। ये सभी न्यायिक अधिकारी हैं। राष्ट्रपति ने तेलंगाना हाई कोर्ट के लिए रेणुका यारा, नरसिंग राव नंदीकोंडा, तिरुमाला देवी और मधुसुदन राव बीआर को जस्टिस नियुक्त किया है। राष्ट्रपति ने आंध्रप्रदेश हाई कोर्ट के लिए अवधानम हरि एचएस और वाईएल राव को जस्टिस नियुक्त किया है।

बोकारो में मुठभेड़ में दो नक्सली ढेर, 15 लाख का इनामी नक्सली गिरफ्तार

बोकारो। झारखंड के बोकारो जिले में पुलिस और भाकपा माओवादी नक्सलियों के बीच मुठभेड़ हुई। इस मुठभेड़ में दो नक्सली मारे गए। मारे गए नक्सलियों की पहचान 15 लाख के इनामी नक्सली रणविजय महतो की पत्नी शांति देवी और मनोज टुडू के रूप में हुई है। दोनों गिरिडीह जिले के रहने वाले थे। डीजीपी के निर्देश पर पुलिस नक्सलियों के खिलाफ लगातार अभियान चला रही है। इसी दौरान पुलिस के वरीय अधिकारी को सूचना प्राप्त हुई कि माओवादी का रिजनल कमेटी मेंबर 15 लाख का इनामी रणविजय महतो अपने दस्ते से मिलने आने वाला है। दस्ते में साहेब राम मांझी, मनोज टुडू, शांति देवी, अरविन्द यादव और अन्य नक्सली शामिल हैं। वह पारसनाथ से बोकारो जिले के विवेक जो झुमरा और लुगु पहाड़ में भ्रमणशील है, से मिलने आने वाला है। इसके बाद पुलिस ने घेराबंदी कर कार्रवाई शुरू कर दी। इसी क्रम में 15 लाख के इनामी नक्सली रणविजय महतो को गिरफ्तार कर लिया गया। रांची से गई पुलिस की टीम ने बोकारो के चंद्रपुरा बीएड कॉलेज मोड़ से उसे पकड़ा था। खुफिया एजेंसी और झारखंड पुलिस की संयुक्त टीम ने यह कार्रवाई की। रणविजय महतो नक्सली संगठन में जोनल कमांडर रैंक का है। उसपर 15 लाख का इनाम है।

पटना से लखनऊ जा रही इंडिगो फ्लाइट की पटना एयरपोर्ट पर करायी गयी इमरजेंसी लैंडिंग

पटना। पटना से लखनऊ के लिए उड़ान भरने वाली इंडिगो की फ्लाइट की पटना एयरपोर्ट पर इमरजेंसी लैंडिंग करायी गयी। इंडिगो की फ्लाइट ने पटना एयरपोर्ट से लखनऊ के लिए उड़ान भरी थी लेकिन आधा घंटे बाद हवा में ही तकनीकी खराबी आ गयी। सूझ-बूझ से काम लेते हुए पायलट ने एटीएस को सूचित करने के बाद पटना एयरपोर्ट पर इमरजेंसी लैंडिंग करायी। हवा में तकनीकी खराबी आ जाने के कारण यात्रियों के बीच हड़कंप मच गया। पायलट ने तुरंत इस बात की जानकारी पटना एटीसी को दी, जिसके बाद विमान की इमरजेंसी लैंडिंग पटना में करायी गयी। इंडिगो की फ्लाइट में सवार लगभग 100 यात्री सुरक्षित हैं। सभी पैसेंजर्स को दूसरी फ्लाइट से लखनऊ भेजा जायेगा है। विमान में सवार एक यात्री ने बताया कि हम लोग पटना से लखनऊ के लिए चले थे, लेकिन आधे घंटे के बाद ही पायलट ने कहा कि अब वापस पटना लौटना पड़ेगा। क्योंकि फ्लाइट में खराबी आ गयी है। पटना एटीसी से बात करने के बाद पायलट ने पटना एयरपोर्ट पर फ्लाइट की इमरजेंसी लैंडिंग करायी।

नारायणपुर में पांच लाख के इनामी एसीएम कैडर के नक्सली सहित आठ नक्सलियों ने किया आत्मसमर्पण

नारायणपुर। नक्सल संगठन में सक्रिय पांच लाख के इनामी एक एसीएम कैडर के नक्सली सहित 8 नक्सलियों ने बुधवार को पुलिस अधीक्षक प्रभात कुमार नारायणपुर के समक्ष आत्मसमर्पण किया है। आत्मसमर्पित नक्सलियों में 1. दिलीप ध्रुवा पिता स्व. बुकलू निवासी ग्राम फरसगांव/बेदरे थाना कुटरू वर्तमान पता- कोडतामरका पंचायत धुरबेड़ा थाना कोहकामेटा जिला नारायणपुर पद- एसीएम कुतुल एरिया कमेटी इंटेलीजेंस प्रभारी, 5 लाख का इनामी। 2 . सुकली उर्फ ललिता तिम्मा पिता काना निवासी ग्राम पोदमकोटी थाना कोहकामेटा जिला नारायणपुर पद- कुतुल एलओएस सदस्य, 1 लाख की इनामी। 3 . सुधराम पोयाम पिता सुकड़ो निवासी ग्राम थुलथुली/जुवाड़ा थाना ओरछा जिला नारायणपुर पद- आरेछा एलओएस सदस्य नक्सली दीपक का गार्ड, 1 लाख का इनामी। 4 .सोनी कोर्राम पिता स्व. बुधु कोर्राम निवासी ग्राम भटबेड़ा पंचायत मण्डाली थाना ओरछा जिला नारायणपुर पद- जाटलूर एलओएस सदस्य, 1 लाख का इनामी। 5 .मंगलु कश्यप पिता स्व. अड़मो निवासी ग्राम बेड़मामेटा पंचायत कुतुल थाना कुकड़ाझोर जिला नारायणपुर पद- कोडलियार जनताना सरकार अध्यक्ष।

नीति निर्माण के लिए प्रशिक्षित लोगों की जरूरत : उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़

एजेंसी

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कहा कि देश में हमारे पास मौलिक अधिकार हैं, जो हमें न्यायपालिका तक पहुंचने का अधिकार देता है लेकिन पिछले कुछ दशक में इसे दूसरी तरह का हथियार बना लिया गया है, जो शासन व्यवस्था व लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए बड़ी चुनौती है। उपराष्ट्रपति धनखड़ अपने आवास पर भारतीय लोकतांत्रिक नेतृत्व संस्थान (आईआईडीएल) के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत कर रहे थे। उपराष्ट्रपति ने मौजूदा स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि हर दिन आप देखते हैं कि सलाहें जारी की जा रही हैं, कार्यकारी कार्य ऐसे निकायों कर रहे हैं जिनके पास उन्हें करने का कोई अधिकार क्षेत्र या न्यायिक अधिकार अथवा क्षमता

नहीं है। हमारा संविधान संस्थाओं को अपने क्षेत्राधिकार में काम करना निर्देशित करता है लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है। उपराष्ट्रपति धनखड़ ने कहा कि संस्थाएं अपनी सुविधा के लिए अन्य संस्थाओं के सामने झुक रही हैं, पर खुश करने के ये तरीके अल्पकालिक लाभ तो दे सकते हैं, लेकिन लंबे समय में ये संस्थानों के आंतरिक तंत्र को ऐसी क्षति पहुंचा सकते हैं कि जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। उन्होंने इस पर विचार करने का आग्रह किया। उपराष्ट्रपति ने कहा कि इस विचार से लोगों को भी जोड़ना होगा। उन्हें बताना होगा कि भारत का विश्वास सबसे विशाल मानव संसाधन है, पर खुद का आकलन करना होगा कि दिखावटी उपलब्धियों के सहारे नहीं रहा जा सकता प्रतिनिधियों को उपराष्ट्रपति ने संसद में व्हिप के प्रावधानों पर बताया कि व्हिप क्यों होना चाहिए? व्हिप का मतलब है कि आप अभिव्यक्ति पर अंकुश लगा रहे हैं, आप स्वतंत्रता नियंत्रित कर रहे हैं और अपने पार्टी प्रतिनिधियों को आदेश पालक बना रहे हैं। आप उन्हें अपने विवेक के इस्तेमाल की अनुमति नहीं दे रहे हैं। आप खुद देखें कि अमरीका में व्हिप है या नहीं। पता लगाएं कि पिछले दस वर्षों में सीनेट के फैसले किस तरह से समझाने-बुझाने से प्रभावित हुए हैं, लेकिन जब आप व्हिप जारी करते हैं, तो इसमें कोई विमर्श नहीं होता है।

राजपथ पर दिखेगी मध्य प्रदेश में चीतों की ऐतिहासिक पुनर्स्थापना की झलक

एजेंसी

भोपाल। नई दिल्ली में आयोजित गणतंत्र दिवस परेड-2025 के लिए मध्य प्रदेश की झाँकी बनकर तैयार हो गई है। यह झाँकी चीता द प्राइड ऑफ इण्डिया'' की थीम पर केन्द्रित होगी। झाँकी में मध्य प्रदेश में चीतों की ऐतिहासिक पुनर्स्थापना की झलक दिखेगी। यह जानकारी जनसम्पर्क अधिकारी संजय सक्सेना ने दी। उन्होंने बताया कि भारत से 70 वर्ष पूर्व चीते विलुप्त हो चुके थे। भारत में चीतों की वापसी का श्रेय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विज़न को जाता है। प्रदेश में चीता परियोजना की सफलता के साथ अब मध्य प्रदेश ÷टाइगर स्टेट'' और ÷चीता स्टेट'' भी बन गया है। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश के श्योपुर जिले में कूनो नदी के किनारे स्थित राष्ट्रीय कूनो अभयारण्य देश में चीतों का एक नया घर है। अभयारण्य में चीतों के लिये उचित आहार और प्राकृतिक आवास मौजूद हैं। पुनर्स्थापना की सफल परियोजना के परिणाम स्वरूप

कूनो में वयस्क और शावक सहित कुल 24 चीते अभयारण्य में विचरण कर रहे हैं। जनसम्पर्क अधिकारी सक्सेना ने बताया कि प्रस्तुत झाँकी में भारत में चीतों के सफल पुनर्स्थापन को दर्शाया गया है। अग्रभाग में कूनो राष्ट्रीय उद्यान के वयस्क चीतों का जोड़ा और कूनो में जन्मे नन्हें चीता शावकों को दर्शाया गया है।

राष्ट्रपति को भारत स्काउट्स और गाइड्स के डायमंड जुबली जंबूरी के लिए दिया आमंत्रण

एजेंसी

नई दिल्ली/गुरुग्राम। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को डायमंड जुबली जंबूरी के लिए भारत स्काउट्स और गाइड्स एवं स्टेट चीफ कमिश्नर डा. के.के. खंडेलवाल ने मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया। यह समारोह 28 जनवरी से 3 फरवरी 2025 तक तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली के मणप्पाराई स्थित एसआईपीसीओटी इंडस्ट्रियल पार्क में आयोजित किया जाएगा। डा. खंडेलवाल ने राष्ट्रपति से अनुरोध किया कि वे 28 जनवरी 2025 को शाम 4:00 बजे जंबूरी का उद्घाटन करें। या फिर 2 फरवरी, 2025 को शाम 4ः00 बजे समापन समारोह में शामिल हों। उन्होंने कहा कि डायमंड जुबली जंबूरी भारत स्काउट्स और गाइड्स के 75 गौरवशाली वर्षों का जश्न मनाने वाले वर्षभर के आयोजनों का प्रमुख हिस्सा है। देशभर के लगभग 20,000 स्काउट्स और गाइड्स के साथ-साथ एशिया-प्रशांत क्षेत्र और अन्य देशों के 1,000 अंतरराष्ट्रीय

प्रतिभागियों को एक साथ लाएगा। सशक्त युवा, विकसित भारत थीम पर आधारित यह कार्यक्रम युवा सशक्तिकरण, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और नेतृत्व विकास का उत्सव मनाएगा और वसुधैव कुटुंबकम यानी पूरी दुनिया एक परिवार है की शाश्वत भावना को दर्शाएगा। इसमें हरियाणा से 875 स्काउट्स और गाइड्स इस जंबूरी में भाग ले रहे हैं। डॉ. के.के. खंडेलवाल ने राष्ट्रपति को अपनी नवीनतम पुस्तक ऑर्गेनाइजिंग स्काउट्स एंड गाइड्स जंबूरी भेंट की। यह पुस्तक बड़े आयोजनों के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं और संगठनात्मक रणनीतियों को समेटे हुए है, जो भारत स्काउट्स और गाइड्स के ज्ञान साझा करने की परंपरा को और समृद्ध करती है।

केंद्रीय मंत्री रक्षा खडसे ने अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के श्रीविजय पुरम में साई केंद्र का किया दौरा

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय खेल एवं युवा मामलों की राज्यमंत्री रक्षा निखिल खडसे ने अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के श्रीविजय पुरम में भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) केंद्र का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने स्थानीय खेल सुविधाओं की समीक्षा की और उपलब्ध खेल संसाधनों के बारे में जानकारी एकत्र की तथा खेल के अन्य क्षेत्रों में आगे के विकास के लिए नए उपायों पर चर्चा की।

उन्होंने बताया कि इस यात्रा का प्राथमिक उद्देश्य खेल क्षेत्र में स्थानीय प्रगति का आकलन करना और एथलीटों को बेहतर सुविधाएं और प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए आवश्यक कदम उठाना था। यात्रा के दौरान मंत्री खडसे ने खेल परिसर, प्रशिक्षण केंद्र और वहां के युवा एथलीटों की प्रगति के बारे में चर्चा की। उन्होंने खेल क्षेत्र में नवाचारों, खेल विकास में हुई प्रगति और भविष्य की योजनाओं के बारे में भी बातचीत की। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में भारतीय खेल प्राधिकरण के दो

प्रमुख केंद्र हैं। इन केंद्रों पर एथलेटिक्स, साइकिलिंग, फुटबॉल, कयाकिंग, कैनोइंग, रोइंग और भारोत्तोलन का प्रशिक्षण दिया जाता है। यहां 150 से अधिक एथलीटों को बेहतरीन सुविधाएं उपलब्ध हैं। मंत्री खडसे ने एथलीटों से बातचीत करते हुए विभिन्न सरकारी योजनाओं के महत्व पर जोर दिया और उन्हें 2036 ओलंपिक में भारत की संभावित भागीदारी के लिए प्रेरित किया। इस दौरान भारतीय खेल प्राधिकरण के अधिकारी, जिनमें सहायक निदेशक देबस्मिता बल, अन्य कोच और खेल क्षेत्र के युवा एथलीट भी मौजूद रहे।

एनएसडी का 'भारत रंग महोत्सव' 28 जनवरी से 200 से अधिक नाटकों के साथ शुरू होगा

एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एनएसडी) भारत रंग महोत्सव (भारंगम) के 25 साल पूरे हो रहे हैं। दुनिया का सबसे बड़ा थिएटर उत्सव इस बार 28 जनवरी से शुरू होगा, जो 16 फरवरी तक चलेगा। पहली बार भारंगम भारत से बाहर नेपाल और श्रीलंका के 13 शहरों में अपनी रंगत बिखेरेगा । 'एक रंग : श्रेष्ठ रंग' - भारत रंग महोत्सव 2025 की भावना को आगे बढ़ाते हुए, प्रसिद्ध अभिनेता और एनएसडी के पूर्व छात्र राजपाल यादव को इस वर्ष के लिए रंग दूत (महोत्सव राजदूत) के रूप में चुना गया है । प्रेसवार्ता में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के निदेशक चित्तरंजन त्रिपाठी ने कहा कि भारत रंग महोत्सव अपनी व्यापक दृष्टि के साथ विश्व मंच पर एक अग्रणी रंगमंच महोत्सव के रूप में उभरा है । इसने न केवल दुनिया भर के

नाट्य प्रदर्शनों को एक मंच प्रदान किया है, बल्कि विविध पारंपरिक कलाओं के संमिश्रण को भी प्रोत्साहित किया है । उन्होंने बताया कि 20 दिनों तक चलने वाले भारंगम में 09 अलग-अलग देशों की 200 से ज़्यादा अनूठी प्रस्तुतियां दिखाई जाएंगी, जिन्हें भारत और विदेशों में 13 स्थानों पर प्रदर्शित किया जाएगा । इस महोत्सव में भाग लेने वाले अंतरराष्ट्रीय थिएटर समूह - रूस, इटली, जर्मनी, नॉर्वे, चेक गणराज्य, नेपाल, ताइवान, स्पेन और श्रीलंका से शामिल हैं । उन्होंने बताया कि पहली बार, भारत रंग महोत्सव अपनी सीमाओं से परे जा रहा है। इस बार नेपाल और श्रीलंका में भी इसके उप-अध्याय आयोजित किए जाएंगे । दिल्ली में मुख्य आयोजन के अलावा भारत में अगरतला, अहमदाबाद, बेंगलुरु, भटिंडा, भोपाल, गोवा, गोरखपुर, जयपुर, खैरागढ़ और रांची जैसे शहरों में भी यह महोत्सव अपनी रंगत बिखेरेगा । चित्तरंजन त्रिपाठी ने बताया कि राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एनएसडी) ने 'विश्व जन रंग' नामक एक नई पहल की शुरुआत की है । इसके अंतर्गत, दुनिया भर के सात महाद्वीपों में रहने वाले भारतीय और भारत के युवा कलाकार लघु नाटकों का ऑनलाइन प्रदर्शन करेंगे।

झाबुआ कलेक्टर नेहा मीना का 'बेस्ट इलेक्टोरल प्रैक्टिस अवार्ड: 2024-25' के लिए चयन

एजेंसी

भोपाल। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा मध्य प्रदेश के झाबुआ की जिला कलेक्टर नेहा मीना को 'बेस्ट इलेक्टोरल प्रैक्टिस अवार्ड 2024-25' से सम्मानित करने के लिए चयनित किया गया है। यह प्रतिष्ठित अवार्ड उन्हें उनकी बेहतरीन कार्यशैली और निर्वाचन प्रक्रिया के प्रति प्रतिबद्धता के कारण दिया जा रहा है। झाबुआ कलेक्टर नेहा मीना को 25 जनवरी 2025 को दिल्ली में आयोजित 15 वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस कार्यक्रम में सम्मानित किया जायेगा। जनसम्पर्क अधिकारी महिपाल अजय ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा दिया जाने वाला यह अवार्ड जनरल कैटेगिरी में देश भर के केवल नौ कलेक्टर्स और दो पुलिस अधीक्षक को दिया जाएगा। मध्य प्रदेश से एकमात्र कलेक्टर नेहा मीना का नाम इस सूची में शामिल किया गया है। झाबुआ में जिला निर्वाचन अधिकारी के रूप में उनके द्वारा

किए गए उत्कृष्ट कार्य ने उन्हें इस सम्मान का पात्र बनाया है। उन्होंने बताया कि निर्वाचन आयोग ने चुनावों के संचालन में आईटी पहल, सुरक्षा प्रबंधन, चुनाव प्रबंधन, सुलभ चुनाव, मतदाता सूची और मतदाता जागरूकता और पहुंच के क्षेत्र में उनके योगदान और उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए पुरस्कार घोषित किए हैं। प्रत्येक श्रेणी में जनरल, स्पेशल और स्टेट अवॉर्ड दिए जाएंगे।

जेईई-मेन की परीक्षा में गणित के सवाल कठिन, भौतिकी और रसायन रहे आसान

एजेंसी

कोटा। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी की सबसे बड़ी इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा जेईई-मेन देश के 331 शहरों में प्रारंभ हुई। इसके लिये देश में 316 केंद्र और विदेश में 15 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। इस साल जेईई-मेन के जनवरी सत्र में सर्वाधिक 13 लाख 95 हजार आवेदन हुए हैं। हर दिन करीब 2 लाख से अधिक विद्यार्थी परीक्षा में शामिल होंगे। आज के पेपर में मैथ्स मुश्किल लगा लेकिन फिजिक्स और केमिस्ट्री का पेपर तुलनात्मक रूप से आसान थे।

29 जनवरी तक चलेगी परीक्षा एलन निदेशक बृजेश माहेश्वरी के अनुसार, बीटेक में प्रवेश के लिए यह परीक्षा 22, 23, 24, 28 व 29 जनवरी को दो पारियों में आयोजित होगी। पहली पारी का पेपर सुबह 9 से दोपहर 12 तक और दूसरी पारी 3 बजे से 6 बजे तक है। 30 जनवरी को पेपर 2 ए (बीआर्क) या पेपर 2 बी (बी प्लानिंग) के लिए परीक्षा होगी। यह

परीक्षा दूसरी पारी में दोपहर 3 से शाम 06 बजे तक होगी। इसके बाद एनटीए द्वारा आंसर की जारी की जाएगी। इस पर आपत्तियों के बाद फाइनल आंसर-की और रिजल्ट जारी किए जाएंगे। इसमें चयनित करीब ढाई लाख विद्यार्थी 18 मई को जेईई एडवांस्ड परीक्षा में भाग लेंगे, जिसका आयोजन ऑनलाइन मोड में आयोजन आईआईटी कानपुर द्वारा किया जाएगा। पेपर विश्लेषणमोशन एजुकेशन के फाउंडर सीईओ नितिन विजय ने बताया कि पहली पारी में गणित का लेवल मध्यम से कठिन था। इसके 40 प्रतिशत सवाल आसान, 40 प्रतिशत मध्यम और को 20 प्रतिशत कठिन रहे। न्यूमेरिकल वैल्यूज वाले सवालों के पैटर्न और स्ट्रक्चर में बदलाव के कारण मैथ्स का डिफिकल्टी लेवल गत वर्ष से अधिक बताया जा रहा है। फिजिक्स का लेवल मध्यम रहा। इसमें 50 प्रतिशत आसान, 33 प्रतिशत मध्यम और 17 प्रतिशत कठिन प्रश्न थे। अधिकांश प्रश्न आसान से मध्यम स्तर के थे। केमिस्ट्री वाला पार्ट मध्यम से कठिन था। पेपर में कक्षा 12वीं के सवाल कक्षा 11वीं की तुलना में अधिक पूछे गये। फिजिक्स में डी ब्रोगली वेवलेंथ, एसएमआर, पोटेंशियोमीटर, रे ऑप्टिक्स, हीट, सेमीकंडक्टर, मैथ्स में स्टेटिस्टिक्स, प्रोबेबिलिटी, वेक्टर्स और 3-डी ज्योमेट्री, मेट्रिक्स व डेटर्मिनेन्ट्स और केमिस्ट्री में मोल कांसेप्ट, केटेलिस्ट, बायोमोलीक्यूल्स, ऑर्गेनिक और फिजिकल केमिस्ट्री को अधिक वेटेज दिया। कंप्यूटर आधारित इस टेस्ट (सीबीटी) में 300 अंक के एमसीक्यू और न्यूमेरिकल वैल्यू आधारित 75 सवाल पूछे गए। इनका जवाब 180 मिनट में देना था। प्रत्येक सही उत्तर पर 4 अंक दिए जाएंगे जबकि प्रत्येक गलत उत्तर के लिए एक अंक काटा जाएगा। कोटा में 11 हजार विद्यार्थियों ने दी परीक्षाजेईई-मेन के लिये कोटा में चार परीक्षा केंद्रों पर लगभग 11 हजार विद्यार्थियों ने परीक्षा दी। इस बार परीक्षा की केंद्रीयकृत सीसीटीवी सिस्टम से कडी निगरानी की जा रही है। कुछ केंद्रों पर परीक्षा से पहले सख्त जांच की गई। रूमाल या आभूषण अंदर ले जाने की इजाजत नहीं दी गई। परीक्षार्थियों को मेटल डिटेक्टर से चेकिंग करके परीक्षा केंद्र पर प्रवेश दिया गया।

देश में स्ट्रोक उपचार के लिए मौजूदा 500 केन्द्रों का होगा विस्तार: केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव पुण्य सलिला श्रीवास्तव ने गुरुवार को कहा कि देश में लगभग 500 स्ट्रोक इकाइयां चल रही हैं और इस नेटवर्क का जल्दी ही विस्तार किया जाएगा। पुण्य सलिला श्रीवास्तव विश्व स्ट्रोक संगठन (डब्ल्यूएसओ) फिक्की और भारतीय चिकित्सा सांसद मंच (आईएमपीएफ) के साथ मिलकर फेडरेशन हाउस में राष्ट्रीय स्ट्रोक शिखर सम्मेलन 2025 को संबोधित कर रही थीं। इस शिखर सम्मेलन में केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव पुण्य सलिला श्रीवास्तव के साथ-साथ अन्य प्रमुख नीति निर्माता, स्वास्थ्य सेवा संस्थान, चिकित्सा पेशेवर और उद्योग के हितधारकों ने भाग लिया। इसका उद्देश्य भारत में स्ट्रोक की बढ़ती चुनौती से निपटने और इसकी रोकथाम और उपचार के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। इस मौके पर स्वास्थ्य सचिव ने कहा कि मौजूदा 500 स्ट्रोक उपचार

केन्द्रों के इस नेटवर्क का विस्तार करने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है ताकि विशेषज्ञ देखभाल तक व्यापक पहुंच सुनिश्चित की जा सके। रोकथाम के महत्वपूर्ण महत्व को पहचानते हुए हमने अपने राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों के भीतर प्राथमिक रोकथाम रणनीतियों को प्राथमिकता दी है। उन्होंने कहा कि हमारी प्रमुख सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज योजना, आयुष्मान भारत, न केवल स्ट्रोक देखभाल के लिए वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती है, बल्कि जोखिम कारकों को संबोधित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हमारे आयुष्मान आरोग्य मंदिर (एएएम) स्वास्थ्य संवर्धन में सबसे आगे हैं, जो उच्च रक्तचाप, मधुमेह, अस्वास्थ्यकर आहार और शारीरिक निष्क्रियता जैसे जोखिम कारकों की प्रारंभिक पहचान और प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करते हैं। ये केंद्र एनसीडी की रोकथाम और नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम का अभिन्न अंग हैं, जो इन गैर-संचारी रोगों के बोझ को कम करने के उद्देश्य से एक व्यापक कार्यक्रम है।

प्रधानमंत्री मोदी की उपस्थिति में 24-25 फरवरी को भोपाल में होगी जीआईएस: मुख्यमंत्री डॉ. यादव

एजेंसी

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि औद्योगिक गतिविधियों और निवेश के लिए मध्य प्रदेश संभावनाओं का प्रदेश है। औद्योगिक विकास की गति को तेज कर प्रदेश को आर्थिक रूप से अधिक उन्नत और समृद्ध बनाने के उद्देश्य से निवेश-अनुकूल नीतियों, उत्कृष्ट बुनियादी ढाँचे और कुशल मानव संसाधन की उपलब्धता पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। प्रदेश में वर्ष-2025 को उद्योग एवं रोजगार वर्ष घोषित किया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की उपस्थिति में 24 और 25 फरवरी को भोपाल में ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट (जीआईएस) का आयोजन किया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव पुणे में हुए इन्वेस्ट एमपी इंटरैक्टिव सेशनमें उद्योग जगत के प्रमुख प्रतिनिधियों और निवेशकों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने भोपाल में होने वाली जीआईएस के लिए उद्योग समूहों और निवेशकों को आमंत्रित किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्य प्रदेश अपने प्राकृतिक सौंदर्य, धार्मिक स्थलों और विश्वस्तरीय बुनियादी ढाँचे के साथ, निवेशकों के लिए एक आकर्षक केन्द्र के रूप में उभर रहा है। हमारी व्यापारिक राजधानी इंदौर ने स्वयं को स्वच्छता की राजधानी के रूप में भी स्थापित किया है। पीथमपुर और मंडीदीप प्रदेश ही नहीं देश के प्रमुख औद्योगिक केंद्र के रूप में विकसित हुए हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, खनन, फार्मा, पर्यटन, आईटी,सहित सभी क्षेत्रों में सुगम एवं आकर्षक नीतियां विकसित की गई हैं। राज्य के विभिन्न अंचलों में निवेश प्रोत्साहन के लिए देश के शहरों में जाकर उद्योग समूहों और निवेशकों के साथ इंटरैक्टिव सेशन आयोजित किये गए हैं।

वैवाहिक शर्तों और व्यक्तिगत अधिकारों की सुरक्षा के लिए एक मजबूत विधिक ढांचा

एजेंसी

देहरादून। उत्तराखंड सरकार सामाजिक समरसता और व्यक्तिगत अधिकारों की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए यूनिफॉर्म सिविल कोड अधिनियम, 2024 को लागू करने जा रही है। यह अधिनियम राज्य के सभी निवासियों पर लागू होगा, चाहे वे राज्य के भीतर रह रहे हों या बाहर। यह यूनिफॉर्म सिविल कोड, वैवाहिक शर्तों और व्यक्तिगत अधिकारों की सुरक्षा के साथ-साथ समाज में एकरूपता और समरसता स्थापित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। यह कानून न केवल विवाह प्रक्रिया को सरल बनाएगा, बल्कि इसे अधिक पारदर्शी और जनहितैषी भी बनाएगा। हालांकि, संविधान के अनुच्छेद 342 और 366(25) के तहत अधिसूचित अनुसूचित जनजातियों तथा भाग ङ्घङ्घढ्ढ के अंतर्गत संरक्षित प्राधिकार/अधिकार-प्राप्त व्यक्तियों व समुदायों पर यह अधिनियम लागू नहीं होगा।

मुख्य प्रावधान और उद्देश्य: इस अधिनियम का मुख्य उद्देश्य विवाह संबंधी कानूनी प्रक्रियाओं को सरल, सुव्यवस्थित और पारदर्शी बनाना है। यह कानून व्यक्तिगत अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए सामाजिक समरसता को बढ़ावा देता है। विवाह के लिए पात्रता: दोनों पक्षों में से किसी के पास जीवित जीवनसाथी नहीं होना चाहिए। दोनों मानसिक रूप से स्वस्थ और विवाह की अनुमति देने में सक्षम हों।पुरुष की न्यूनतम आयु 21 वर्ष और महिला की 18 वर्ष होनी चाहिए। दोनों पक्षकार निषिद्ध संबंधों की परिधि में न हों।

विवाह पंजीकरण की अनिवार्यता: अधिनियम लागू होने के बाद विवाह का पंजीकरण 60 दिनों के भीतर अनिवार्य होगा। 26 मार्च 2010 से अधिनियम लागू होने तक हुए विवाहों का पंजीकरण 6 महीने के भीतर करना होगा। 26 मार्च 2010 से पहले हुए विवाह, यदि सभी कानूनी योग्यताओं को पूरा करते हैं, तो वे भी (हालांकि अनिवार्य नहीं है) पंजीकरण कर सकते हैं। पूर्व में नियमानुसार पंजीकरण करा चुके व्यक्तियों को दोबारा पंजीकरण कराने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन उन्हें अभिस्वीकृति देनी होगी।

पंजीकरण प्रक्रिया: विवाह पंजीकरण ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों से किया जा सकेगा। आवेदन प्राप्त होने के 15 दिनों के भीतर उप-निबंधक को निर्णय लेना अनिवार्य है। 15 दिनों के भीतर निर्णय न होने पर आवेदन स्वतः निबंधक को अग्रेषित होगा। अभिस्वीकृति से संबंधित आवेदन 15 दिनों के पश्चात स्वतः स्वीकृत माना जाएगा। पारदर्शी अपील प्रक्रिया: आवेदन अस्वीकृत होने पर पारदर्शी अपील प्रक्रिया उपलब्ध है। मिथ्या विवरण देने पर दंड का प्रावधान के साथ ही पंजीकरण न होने का प्रभाव की व्यवस्था है। पंजीकरण न होने मात्र से विवाह अमान्य नहीं माना जाएगा। निगरानी और क्रियान्वयन: राज्य सरकार विवाह पंजीकरण की प्रक्रिया की निगरानी और क्रियान्वयन के लिए महानिबंधक, निबंधन और उप-निबंधकों की नियुक्ति करेगी। ये अधिकारी संबंधित अभिलेखों का संधारण और पंजीकरण प्रक्रिया को सुचारू रूप से सुनिश्चित करेंगे।

कैसे बचाएं बच्चों को ठंड से

इन दिनों जाड़ा चरम अवस्था पर है और बच्चे अपने रोग-प्रतिरोधक तंत्र के कमजोर होने के कारण इस मौसम में तकलीफें कुछ ज्यादा पाते हैं। नवजात शिशु से लेकर 8 से 10 साल की उम्र तक के बच्चे जाड़े में अधिक प्रभावित होते हैं।

नवजात शिशु और सजगता

सर्दियों के मौसम में शिशु का जन्म एक गर्म स्थान पर होना चाहिए। घर हो या अस्पताल जन्म के पहले ही नवजात के लिए एक गर्म स्थान की व्यवस्था कर लेनी चाहिए। जाड़े के मौसम में अगर बच्चे को गर्म स्थान न मिले, तो उसे सांस लेने तक में समस्या आ सकती है। नवजात को गर्मी देने के लिए रेडिएन्ट हीटर (तार वाला हीटर) या 200 वाट के दो बल्ब प्रयोग में लाये जा सकते हैं। प्रसव के स्थान पर धुएंदार अंगीठी या कंडे का प्रयोग न करें। इससे कार्बन मोनॉक्साइड पैदा होती है, जो सांस के जरिये फेफड़े के लिए अति हानिकारक हैं।

जन्मोपरांत बच्चे को गर्मी देने के लिए इसी प्रकार हीटर या 200 वाट के बल्ब का प्रयोग करें। परन्तु उत्तर प्रदेश में बिजली की आपूर्ति एक समस्या है। ऐसे में बच्चे को गर्मी देने के लिए उसके बिस्तर में, परन्तु उसके शरीर से कुछ दूर, गुनगुने पानी की बोतलें रखी जा सकती हैं। कमरे व बोतलों की गर्मी उचित तापमान में रहनी चाहिए। अगर कमरा 28 डिग्री सेंटीग्रेड पर गर्म है और बच्चे के शरीर का तापमान 98 से 99 डिग्री के बीच है, तो यह उचित होगा।

अन्य रोगों का अंदेशा

जाड़े के मौसम में बच्चों को सर्दी, खांसी और यहां तक कि निमोनिया (न्यूमोनिया) होने का खतरा बढ़ जाता है। निमोनिया का कारण वायरस और बैक्टीरिया का इन्फेक्शन दोनों ही हो सकते हैं। बच्चों को अधिक समय तक बन्द, गर्म और ऐसे कमरों (जिसमें अत्यधिक लोग आते-जाते हैं) में रखने से वाइरस और बैक्टीरिया के संक्रमण की आशंका बढ़ जाती है। इसके बचाव के लिए दिन के समय घरों के दरवाजे खुले रखे जा सकते हैं ताकि ताजी हवा घर के अन्दर आ सके। खुली हवा और धूप दोनों ही घर के अन्दर के संक्रमण को खत्म करने में सहायक होते हैं। थोड़ी-बहुत सर्दी, जुकाम के लिये दवाएं सहायक नहीं होतीं बल्कि ऐसे में बिजली की केतली की सहायता से दिन में तीन चार बार बच्चे को भाप देना उचित होगा। भाप सादे पानी की ही दें। उसमें कोई दवा न डालें। दवाओं से एलर्जी बढ़ने का खतरा होता है।

वाइरल डायरिया

जाड़ों में अक्सर बच्चे वाइरल डायरिया से भी ग्रस्त हो सकते हैं। इस रोग का अन्य कारणों के साथ एक कारण जाड़े में हाथों या बर्तनों का ठीक से न धोना भी हो सकता है। बच्चों के हाथ साबुन से धुलवाएं। इस काम में आलस्य न करें या फिर हैंड सेनीटाइजर का प्रयोग करें। हैंड सेनीटाइजर सूखे हाथों पर ही लगाएं और लगाने के बाद ठीक प्रकार से दोनों हाथों को आपस में रगड़ लें। हैन्ड सेनीटाइजर का प्रयोग जीवाणुओं की रोकथाम का एक प्रभावी उपाय है।

तेल व क्रीम का प्रयोग

जैसे तिल, सरसों या नारियल का या फिर वैसलीन या क्रीम अवश्य लगाएं। शरीर पर तैलीय पदार्थ लगाने से त्वचा भी सुरक्षित रहती है।

इस मौसम में कपड़ों का चयन भी सावधानी से करें। बाजार में बहुत ही आकर्षक और गर्म दिखने वाले कपड़े दिखायी पड़ते हैं, परंतु वे उतने गर्म नहीं होते। जाड़े से बचाव के लिए कपड़े प्योर ऊल के ही लें। बच्चों के सिर का साइज उनके शरीर के अनुपात में बड़ा होता है। इसे ढक कर रखने से भी जाड़े से काफी बचत होती है।

बच्चों को गर्म रखने के लिए कुछ अधिक ऊर्जा की भी आवश्कता होती है। मेवा से स्वास्थ्यकर फूड कैलोरी मिलती है। बड़े बच्चों को मेवा देना बेहतर होगा।

रखें ध्यान, ठंड से न पड़ जाएं बीमार

ठंड का कहर न केवल बुजुर्गों बल्कि युवाओं पर भी भारी पड़ सकता है। ऐसे में यह आवश्यक है कि लोग अपनी सुरक्षा खुद करें और बचाव की राह पर चलें। सभी को शरीर को पूरी तरह ढक कर रखना चाहिए। बुजुर्ग व बच्चे सुबह व शाम के समय घर से बाहर निकलने से बचें और बीमार लोग सुबह के समय रक्तचाप की जांच जरूर कराएं, डॉक्टर के संपर्क में रहें तथा रक्तचाप नियंत्रित करने के लिए दवाएं लेते रहें।

इन बातों का भी रखें ध्यान

- स्कूटर व मोटरसाइकिल से चलने वाले लोग इस बात का ध्यान रखें कि हवा सीधे छाती पर न लगे।
- सूर्योदय के बाद ही सुबह टहलने के लिए निकलें, सुबह की सैर पर जाने से पहले गरम पदार्थ न लें।
- सुबह की सैर हवा के रुख के साथ करें।
- ध्यान रखें कि बच्चों के कपड़े गीले तो नहीं हैं।
- बच्चों के हाथ-पैर आदि धोने के लिए गर्म पानी का प्रयोग करें।
- आइसक्रीम, शीतल पेय व शरबत जैसी ठंडी चीजों का सेवन न करें।
- त्वचा की सफाई के लिए साबुन व शैंपू की जगह बेसन व दही का प्रयोग करें।
- नहाने अथवा हाथ-मुंह धोने के लिए गुनगुने पानी का प्रयोग करें।

कहीं सर्दी में अकड़ न जाए घुटना

सर्दी में लोग चटपटा खाना ज्यादा पसंद करते हैं। लेकिन, कहीं ऐसा न हो कि वसा युक्त अधिक खाना सेहत के लिए भारी पड़ जाए। विशेषकर गठिया के मरीजों के लिए ऐसा भोजन बहुत नुकसानदेह साबित हो सकता है। इससे पहले कि चलना फिरना भी मुश्किल हो जाए, सचेत हो जाएं। क्योंकि सर्दियों में गठिया की परेशानी बढ़ जाती है।

एम्स के रुमेटोलॉजी विभाग की प्रमुख प्रो. उमा कुमार ने बताया कि ठंड के मौसम में ऑस्टियो अर्थाराइटिस की परेशानी ज्यादा होती है। इसका कारण यह है कि इस मौसम में लोग ज्यादा खाना खाते हैं। लेकिन, घी, तेल, व वसा युक्त भोजन का इस्तेमाल अधिक करते हैं। ठंड के कारण लोग व्यायाम नहीं करते। अधिक खाने व व्यायाम नहीं करने से शरीर का वजन बढ़ जाता है। इस कारण गठिया के मरीजों का शरीर अकड़ने लगता है। इसके अलावा इस बीमारी का कारण विटामिन डी की कमी है। सर्दी में धूप कम निकलने से शरीर को पर्याप्त विटामिन डी नहीं मिल पाता। इस वजह से गठिया की परेशानी बढ़ जाती है। उन्होंने बताया कि जिन लोगों में विटामिन डी की कमी हो वे विटामिन डी की दवा ले सकते हैं। डॉ उमा ने बताया कि यह बीमारी घुटने में होती है। इसके कारण घुटना में सूजन व तेज दर्द होता है। गठिया देश में एक सामान्य बीमारी है। देश की करीब 20 फीसद जनसंख्या इस बीमारी से ग्रसित है। करीब 4.60 करोड़ लोगों को घुटने की गठिया है।

जानिए कैसे बनाए मातृत्व का अहसास खूबसूरत

खुबसूरत अहसास है मातृत्व। जैसे ही आपको पता चलता है कि आप मां बनने वाली हैं, उसी समय से गर्भस्थ शिशु के साथ एक रिश्ता बन जाता है। उसका विकास सही ढंग से हो, इसके लिए आप हर एहतियात बरतने की कोशिश करती हैं। इस लिहाज से खानपान पर ध्यान देना सबसे जरूरी हैं, क्योंकि आपके जरिए ही पोषण गर्भस्थ शिशु तक पहुंचता है। अगर आपका खानपान ठीक नहीं है तो यह और भी जरूरी हो जाता है कि आप संतुलित आहार के सेवन की आदत डालें। गर्भावस्था के दौरान आपका शरीर भोजन के जरिए प्राप्त होने वाली ऊर्जा का बेहतर इस्तेमाल सुनिश्चत करता है। इस दौरान आपको अपना खानपान ऐसा रखना चाहिए कि शरीर को कुछ विशेष विटामिन्स और मिनरल्स जैसे फोलिक एसिड और आयरन इत्यादि और कुछ अधिक कैलोरी प्राप्त हो सके। इसके साथ ही कोशिश करनी चाहिए कि जंक फूड से दूर रहें। यदि किसी महिला का खानपान पहले से ही संतुलित पोषण वाला रहा है तो उसके शरीर में इन तत्वों का कुछ भंडार रहता है, जिससे गर्भस्थ शिशु की जरूरत पूरी हो सके। ऐसे में मां की सेहत को भी कोई नुकसान नहीं पहुंचता।

भोजन की मात्रा :

अक्सर लोग सलाह देते हैं कि गर्भावस्था के दौरान मां को दो लोगों की जरूरत के अनुसार भोजन ग्रहण करना चाहिए, जबकि हकीकत में एक सामान्य महिला को गर्भावस्था के पहले छह माह तक अतिरिक्त कैलोरी की आवश्यकता नहीं होती। इस दौरान भूख के अनुसार भोजन करना ही काफी रहता है।

जरूरत के मुताबिक आहार :

शरीर की बढ़ी हुई जरूरतों के अनुसार आपको संतुलित भोजन करना चाहिए। संतुलित आहार वह है जिसमें विभिन्न प्रकार का पोषण प्रदान करने वाले खाद्य पदार्थ शामिल हों। उदाहरण के तौर पर ऊर्जा देने वाले पोषक तत्व (कार्बोहाइड्रेट्स),शरीर का निर्माण करने वाले तत्व (प्रोटीन) और सुरक्षा प्रदान करने वाले तत्व (मिनरल्स-विटामिन्स) इत्यादि की उचित मात्रा वाला आहार संतुलित आहार कहलाता है। शरीर की अवस्था के अनुसार भोजन में इन पोषक तत्वों को पर्याप्त मात्रा में शामिल करना चाहिए, क्योंकि गर्भावस्था, शरीर की बनावट या शारीरिक मेहनत के अनुसार इस जरूरत का निर्धारण होता है।

ऊर्जा :

आमतौर पर गर्भावस्था के अंतिम महीनों में शरीर को कुछ अधिक मात्रा में कैलोरी की जरूरत होती है (हालांकि यह बढ़ोत्तरी 15 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए। आहार विशेषज्ञ भोजन में रोजाना 300 कैलोरी अधिक शामिल करने की सलाह देते हैं। इस जरूरत को आप हाई कैलोरी वाले खाद्य पदार्थो जैसे दूध, नट्स, सूखे मेवों, सोया उत्पादों के सेवन के जरिए पूरा कर सकती हैं।

प्रोटीन :

प्रोटीन की अतिरिक्त मात्रा गर्भस्थ शिशु के तेजी से विकास, गर्भनाल, स्तन ग्रंथियों व गर्भाशय के विस्तार, एमनियोटिक फ्लूइड के निर्माण व भंडारण, सहज प्रसव, मां के दूध के निमार्ण के लिए जरूरी है। मां के जरिए गर्भस्थ शिशु तक अमीनो एसिड पहुंचाने के लिए भी यह जरूरी है। गर्भावस्था के दौरान रोजाना आहार में 15 ग्राम प्रोटीन की अतिरिक्त मात्रा शामिल करने की सलाह दी जाती है। दूध, मांस, अंडा और चीज इत्यादि प्रोटीन के अच्छे स्रोत हैं।

आयरन :

गर्भावस्था के दौरान आहार में रोजाना आठ ग्राम आयरन की अतिरिक्त मात्रा यानी 38 ग्राम आयरन प्रतिदिन भोजन में शामिल करने की सलाह दी जाती है। आमतौर पर जन्म के समय शिशु के रक्त में हीमोग्लोबिन का स्तर 18-22 मिली./डीएल (डेसीलीटर) रहता है। गर्भस्थ शिशु और गर्भनाल के विकास के लिए आयरन बहुत जरूरी है। रक्त में हीमोग्लोबिन का स्तर बढ़ाने के लिए भी इसकी समुचित मात्रा प्राप्त होना आवश्यक है। हरी सब्जियां, अंडा, दालों और आयरन युक्त नमक इसका अच्छा स्रोत हैं।

फोलिक एसिड :

एक सामान्य महिला को रोजाना 100 मिलीग्राम फोलिक एसिड की जरूरत होती है, पर विशेषज्ञ गर्भावस्था के दौरान रोजाना 400 मिलीग्राम फोलिक एसिड प्राप्त करने की सलाह देते हैं। इसकी कमी से गर्भावस्था में मैक्रोसाइटिक एनीमिया व गर्भस्थ शिशु के मस्तिष्क व रीढ़ के विकास में दोष उत्पन्न हो सकता है। गहरे हरे रंग की पत्तेदार सब्जियों जैसे पालक व सिट्रस फलों में यह अ%छी मात्रा में पाया जाता है।

कैल्शियम :

गर्भस्थ शिशु की हड्डियों व दांतों के विकास के लिए कैल्शियम की आवश्यकता होती है। गर्भावस्था की अंतिम तिमाही में इसकी करीब 25-30 ग्राम मात्रा गर्भस्थ शिशु तक पहुंचती है। दूध, दही, मट्ठा इत्यादि इसके अच्छे स्रोत हैं। इनमें उच्च मात्रा में कैल्शियम के साथ ही विटामिन बी 12 भी पाया जाता है। अगर आपको दूध और उससे निर्मित उत्पादों से एलर्जी है तो इन तत्वों के सेवन के विषय में अपने चिकित्सक से परामर्श ले सकती हैं।

विटामिन ए :

आमतौर पर एक महिला को 2400 माइक्रोग्राम बी कैरोटिन की आवश्यकता होती है। गर्भावस्था के दौरान भी इसकी इतनी ही मात्रा ग्रहण करने की जरूरत होती है। अंडे की जर्दी, मक्खन, गहरे हरे और पीले रंग की सब्जियां और फल विटामिन ए के अच्छे स्रोत हैं।

विटामिन डी :

मां का शरीर कैल्शियम को भली प्रकार एब्जा ?र्ब्व कर सके, इसके लिए विटामिन डी लेना बेहद जरूरी है। सूरज की किरणों से विटामिन डी मिलता है, जिसकी मदद से शरीर दूध, दालों इत्यादि से मिलने वाले कैल्शियम को भली प्रकार ग्रहण कर पाता है।

सोडियम :

किसी प्रकार के विकारों, डिसऑर्डर और कमी से बचने के लिए एक सामान्य महिला के शरीर में सोडियम की समुचित मात्रा पहुंचनी चाहिए। आहार में इसकी कमी से हार्मोन संबंधी बदलाव उत्पन्न हो सकते हैं। गर्भावस्था के दौरान ऐसी दवाओं से बचना चाहिए, जिनसे बार बार-बार टॉयलेट जाने की आवश्यकता महसूस हो, क्योंकि इससे शरीर से जरूरी सोडियम भी निकल जाता है। अगर हाइपरटेंशन जैसी कोई समस्या है, तब सोडियम की मात्रा सीमित करने की सलाह दी जाती है।

तरल पदार्थ :

शरीर में पानी की कमी न होने दें। भरपूर मात्रा में पानी पीने के साथ ही ताजे फलों का रस ग्रहण करें। जब भी घर से बाहर जाएं तो पीने का पानी साथ ले जाएं, क्योंकि बहुत सी बीमारियां अशुद्ध पानी के कारण होती हैं।

वसा :

इस दौरान अपने कुकिंग ऑयल व वसा पर ध्यान देना भी जरूरी है। घी, मक्खन और नारियल तेल में सैचुरेटेड फैट्स काफी ज्यादा होते हैं, इसलिए इनके सेवन से बचना चाहिए। इनके अलावा वनस्पति घी में ट्रांस फैट्स की मात्रा अधिक होती है और यह भी सैचुरेटेड फैट के जितना ही नुकसानदेह होता है।

विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप 'टोक्यो 25' के लिए ऑफिशियल मोटो और विजुअल आईडेंटिटी की घोषणा

एजेंसी

टोक्यो। विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप टोक्यो 25 (डब्ल्यूसीएच टोक्यो 25) की स्थानीय आयोजन समिति ने इस वर्ष के बहुप्रतीक्षित आयोजन के लिए आधिकारिक मोटो (आदर्श वाक्य) और विजुअल आईडेंटिटी (दृश्य पहचान) का अनावरण किया। विजुअल आईडेंटिटी को एक आधिकारिक पोस्टर द्वारा दर्शाया गया है जो एक खेल के रूप में एथलेटिक्स की गतिशीलता का एक शक्तिशाली दृश्य प्रतिनिधित्व करता है और इसे दुनिया भर के दर्शकों को लुभाने और प्रेरित करने के लिए डिजाइन किया गया था। पोस्टर में चैंपियनशिप के 20वें संस्करण का आधिकारिक आदर्श वाक्य दिखाया गया है; हर सेकेंड, सुगोई। डब्ल्यूसीएच टोक्यो 25 का आधिकारिक आदर्श वाक्य, 'हर सेकंड, सुगोई', एक शक्तिशाली संदेश देता है - जो जापानी शब्द 'SUGOI' (अद्भुत, असाधारण) को विस्मय और प्रेरणा की वैश्विक अभिव्यक्ति बनाने की आकांक्षा रखता है। 'हर सेकंड, सुगोई' दर्शाता है कि इस साल की चैंपियनशिप का हर पल, शुरू से अंत तक, असाधारण होगा, जिससे एक ऐसा आयोजन होगा जहां 'सुगोई' की भावना हर किसी के साथ गूंजती है।

आईसीसी अंडर-19 महिला टी20 विश्व कप में भारत ने मलेशिया को 10 विकेट से हराया

क्रालालांपुर। महिला अंडर-19 टी20 विश्व कप के अपने दूसरे मुकाबले में भारत की अंडर-19 टीम ने मेजबान मलेशिया को 10 विकेट से हराकर अपने विजयी अभियान को जारी रखा है। भारत ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। भारत के फैसले को सही साबित करते हुए दो बाएं हाथ के स्पिनरों वैष्णवी शर्मा और आयुषी शुक्ला ने मलेशिया की पारी को 31 रन पर ही समेट दिया।वैष्णवी शर्मा ने चार ओवर के स्पेल में पांच रन खर्च कर 5 विकेट अपने नाम किए। इस दौरान शर्मा ने हैट्रीक भी लगाई। जबकि आयुषी शुक्ला ने आठ रन देकर तीन विकेट चटकाए। मलेशिया का कोई भी बल्लेबाज़ दहाई के आंकड़े को नहीं छू सका। टीम की ओर से सर्वाधिक व्यक्तिगत स्कोर एक्स्ट्रा के नाम रहा, जिसके खाते में 11 रन रहे। मलेशिया की ओर से मिले 32 रन के लक्ष्य को भारतीय सलामी बल्लेबाज जी. तृषा और जी. कमलिनी ने 2.5 ओवर में ही हासिल कर लिया। तृषा ने 12 गेंदों में पांच चौकों की मदद से 27 रनों की एक आतिशी पारी खेली।

बैडमिंटन एशिया मिश्रित टीम चैंपियनशिप के लिए भारतीय टीम की घोषणा

नई दिल्ली। भारतीय बैडमिंटन संघ (बीएआई) ने 11 से 16 फरवरी तक चीन के किंगदाओ में होने वाली बैडमिंटन एशिया मिश्रित टीम चैंपियनशिप के लिए 14 सदस्यीय मजबूत भारतीय टीम की घोषणा कर दी है। दो बार की ओलंपिक पदक विजेता पीवी सिंधु और पेरिस ओलंपिक सेमीफाइनलिस्ट लक्ष्य सेन 14 सदस्यीय भारतीय टीम का नेतृत्व करेंगे। भारत ने 2023 में दुबई में आयोजित चैंपियनशिप के पिछले संस्करण में कांस्य पदक जीता था और इस बार उसका लक्ष्य उस प्रदर्शन में सुधार करना होगा।भारतीय बैडमिंटन संघ के महासचिव संजय मिश्रा ने बीएआई ने जारी विज्ञप्ति में कहा कि बैडमिंटन एशिया मिश्रित टीम चैंपियनशिप एक प्रतिष्ठित प्रतियोगिता है, जहां टीमों की गहराई और गुणवत्ता का परीक्षण किया जाता है। हमने दो साल पहले कांस्य पदक जीतकर अच्छा प्रदर्शन किया था, लेकिन इस साल हमारा लक्ष्य फाइनल तक पहुंचना है और फिर कुछ भी संभव है, हम पूरी ताकत लगाएंगे।

बैडमिंटन एशिया मिश्रित टीम चैंपियनशिप के लिए भारतीय टीम:

पुरुषः लक्ष्य सेन, एचएस प्रणय, सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी, चिराग शेट्टी, ध्रुव कपिला, एमआर अर्जुन, सतीश कुमार के

महिलाएः पीवी सिंधु, मालविका बंसोड़, गायत्री गोपीचंद, ट्रीसा जॉली, अश्विनी पोनप्पा, तनीषा क्रैस्टो, आद्या वारियथ।

वैभव ने की शानदार बल्लेबाजी, राज गार्डेन पहुंचा सेमीफाइनल में

लखनऊ। बाबू बनारसी दास क्रिकेट लीग के सी डीविजन के क्वार्टर फाइनल मैच में मल्टी फेसीलिटी क्रिकेट को हराकर राज गार्डेन ने सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया। इस मैच में वैभव यादव ने धुआंधार बल्लेबाजी करते हुए 53 रन बनाये। राज गार्डेन ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 40 ओवर में पांच विकेट गवांकर 217 रन बनाये। सलामी बल्लेबाज प्रमोद कुमार ने 26 रन का योगदान दिया। वहीं शिवम ने 31 रन बनाये। वहीं अविनाश यादव ने

पांच चौकों की मदद से 51 रन बनाये। वहीं वैभव यादव ने नौ चौकों की मदद से 53 बाल पर 53 रन का योगदान दिया। अनुज ने 34 रन बनाये। वहीं मल्टी फेकेल्टी की पूरी टीम 214 रन बनाकर आउट हो गयी और राज ने तीन रन से मैच को जीतकर सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया। अपनी टीम में सबसे अधिक गोविंद ने 55 रन बनाये, जबकि उमाकांत ने 36 रन, गुरुवीर ने 34 रन बनाये।

भारत ने इंग्लैंड को सात विकेट से हराया

एजेंसी

कोलकाता। वरुण चक्रवर्ती (तीन विकेट) , हार्दिक पांड्या, अर्शदीप सिंह और अक्षर पटेल (दो-दो विकेट) की शानदार गेंदबाजी के बाद अभिषेक शर्मा की (79) रनों की आतिशी अर्धशतकीय पारियों की बदौलत भारत ने पहले टी-20 मुकाबले में इंग्लैंड को सात विकेट से हरा दिया है। इसी के साथ भारत ने पांच मैचों की सीरीज में 1-0 से बढ़त बना ली हैं।

इंग्लैंड के132 रनों के स्कोर के जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी भारत की संजू सैमसन और अभिषेक शर्मा ने अच्छी शुरुआत करते हुए पहले विकेट के लिए (41) जोड़े। पांचवें ओवर में जोफ्रा आर्चर ने संजू सैमसन को आउटकर इस साझेदारी को तोड़ा। संजू सैमसन ने 20 गेंदों में चार चौके और एक छक्का लगाते हुए (26) रनों की पारी खेली। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये कप्तान सूर्यकुमार यादव (शून्य) को भी जोफ्रा आर्चर ने इसी ओवर में आउट कर इंग्लैंड को दूसरी सफलता दिलाई। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये तिलक वर्मा ने अभिषेक शर्मा के साथ पारी को

संभाला। हालांकि अभिषेक ने अपनी लय बरकरार रखी और तेजी के साथ रन बनाते रहे। जीत की ओर बढ़ रही भारतीय टीम को आदिल रशीद ने 12वें ओवर में अभिषेक शर्मा को आउटकर तीसरा झटका दिया। अभिषेक शर्मा ने आतिशी बल्लेबाजी करते हुए 34 गेंदों में पांच चौके और आठ छक्कों की मदद से (79)रन बनाये। तिलक वर्मा (19) और हार्दिक पंड्या (तीन) रन बनाकर नाबाद रहे। भारत ने 12.5 ओवर में तीन विकेट पर 133 रन बनाकर मुकाबला सात विकेट से जीत लिया।

इंग्लैंड की ओर से जोफ्रा आर्चर ने दो विकेट लिये। आदिल रशीद को एक विकेट मिला। इससे पहले आज यहां भारत के कप्तान सूर्यकुमार यादव ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। भारतीय गेंदबाज कप्तान की उम्मीदों पर खरे उतरे और उन्होंने इंग्लैंड के बल्लेबाजों को खुल कर खेलने का मौका नहीं दिया। हालांकि इस दौरान इंग्लैंड टीम के कप्तान जॉस बटलर ने कुछ आकर्षक शॉट लगाये। उन्होंने अपनी इस पारी में 44 गेंदों में आठ चौके और दो छक्के लगाते हुए (68) रनों की अर्धशतकीय पारी खेली। इंग्लैंड की शुरुआत खराब रही और उसने 17 रन पर अपने दो विकेट गवां दिये। फिल सॉल्ट (शून्य) और बेन डकेट (चार) रन बनाकर आउट हुये। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये कप्तान जॉस बटलर ने हैरी ब्रूक के साथ पारी को संभलाने का प्रयास किया। आठवें ओवर में वरूण चक्रवर्ती ने हैरी ब्रूक (17) को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। इसके बाद तो भारतीय गेंदबाजी आक्रमण के आगे इंग्लैंड के अधिकतर बल्लेबाजों ने हथियार डाल दिये। जोफ्रा आर्चर (12) रन बनाकर आउट हुये। इंग्लैंड की पूरी टीम निर्धारित 20 ओवरों में 132 के स्कोर पर सिमट गई। भारत की ओर से वरुण चक्रवर्ती ने 23 रन देकर तीन विकेट लिये। हार्दिक पांड्या, अर्शदीप सिंह और अक्षर पटेल को दो-दो विकेट मिले।

अर्शदीप भारत के लिए सबसे ज्यादा टी-20 विकेट लेने वाले गेंदबाज बने

एजेंसी

कोलकाता। भारतीय टीम के तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में देश के सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज बन गये है। अर्शदीप ने ईडन गार्डन्स में इंग्लैंड के खिलाफ पहले टी-20 मैच में बेन डकेट को आउट अपने 61वें मैच में यह उपलब्धि हासिल की। इसी के साथ उनके विकेटों की संख्या 97 हो गई। उन्होंने हमवतन स्पिनर युजवेंद्र चहल के 80 मैचों में 96 विकेट के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ दिया है।

भारत के लिए अंतरराष्ट्रीय टी-20 विकेट लेने वालों की सूची में अब अर्शदीप शीर्ष पर हैं, उसके बाद दूसरे नंबर पर चहल हैं। शीर्ष पांच में गेंदों में भुवनेश्वर कुमार (87 मैचों में 90 विकेट), जसप्रीत बुमराह (70 में 89) और हार्दिक पांड्या (110 में 89) शामिल हैं।

श्राची राढ़ बंगाल टाइगर्स ने दिल्ली एसजी पाइपर्स को हराकर फाइनल की दौड़ में बनाए रखी उम्मीदें

एजेंसी

रांची। श्राची राढ़ बंगाल टाइगर्स ने मरांग गोमके जयपाल सिंह मुंडा स्टेडियम में हुए हीरो महिला हॉकी इंडिया लीग (2024-25) के मुकाबले में दिल्ली एसजी पाइपर्स को हराया। कैथरीन मल्लन (21फीसदी और 33फीसदी) ने बंगाल टाइगर्स के लिए दो गोल किए। पहले क्वार्टर में दोनों टीमों के बीच मिडफील्ड पर नियंत्रण की जंग चलती रही। इस दौरान गोल करने का एकमात्र मौका बंगाल टाइगर्स को 13वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर के रूप में मिला। हालांकि, कप्तान उदिता के प्रयास को एसजी पाइपर्स की रक्षा पंक्ति ने विफल कर दिया।दूसरे क्वार्टर की शुरुआत दिल्ली एसजी पाइपर्स ने अच्छे अंदाज में की और पहला पेनल्टी कॉर्नर अर्जित किया। दीपिका के ड्रैग फ्लिक को बंगाल टाइगर्स की गोलकीपर जेनिफर रिज़ो ने शानदार तरीके से बचा लिया। 21वें मिनट में मल्लन ने बंगाल टाइगर्स को बढ़त दिला दी। आयरलैंड की इस खिलाड़ी ने गेंद को सर्कल के किनारे तक ले जाकर, गोलकीपर बंसरी सोलंकी को पीछे छोड़ते हुए गोल किया।

बंगाल टाइगर्स ने शानदार तरीके से मैच का नियंत्रण बनाए रखा, अपने 23 मीटर जोन की मजबूती से रक्षा की और काउंटर अटैक में एसजी पाइपर्स की रक्षापंक्ति को चुनौती दी।

तीसरे क्वार्टर की शुरुआत में ही टाइगर्स ने दूसरा गोल कर बढ़त को दोगुना कर दिया। मल्लन ने अपना दूसरा गोल किया, लेकिन इसका श्रेय लालरेमसियामी को जाता है, जिन्होंने दाईं ओर से बेहतरीन सोलो रन करते हुए गेंद को गोललाइन तक पहुंचाया और मल्लन को आसान टप-इन पास दिया। एसजी पाइपर्स ने इसके बाद गोल करने के लिए हर संभव कोशिश की और तीसरे क्वार्टर में 13 बार सर्कल में प्रवेश किया। हालांकि, बंगाल टाइगर्स की रक्षा पंक्ति ने उन्हें केवल तीन शॉट्स तक सीमित रखा। चौथे क्वार्टर में भी कहानी कुछ वैसी ही रही। एसजी पाइपर्स ने लगातार दबाव बनाया, लेकिन भाग्य उनके साथ नहीं था। बंगाल टाइगर्स ने मजबूत डिफेंस दिखाते हुए अहम जीत दर्ज की। इस जीत के साथ बंगाल टाइगर्स के सात अंक हो गए हैं, जो जेएसडब्ल्यू सूरमा क्लब और ओडिशा वॉरियर्स से तीन अंक कम हैं। बंगाल टाइगर्स को फाइनल में जगह बनाने के लिए अपने आखिरी मैच में सूरमा हॉकी क्लब के खिलाफ बड़ी जीत दर्ज करनी होगी।

रोहित के चैंपियंस ट्रॉफी के लिए पाकिस्तान जाने पर फैसला होना शेष है: सैकिया

एजेंसी

मुंबई। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के नवनियुक्त सचिव देवजीत सैकिया ने कहा कि कप्तान रोहित शर्मा के आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के लिए पाकिस्तान में टूर्नामेंट से पहले होने वाले कार्यक्रमों में भाग लेने पर अभी फैसला होना बाकी है।

सैकिया ने कहा कि भारतीय क्रिकेट बोर्ड में रोहित शर्मा के पाकिस्तान जाने पर विचार-विमर्श चल रहा है। उन्होंने कहा, 'रोहित शर्मा आईसीसी मीडिया कार्यक्रमों के लिए पाकिस्तान जाएंगे या नहीं, इस पर अभी फैसला नहीं हुआ है।' ऐसी अटकलें लगाई जा रही हैं कि आईसीसी इन कार्यक्रमों को यूएई में स्थानांतरित कर सकता है। हालांकि, इस तरह के कदम से पाकिस्तान में खेलने वाली टीमों के लिए चुनौतियाँ पैदा होंगी। उल्लेखनीय है कि कप्तानों की बैठक और लाहौर में होने वाले प्री-इवेंट संवाददाता सम्मेलन सहित

विचाराधीन कार्यक्रम पारंपरिक रूप से आईसीसी टूर्नामेंट की शुरुआत करते हैं और टीम के कप्तानों को अपनी योजनाओं और लक्ष्यों को रेखांकित करने का अवसर प्रदान करते हैं। हालांकि, भारत द्वारा पाकिस्तान का दौरा करने से मना करने के बाद, जिसके कारण चैंपियंस ट्रॉफी के लिए हाइब्रिड मॉडल को अपनाया गया है।

स्कॉटलैंड को हराकर बंगलादेश की महिला टीम अंडर -19 विश्वकप के सुपर सिक्स में

एजेंसी

बंगी (मलेशिया)। कप्तान सुमैया अख्तर (नाबाद 28) के बाद अनीसा अख्तर सोबा (चार विकेट) के शानदार प्रदर्शन की बदौलत बंगलादेश की महिला टीम ने महिला अंडर-19 टी-20 विश्वकप में स्कॉटलैंड को 17 रनों से हराकर सुपर सिक्स में जगह बना ली हैं।बंगलादेश के 120 रनों के जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी स्कॉटलैंड की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने 19 के स्कोर पर अपने दो विकेट गवां दिये। इसके बाद पिप्पा स्प्राउल और निअम मुइर ने पारी को संभालने का प्रयास किया। 15वें ओवर में कप्तान निअम मुइर (22) रन बनाकर आउट हुई। इसके बाद स्कॉटलैंड का कोई भी बल्लेबाज पिच पर अधिक देर तक नहीं टिक सका। पिप्पा स्प्राउल ने 41 गेंदों में चार चौकों और एक छक्के की मदद से (41) रनों की पारी खेली।

बंगलादेशी गेंदबाजी आक्रमण के आगे स्कॉटलैंड की पूरी टीम 103 रन पर सिमट गई।

बंगलादेश की ओर से अनीसा अख्तर सोबा ने चार विकेट लिये। निशिता अख्तर निशी और हबीबा इस्लाम ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

इससे पहले आज यहां स्कॉटलैंड की महिला टीम ने टॉस जीतकर पहले क्षेत्ररक्षण का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी बंगलादेश की महिला टीम के बल्लेबाज स्कॉटलैंड के गेंदबाजों के आगे संघर्ष करती नजर आयी। फहमीदा चोया (14), जुएरिया फिरदौस (20), आफिया आशिमा (21) और कप्तान सुमैया अख्तर (नाबाद 28) रनों की पारियों के योगदान से बंगलादेश ने निर्धारित 20 ओवरों में नौ विकेट पर 120 का स्कोर खड़ा किया। स्कॉटलैंड की ओर से नयमा शेख और मैसी मैसीरा ने दो-दो विकेट लिये। गैब्रिएला फोंटेनला, एमी बाल्डी और किर्स्टी मैक्कॉल ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

टेलर और कैटरीना की जोड़ी ऑस्ट्रेलिया ओपन महिला युगल के सेमीफाइनल में

एजेंसी

मेलबर्न। अमेरिका की टेलर टाउनसेंड और चेक गणराज्य की कैटरीना सिनियाकोवा की जोड़ी ने चीन की झांग शुआई और फ्रांस की क्रिस्टीना म्लादेनोविच की जोड़ी को हराकर ऑस्ट्रेलियाई ओपन के महिला युगल के सेमीफाइनल में जगह बना ली हैं।

आज यहां खेले गये मुकाबले में नौवीं वरीयता प्राप्त झांग और म्लादेनोविच को टेलर टाउनसेंड और कैटरीना सिनियाकोवा की शीर्ष वरीयता प्राप्त जोड़ी ने 70 मिनट में 6-1, 7-5 से हराया।

टेलर टाउनसेंड और कैटरीना सिनियाकोवा की शीर्ष वरीयता प्राप्त जोड़ी सेमीफाइनल में रूस की मीरा एंड्रीवा और डायना श्नाइडर की जोड़ी से भिड़ेगी।

सोनीपत में हाफ मैराथन होगी नौ फरवरी को

एजेंसी

सोनीपत। हरियाणा के सोनीपत में हाफ मैराथन आगामी 09 फरवरी को होगा। यह जानकारी उपायुक्त (डॉक्टर) मनोज कुमार ने दी। उन्होंने बताया कि हाफ मैराथन में अलग-अलग श्रेणियों में हजारों धावक भागीदारी करेंगे। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी मुख्य अतिथि होंगे।

उपायुक्त ने बताया कि दिल्ली और मुंबई जैसे देश के प्रमुख शहरों में आयोजित होने वाले ऐसे आयोजन पिछले कुछ समय में हरियाणा के बड़े शहरों फरीदाबाद, गुरुग्राम और पानीपत में आयोजित किए गए हैं। उसी तर्ज पर सोनीपत हॉफ मैराथॉन भी आयोजित होगा।उन्होंने बताया कि हाफ मैराथन में हिस्सा लेने के लिए रजिस्ट्रेशन वेबसाइट पर शुरू हो चुका है। मैराथन का शुभारंभ दीनबंधु छोटू राम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय मुरथल परिसर से होगा और यह शहर के मुरथल रोड

सेक्टर 14-15 डिवाइडिंग रोड, महाराणा प्रताप चौक, ट्रक यूनियन, दीवान फार्म से होते हुए वापस मुरथल विश्वविद्यालय जाएगा। डॉ. कुमार ने बताया कि 21 किलोमीटर ओपन केटेगरी में हॉफ मैराथन में विजेता को (महिला व पुरुष) एक-एक लाख रुपये, फर्स्ट रनर को (पुरुष और महिला) को 75 हजार रुपये, सेकेंड रनर को 50 हजार रुपये ईनाम दिया जाएगा। इसके अलावा भी विभिन्न श्रेणियों में कुल दस लाख रुपये से अधिक के पुरस्कार दिए जाएंगे।

केन्द्रीय खेल मंत्री मांडविया ने खो-खो विश्व कप विजेता भारतीय टीमों को सम्मानित किया

एजेंसी

नई दिल्ली। केन्द्रीय युवा मामले एवं खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने नई दिल्ली में विश्व कप विजेता भारतीय खो-खो टीमों को सम्मानित किया। इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में 19 जनवरी को खेले गए पहले खो-खो विश्व कप का खिताब जीतकर भारतीय पुरुष और महिला टीमों ने इतिहास रच दिया। दोनों टीमों ने अपने-अपने फाइनल में नेपाल को हराया था। पुरुष और महिला खो-खो टीमों के पूरे खिलाड़ियों से केन्द्रीय खेल मंत्री मांडविया ने मुलाकात की। खिलाड़ियों के साथ कोच, भारतीय खो-खो महासंघ के अध्यक्ष सुधांशु मित्तल और मंत्रालय तथा भारतीय खेल प्राधिकरण के अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे। इस दौरान केन्द्रीय मंत्री ने खिलाड़ियों को बधाई दी और उनके प्रदर्शन की सराहना की। देश में पारंपरिक खेलों के बारे में बात करते हुए केन्द्रीय मंत्री मांडविया ने कहा कि पारंपरिक खेल लचीलापन, सामुदायिक भावना को दर्शाते हैं और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ये हमारे पारंपरिक खेल मूल्यों को बनाए रखते हैं। दुनिया को इन पारंपरिक खेलों की समृद्धि से बहुत कुछ सीखना है।

इंडो नेपाल इंटरनेशनल ताइक्वांडो चैंपियनशिप में छाए खिलाड़ी, जीता एक स्वर्ण, चार रजत और दो कांस्य

एजेंसी

मुरादाबाद। 5वीं इंडो नेपाल इंटरनेशनल ताइक्वांडो चैंपियनशिप में मुरादाबाद का दबदबा छा गया। मुरादाबाद जिले के 7 खिलाड़ियों ने चैंपियनशिप में प्रतिभाग कर शानदार प्रदर्शन किया।

स्थानीय खिलाड़ियों ने प्रतियोगिता में एक स्वर्ण, चार रजत और दो कांस्य पदक अपने नाम कर पीतलनगरी का नाम रोशन किया। मुरादाबाद पहुंचने पर विजेता खिलाड़ियों का स्वागत अभिनंदन किया गया।

ताइक्वांडो के हेड कोच तकी इमाम ने बताया कि 16 से 19 जनवरी तक नई दिल्ली के पहाड़गंज स्थित करनाल सिंह स्टेडियम 5वीं इंडो नेपाल इंटरनेशनल ताइक्वांडो चैंपियनशिप का आयोजन किया गया। जिसमें मुरादाबाद जिले से सात खिलाड़ियों ने प्रतिभाग किया था। इसमें अकरश स्वर्ण पदक अपने नाम

किया। वंशिका, हिमांशु, मनीष शर्मा, सैयद मीर हाशमी ने रजत पदक जीता, इल्मा हसन व अकरश ने कांस्य पदक जीता। विजेता खिलाड़ियों के मुरादाबाद आगमन पर हेड कोच तकी इमाम व कोच मोहम्मद नोमान ने सभी को शुभकामनाएं व बधाई।

जे एस डब्ल्यू सूरमा हॉकी क्लब ने दिल्ली एसजी पाइपर्स को 2-1 से हराया

एजेंसी

रांची। जे एस डब्ल्यू सूरमा हॉकी क्लब ने आज रांची के मरांग गोमके जयपाल सिंह मुंडा एस्ट्रो टर्फ हॉकी स्टेडियम में खेले गए पुरुष हीरो हॉकी इंडिया लीग (एचआईएल) 2024-25 के मैच में दिल्ली एस जी पाइपर्स को 2-1 से हराया। हरजीत सिंह (9फीसदी) और गुरजंत सिंह (17फीसदी) ने सूरमा को शुरुआत में ही बढ़त दिलाई। हालांकि, कोरी वियर (59%) ने आखिरी क्वार्टर में एक गोल कर पाइपर्स को वापसी की उम्मीद दी, लेकिन वे नतीजे को बदलने में असफल रहे। जे एस डब्ल्यू सूरमा हॉकी क्लब ने मैच की शुरुआत में तेज आक्रमण करते हुए पिच पर दबाव बनाने की कोशिश की, लेकिन पाइपर्स ने कड़ी प्रेसिंग करते हुए अधिकतर समय गेंद पर कब्जा बनाए रखा। पहले क्वार्टर में, एक काउंटर अटैक के दौरान, प्रभजोत ने हरजीत सिंह को गेंद पास की, जिन्होंने सर्कल के ऊपर से एक जोरदार शॉट लगाकर पाइपर्स के गोलकीपर पवन को छकाते हुए सूरमा को बढ़त दिला दी। सूरमा ने नियंत्रण बनाए रखा लेकिन और गोल नहीं कर पाए। दूसरे क्वार्टर की शुरुआत सूरमा ने आक्रामक अंदाज में की और पाइपर्स को उनके आधे हिस्से में रोक दिया। कुछ ही मिनटों बाद, गुरजंत सिंह ने सर्कल के ऊपर से गेंद उठाई, अपने डिफेंडर को छकाया और बेंजामिन रेनी को गोलकीपर में मात देकर सूरमा की बढ़त को दोगुना कर दिया। पाइपर्स ने धीरे-धीरे अपनी लय पकड़नी शुरू की और दिलराज सिंह और काई विलियट के शॉट्स

के जरिए गोल करने की कोशिश की, लेकिन सूरमा की मजबूत रक्षापंक्ति को भेद नहीं सके। तीसरा क्वार्टर काफी रोमांचक रहा, जिसमें दोनों टीमों ने आक्रामक खेल दिखाया। सूरमा और पाइपर्स ने सर्कल में प्रवेश करते हुए एक-दूसरे पर हमले किए। सूरमा के पास क्वार्टर के अंत में एक और मौका था, जब गुरजंत ने काउंटर अटैक पर प्रभजोत सिंह को पास देने की कोशिश की, लेकिन पवन ने इसे रोक दिया। पाइपर्स ने जवाब में पेनल्टी कॉर्नर अर्जित किया, लेकिन विन्सेंट वानाश और सूरमा की डिफेंस लाइन ने इसे नाकाम कर दिया।

आखिरी क्वार्टर में, पाइपर्स ने मैन-टू-मैन डिफेंस का सहारा लिया, लेकिन सूरमा ने गेंद को अपने पास रखते हुए उसे बैकलाइन पर रोटेट किया। सूरमा ने एक और काउंटर अटैक में गोल करने की कोशिश की, लेकिन फिल रोपर का पास पाइपर्स के रोहित ने रोक लिया। पाइपर्स ने मैच के अंत में सूरमा पर दबाव बनाया और कोरी वियर ने विन्सेंट वानाश के बचाव के बाद उछलती गेंद को गोल में तब्दील कर पाइपर्स के लिए एक गोल किया। आखिरी सेकंड में पाइपर्स ने पेनल्टी कॉर्नर अर्जित किया, लेकिन टॉमस डोमिन के तेज शॉट को वानाश ने शानदार तरीके से बचा लिया और सूरमा ने 2-1 से जीत दर्ज की।

अब जिसके हाथों में है सैफ अली खान की सुरक्षा का जिम्मा, उसका

श्वेता तिवारी

से क्या है नाता?

15 जनवरी का दिन था. देर रात एक शख्स चोरी के इरादे से Saif Ali Khan के घर में घुसा. वो सैफ के छोटे बेटे के कमरे में जा ही रहा था, तभी सैफ ने उसे रोकने की कोशिश. इस दौरान उसने एक्टर पर चाकू से एक के बाद एक 6 वार कर दिए. खून से लथ-पथ वो लीलावती हॉस्पिटल पहुंचे. 5 दिन के बाद उन्हें डिस्चार्ज कर दिया गया है. फुल टशन में वो बीते दिन घर वापस लौटे. इस दौरान उनकी सिक्योरिटी का जिम्मा लेने वाला एक्टर भी चर्चा में आ गया. कौन है ये एक्टर, जिससे इब्राहिम अली खान की रूमर्ड गर्लफ्रेंड पलक तिवारी का कनेक्शन है ?दरअसल सैफ अली खान की सिक्योरिटी का जिम्मा Ronit Roy ने लिया है. बीते दिनों वो सैफ की घर वापसी से पहले मीडिया से भी बातचीत करते नजर आए थे. रोनित रॉय की अपनी सिक्योरिटी कंपनी भी है. पलक तिवारी को रोनित रॉय कई साल पहले से ही जानते हैं.

पलक तिवारी से रोनित रॉय का क्या कनेक्शन ?

स्टार प्लस पर 2001 में एक शो ऑन एयर हुआ था. नाम है- कसौटी जिंदगी की. इस शो में श्वेता तिवारी और सिजेन खान की जोड़ी को काफी पसंद किया गया था. शो में रोनित रॉय भी थे. उन्होंने शो में मिस्टर बजाज का किरदार निभाया था. रोनित का निभाया वो किरदार आइकॉनिक बन गया. श्वेता तिवारी और रोनित रॉय बहुत पुराने दोस्त हैं. 2001 से दोनों एक दूसरे को जानते हैं. वहीं 2000 में पलक तिवारी का जन्म हुआ था, तो अच्छे दोस्त होने के चलते वो श्वेता तिवारी के बच्चों को भी अच्छे से जानते हैं.

रोनित रॉय और श्वेता तिवारी की दोस्ती काफी पुरानी है. अब भी दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं. हाल ही में उनका एक रोमांटिक फोटोशूट वायरल हुआ था, जिसपर लोगों ने खूब प्यार बरसाया था. यूं तो रोनित रॉय और श्वेता तिवारी टीवी के अलावा फिल्मों और कई वेब सीरीज में भी काम कर चुके हैं. लेकिन शुरुआत टीवी से ही हुई थी. पलक तिवारी की मम्मी श्वेता तिवारी और रोनित रॉय आज भी इंस्टाग्राम पर एक दूसरे को फॉलो करते हैं. यह कनेक्शन सैफ अली खान की सिक्योरिटी लेने से कई साल पहले से है.

इब्राहिम अली खान संग जुड़ा नाम

सैफ अली खान के बड़े बेटे इब्राहिम अली खान अपनी लव लाइफ को लेकर भी चर्चा में रहते हैं. उनका नाम श्वेता तिवारी की बेटी पलक तिवारी के साथ जुड़ रहा है. कई बार साथ में दिखाई दे चुके हैं. कभी मूवी डेट, तो कभी वेकेशन पर. हालांकि मीडिया से अक्सर छिपने की कोशिश की है, लेकिन हर बार फेल हो गए.

रवीना की बेटी और अजय के भांजे का डेब्यू रहा फीका, अनन्या, जान्हवी और सारा वाला कमाल क्यों नहीं कर पाए?

अजय देवगन के भांजे अमन देवगन और रवीना टंडन की बेटी राशा थडानी ने फिल्म 'आजाद' से डेब्यू किया है. फिल्म के आने के पहले राशा की हर तरफ तारीफ हो रही थी. फिल्म का ट्रेलर भी काफी प्रोमेसिंग लग रहा था, हालांकि, फिल्म के रिलीज के बाद लोगों के फिल्म ज्यादा पसंद नहीं आई. जहां अजय देवगन और रवीना टंडन दोनों की ही डेब्यू फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर गदर काटा था, वहीं अमन और राशा की फिल्म को काफी स्ट्रगर करना पड़ रहा है.17 जनवरी 2025 को रिलीज हुई फिल्म में अजय देवगन खुद महत्वपूर्ण रोल में नजर आए थे, लेकिन उनका ये खास रोल भी लोगों को थिएटर में खींचने में कामयाब नहीं हो सका, यानी अजय देवगन का स्टारडम भी फिल्म को उठाने में कामयाबी हासिल नहीं कर पाया. ओपनिंग डे पर आजाद महज 1.5 करोड़ का कलेक्शन कर पाई. दोनों स्टार किड्स की डेब्यू फिल्म बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप की ओर बढ़ रही है. आखिर क्या है इसका कारण, आइए समझने की कोशिश करते हैं.

'इमरजेंसी' से था बड़ा कॉम्पिटिशन

फिल्म 'आजाद' का कॉम्पिटिशन कंगना रनौत की मच अवेटिड पॉलिटिकल ड्रामा फिल्म 'इमरजेंसी' से था. इमरजेंसी का ना सिर्फ लोग काफी वक्त से इंतजार कर रहे थे, बल्कि कंगना को इंदिरा गांधी के रूप में देखना भी लोगों के लिए नई बात थी. इसके अलावा फिल्म में एक मंझे हुए कलाकारों की स्टारकास्ट थी जैसे अनुपम खेर, श्रेयस तलपड़े, महिमा चौधरी और खुद कंगना रनौत जो ना सिर्फ फिल्म में एक्टिंग कर रही थीं, बल्कि उन्होंने ही फिल्म का निर्देशन, राइटिंग और प्रोडक्शन का बीड़ा भी उठाया था. फिल्म को लोगों का मिला-जुला रिस्पॉन्स मिल रहा है, वहीं आजाद में दोनों ही नए चेहरे थे, जिनपर जनता ने इतनी आसानी से भरोसा करना सही नहीं समझा.

दूसरा बड़ा कारण ये भी हो सकता है कि अब सिनेमा धीरे-धीरे काफी बदल रहा है. लोगों को फैंटेसी जॉनर में भी अच्छी और रची हुई कहानी देखना पसंद आ रहा है. एक तरह से कहा जा सकता है कि अब सिनेमा के मामले में लोगों का नजरिया काफी बदल रहा है.

ओटीटी के आने के बाद से अब वर्ल्ड सिनेमा हर किसी के फोन पर आ धमका है ऐसे में उन्हें अच्छी कहानी और एक्टिंग की उम्मीद होती है. लोगों को प्रेम कहानियां थोड़ा बोर करने लगी हैं, अगर उनमें किसी तरह का रस ना हो.

पहले करणवीर मेहरा के खिलाफ की बातें, अब बिग बॉस 18 विनर के साथ नजर आए Elvish Yadav

बिग बॉस 18 खत्म हो गया है. जनता को शो का विनर भी मिल गया है. लेकिन आपको याद होगा कि फिनाले से पहले बिग बॉस 18 के घर के अंदर एक प्रेस कॉन्फ्रेंस रखी गई थी. इस पीसी में मीडिया वाले और टॉप 6 को सपोर्ट करने पहुंचे कुछ नामी लोग मौजूद थे. रजत दलाल के सपोर्ट में एल्विश यादव आए थे. उन्होंने रजत के सपोर्ट में आते हुए मीडिया के साथ जमकर बदतमीजी की थी. इतना ही नहीं एल्विश ने तो मीडिया पर करणवीर मेहरा को सपोर्ट करने का इल्जाम तक लगाया था और उन्हें पैड तक कह दिया था. एल्विश की इस बात का मीडिया को काफी बुरा भी लगा था. लेकिन शो खत्म हो गया है और इसी बीच एल्विश यादव को करणवीर मेहरा के साथ देखा गया है.सोशल मीडिया पर एक वीडियो काफी तेजी से वायरल हो रही है. इस वीडियो में एल्विश और करणवीर एक साथ नजर आ रहे हैं. दोनों के चेहरे पर मुस्कुराहट नजर आ रही है. एल्विश को देखकर भी ये जरा नहीं लग रहा है कि उनके दिल में करणवीर को लेकर कोई कड़वाहट है. वहीं करणवीर भी उनके साथ गर्मजोशी के साथ मिलते हुए नजर आए. फैन्स भी बिग बॉस के दो विनर को एक साथ देखकर काफी खुश नजर आ रहे हैं.

एल्विश के पॉडकास्ट में करणवीर मेहरा

माना जा रहा है कि एल्विश यादव ने करणवीर मेहरा को अपने पॉडकास्ट में बुलाया है. करणवीर से पहले भी एल्विश ने अपने पॉडकास्ट में बिग बॉस 18 के कई कंटेस्टेंट नजर आ चुके हैं. अपने पॉडकास्ट में एल्विश सभी को अपनी बातों से रोस्ट करते हुए नजर आते हैं. अब उन्होंने करण को अपने शो में बुलाया है, तो यकीनन वो कुछ ऐसे सवाल जरूर पूछेंगे जो उनके दिल में होंगे. वहीं एक यूजर ने कमेंट करते हुए कहा कि अब एल्विश भाई बताएंगे करण को.

करणवीर के खिलाफ दिया था बयान

एक दूसरे यूजर ने लिखा, खुद रोस्ट होने आया है एल्विश के शो में. दरअसल एल्विश और करण को साथ देखकर लोग इसलिए भी हैरान हैं क्योंकि बिग बॉस की पीसी में यूट्यूबर ने कहा था कि आप सभी करण की तारीफ कर रहे हैं और बाकी सभी कंटेस्टेंट को गलत दिखाने की कोशिश कर रहे हो. इसे पैड मीडिया कहते हैं. हालांकि उनके इस बयान के बाद काफी बवाल भी हुआ था.

ट्विंकल खन्ना

ने अक्षय कुमार को दी थी जहरीली घास खाने की सलाह, एक्टर के जवाब ने बंद कर दी थी बोलती

अक्षय कुमार देशभक्ति और सोशल टॉपिक्स पर अधारित फिल्में करने के लिए ज्यादा चर्चा में रहते हैं. इस बार भी एक्टर ने देशभक्ति का टॉपिक चुना और 24 जनवरी को आपके लिए लेकर आ रहे हैं फिल्म 'स्काई फोर्स'. इस फिल्म में अक्षय के साथ वीर पहाड़िया भी हैं. वीर की ये डेब्यू फिल्म है, इसलिए वो काफी खुश हैं. फिल्मों से इतर अक्षय अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर भी चर्चा में बने रहते हैं. अक्षय और ट्विंकल खन्ना एक-दूसरे की फोटोज शेयर करते रहते हैं और एक-दूसरे के बारे में कुछ न कुछ बातें भी करते हैं. लेकिन क्या आपको पता है कि एक बार ट्विंकल ने अक्षय को जहरीली घास खाने की सलाह दी थी. चलिए जानते हैं.ट्विंकल खन्ना ने टाइम्स ऑफ इंडिया के लिए लिखे गए कॉलम में इस बात का जिक्र किया था. उन्होंने अक्षय कुमार से दूसरी शादी को लेकर हुई बातचीत का खुलासा किया और कई पर्सनल बातें भी शेयर कीं.

ट्विंकल ने अक्षय को क्यों दी थी जहरीली घास खाने की सलाह

ट्विंकल ने लिखा था, आज मैं कैम्प से वापस आ रही थी, तो गाइड ने चिड़िया के एक पेयर की ओर इशारा किया. वो दोनों एक-दूसरे के लिए इतने समर्पित हैं, कि अगर एक की मौत हो गई तो दूसरा जहरीली घास खाकर मर जाता है. मैंने भी ऐसी सलाह अक्षय को दी थी. मैंने अक्षय से कहा था कि अगर हम-दोनों में से मैं पहले मर जाती हूं तो अक्षय दूसरी शादी की बजाय जहरीली घास खा लेंगे. इतना ही नहीं ट्विंकल ने ये भी लिखा था कि अगर उन्होंने अक्षय को दूसरी बीवी के साथ देखा और वो मेरे हैंडबैग्स का इस्तेमाल कर रही होगी तो मैं तुरंत दोनों को फांसी लगा दूंगी.

अक्षय की हाजिरजवाबी से चुप हो गई थीं ट्विंकल

इस आर्टिल में ट्विंकल ने ये भी बताया था कि जब उन्होंने अक्षय को जहरीली घास वाली बात बताई थी, तो उनका क्या रिएक्शन था. उन्होंने लिखा, जब मैंने अक्षय को जहरीली घास खाकर मरने की सलाह दी तो वो उसे तुरंत मांगने लगे. उन्होंने कहा मैं अभी उस जहरीली घास को खाना चाहता हूं, कम से कम तब तो मुझे इस तरह की बकवास नहीं सुननी पड़ेगी.